सम्पादकीय

चालू वित्तवर्ष में सबसे कम विकास दर होने का अनुमान, सरकार के लिए चिंता का विषय

अगले वित्तवर्ष के बजट की तैयारियां चल रही हैं। ऐसे वक्त में विकास दर संबंधी ताजा आकलन सरकार के लिए चिंता का विषय हो सकता है। राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय यानी एनएसओ ने अनुमान लगाया है कि चालू वित्तवर्ष में भारत की आर्थिक वृद्धि दर 6.4 फीसद रह सकती है। भारतीय रिजर्व बैंक ने इसके 6.6 फीसद पर रहने का अनुमान लगाया था। अगर एनएसओ का अनुमान सही साबित होता है, तो यह कोरोनाकाल के बाद सबसे कम विकास दर होगी। हालांकि एनएसओ के अनुमान के मुताबिक चालू वित्तवर्ष की दूसरी छमाही में कृषि और विनिर्माण क्षेत्र में विकास दर बढ़ेगी। मगर इससे अर्थव्यवस्था के दूसरे पक्षों पर कितना सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा, दावा नहीं किया जा सकता। इसलिए कि सकल घरेलू उत्पाद के मामले में कई चीजें काफी असंतुलित चल रही हैं।

चालू वित्तवर्ष की दूसरी तिमाही में विकास दर छह फीसद से नीचे दर्ज हुई थी और उसमें विनिर्माण क्षेत्र का योगदान काफी नीचे नजर आया था, तभी से विशेषज्ञ वृद्धि दर को लेकर चिंतित नजर आने लगे थे। दरअसल, पिछले कुछ वर्षों से अर्थव्यवस्था में विनिर्माण क्षेत्र का योगदान महत्त्वपूर्ण माना जाता रहा है, पर वही सुस्त रफ्तार में चल रहा है। निर्माण क्षेत्र में भी सुस्ती देखी जा रही है। दूसरी छमाही में भी इसके कमजोर रहने का अनुमान है। हालांकि कुछ विशेषज्ञों का मानना है कि कोरोनाकाल के बाद जो बड़ी वृद्धि दर दर्ज हुई थी, वह स्वाभाविक नहीं थी। एनएसओ के ताजा आकलन में अर्थव्यवस्था की स्वाभाविक वृद्धि दर दर्ज हुई है। मगर महंगाई का रुख अब भी नीचे की तरफ नहीं रहने वाला। इसके पांच फीसद से ऊपर रहने का अनुमान है। यानी रिजर्व बैंक के लिए रेपो दरों में कटौती का निर्णय करना दुविधा का विषय होगा। इसके अलावा, सरकार को राजस्व घाटा पाटने के लिए अपने खर्चों में कटौती करनी होगी।

सरकार की कोशिश है कि राजस्व घाटा 4.9 फीसद पर रोक कर रखा जाए। मगर इसके लिए सरकारी खर्चों में कटौती करनी होगी और उसका असर कई महत्त्वाकांक्षी योजनाओं पर पड़ेगा। फिर, आर्थिक वृद्धि दर में कमी का प्रभाव प्रत्यक्ष विदेशी निवेश पर भी पड़ेगा। पहले ही सरकार को इस मोर्चे पर मुश्किलों का सामना करना पड़ रहा है। डालर के मुकाबले रुपए की घटती कीमत और विदेशी निवेशकों के धन निकासी के चलते विदेशी मुद्रा भंडार में लगातार छीजन बनी रहने से अपेक्षित निवेश आकर्षित नहीं हो पा रहा। चालू वित्तवर्ष की दूसरी छमाही में कृषि क्षेत्र में सुधार का अनुमान है, मगर वह मामूली है। उससे आगे अर्थव्यवस्था की मजबूती का बहुत भरोसा नहीं बनता। इसलिए भी कि कृषि क्षेत्र के लिए व्यावहारिक नीतियां अभी तक नहीं बन पाई हैं। अर्थव्यवस्था के मामले में विनिर्माण क्षेत्र पर अधिक भरोसा किया जाता रहा है, मगर वहां उत्पादन इसलिए घटता गया है कि उपभोक्ता व्यय काफी घटा है। इसका कारण लोगों की आय न बढ़ना और ऋणभार का लगातार कमजोर होते जाना है। इसका असर नए रोजगार सृजन पर भी देखा जा रहा है। यह असंतुलन पेचीदा होता गया है। इसे दूर किए बगैर वृद्धि दर को लेकर कोई भरोसेमंद दावा करना कठिन बना रहेगा। मगर सरकार तदर्थ उपायों के जरिए इससे पार पाने और वास्तविक स्थिति पर पर्दा डाल कर आर्थिक विकास की गुलाबी तस्वीर पेश करती देखी जाती है। निर्यात के मोर्चे पर लगातार सुस्ती देखी जा रही है। ऐसी स्थिति में सरकार को आर्थिक विकास की नई रणनीति पर काम करना होगा।

आज का राशिफल

हमारे अनुभवी ज्योतिषियों की टीम के अनुसार आज कई विशेष लोगों को पूरा परेहेगे। तथा आज यह लक्षण पहले है कि आपके जीवन के ऐसे सौभाग्य होंगे, जहां आपके लिहाजे कुशल लोगों और दूसरों तरफ, आपको लिख बातों में लाभकारक लाभ पहोंचेगा। तथा न दिखे हमारे साथ में और लंबित हुई को सुलझाने तथा लाभकारक ऊर्जा को सकारात्मक रहेंगे, वहीं पारस्परिक संबंधों में भी, यहां पर लाभकारक रहें लेकर और कार्यक्षेत्र में लाभ प्राप्त रहेगा

मेष
आज आपके धार्मिक एवं मांगलिक कार्यों में व्यस्त रहने की संभावना ज्यादा रहेगी। आप में आज क्रोध की मात्रा अधिक रहेगी, इसलिए आप सावधान ही रहें। संतान एवं व्यापार की परेशानियों के कारण आपका मन अशांत रहेगा।

वृष
शत्रु भय रहेगा। जीवनसाथी के स्वास्थ्य की चिंता रहेगी। शारीरिक कष्ट संभव है। जोखिम व जमानत के कार्य टालें। भूमि व भवन संबंधी खरीद-फरोख्त की योजना बनेगी। आर्थिक उन्नति होगी। व्यवसाय ठीक चलेगा। निवेश शुभ रहेगा।

मिथुन
पुराना रोग परेशानी का कारण बन सकता है। अज्ञात भय सताएगा। वाणी में हल्के शब्दों के प्रयोग से बचें। वैचारिक प्रस्ताव मिल सकता है। परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी। कुसंगति से बचें। चिंता रहेगी। धन प्राप्ति में अवरोध दूर होंगे।

कर्क
राज्य से प्रसन्नता रहेगी। कोई बड़ा काम हो सकता है। नई योजना बनेगी। नया उपक्रम प्रारंभ हो सकता है। सामाजिक कार्य करने का अवसर मिलेगा। प्रतिष्ठा बढ़ेगी। स्वास्थ्य का पायां कमजोर रहेगा। कोई नई समस्या आ सकती है। पारिवारिक चिंता बनी रहेगी।

सिंह
पुराना रोग उभर सकता है। अनहोनी की आशंका रहेगी। मातहतों से कहासुनी हो सकती है। पार्टनरों से मतभेद संभव है। वाहन व मशीनरी के प्रयोग में सावधानी रखें। दूसरों से अपेक्षा न करें। बनते काम बिगड़ सकते हैं। आय में निश्चितता रहेगी।

कन्या
लेन-देन में जल्दबाजी न करें। पुराना रोग उभर सकता है। दुःखद समाचार की प्राप्ति संभव है। किसी के उकसाने में न आएं। बात बिगड़ सकती है। आवश्यक निर्णय सोच-समझकर करें। नौकरी में कार्यभार रहेगा। दुर्घटना हो सकती है, सावधान रहें।

तुला
आंखों को चोट व रोग से बचाएं। धन प्राप्ति सुगम होगी। सुख के साधन जुटेंगे। कारोबार लाभदायक रहेगा। नौकरी में उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे। मातहतों का सहयोग प्राप्त होगा। धैर्यवान व कामजोरी महसूस हो सकती है।

वृश्चिक
प्रेम-प्रसंग में आशातीत सफलता प्राप्त होगी। व्यावसायिक यात्रा सफल रहेगी। अप्रत्याशित लाभ हो सकता है। सट्टे व लाटरी से दूर रहें। कारोबार का विस्तार होगा। नौकरी में प्रमोशन मिल सकता है। सुख के साधन जुटेंगे। शत्रु परास्त होंगे।

धनु
राजभय रहेगा। विवाद को बढ़ाएं न दें। लेन-देन में जल्दबाजी हानि देगी। शारीरिक कष्ट संभव है। अप्रत्याशित खर्च सामने आएंगे। व्यवसाय में मुश्किल होगी। दूसरों से अपेक्षा न करें। चिंता तथा तनाव रहेंगे। अनहोनी की आशंका रहेगी।

मकर
किसी आनंदोत्सव में भाग लेने का अवसर प्राप्त होगा। विद्यार्थी वर्ग सफलता हासिल करेगा। कारोबार में बुद्धिबल से उन्नति होगी। नौकरी में मातहतों का सहयोग प्राप्त होगा। दुश्मनों से सावधानी आवश्यक है।

कुंभ
घर-बाहर पूछ-परख रहेगी। आय में वृद्धि होगी। कारोबार का विस्तार होगा। नौकरी में प्रमोशन मिल सकता है। प्रयास सफल रहेंगे। पार्टनरों का सहयोग प्राप्त होगा। निवेश लाभदायक रहेगा। घर में सुख-शांति रहेगी।

मीन
आय में वृद्धि होगी। कारोबार लाभप्रद रहेगा। दूरदर्शन हानि पहुंचा सकते हैं। दूर से शुभ समाचार की प्राप्ति होगी। घर में अतिथियों का आगमन होगा। व्यय बढ़ेगा। आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। जोखिम उठाने का साहस कर पाएंगे। कारोबार का विस्तार होगा।

आज का इतिहास — बढ़ता राजस्थान

10 जनवरी की महत्त्वपूर्ण घटनाएँ

- ब्रिटिश राजदूत सर थॉमस रो ने अजमेर में जहांगीर से 1616 में मुलाकात की।
- इटली के वेनीज नगर में गाजेट नामक विश्व का पहला समाचार पत्र 1623 में प्रकाशित हुआ।
- ब्रिटेन के रसायनशास्त्री जोजफ ऐस्पीडियन ने 1824 में सीमेंट बनाई।
- प्रोफेसर मधुसूदन गुप्ता ने 1836 में पहली बार मानव शरीर की आंतरिक संरचना का अध्ययन किया।
- भारतीय चाय 1839 में इंग्लैंड पहुँची।
- लंदन में विश्व की पहली भूमिगत रेल सेवा 1863 में शुरू हुई।
- ब्रिटिश नरेश जार्ज पंचम और रानी मैरी ने 1912 में भारत छोड़ा।
- प्रथम विश्व युद्ध के दौरान रूस ने ओटोमन साम्राज्य को 1916 में हराया।
- वार्सा संधि के आधिकारिक तौर पर प्रभाव में आने से 1920 में प्रथम विश्व युद्ध समाप्त हुआ।
- लंदन में 1946 में संयुक्त राष्ट्र महासभा की पहली बैठक में 51 राष्ट्रों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया।
- ब्रिटेन ने बनाया हुआ दुनिया का पहला जेट विमान कॉमेट 1954 में भूमध्यसागर में दुर्घटनाग्रस्त हो गया, जिसमें विमान में सवार सभी 35 लोग मारे गए थे।
- भारत सरकार ने 1963 में स्वर्ण नियंत्रण योजना की शुरुआत की। जिसके तहत 14 कैरेट से अधिक के गहनों पर पाबंदी लगा दी।
- स्वीजरलैंड के टाइट्स और सोलवेल नाम के दो व्यक्ति 1963 में इलेक्ट्रॉनिक घड़ी बनाने में सफल हुए। इस घड़ी में चाबी भरने की आवश्कता नहीं होती थी।
- पाकिस्तान में जेल में नौ महीने से अधिक समय तक कैद रहने के बाद 1972 में शेख मुजीबुर रहमान राष्ट्रपति के रूप में स्वतंत्र राष्ट्र बने बंगलादेश पहुंचे।
- जॉर्डन के शाह हुसैन 1996 में अपनी पहली सार्वजनिक यात्रा पर देश के सबसे बड़े शहर तेल अवीव पहुंचे थे।
- प्रधानमन्त्री मनमोहन सिंह ने 2006 से 10 जनवरी को प्रति वर्ष विश्व हिन्दी दिवस के रूप मनाये जाने की घोषणा की थी।
- कार निर्माण की अग्रणी आटोमोबाइल कंपनी 'टाटा मोटर्स' ने एक लाख रुपये वाली कार 'नैनो' को 2008 में पेश किया।
- अशोक कजारिया ने पीएचडी चैंबर आफ कामर्स एंड इंडस्ट्री का वरिष्ठ उपाध्यक्ष पद 2009 में सम्भाला।

10 जनवरी को जन्मे व्यक्ति

- 1886 में भारत के शिक्षाविद, अर्थशास्त्री एवं न्यायविद् जॉन मथाई का जन्म।
- 1894 में कवि एवं लेखक पी. लक्ष्मीकांतम का जन्म।
- 1908 में हिन्दी के निबन्धकार और साहित्यकार पद्मनारायण राय का जन्म।
- 1933 में ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित पंजाबी साहित्यकार गुरदयाल सिंह का जन्म।

विशेष आलेख

नये वर्ष में कीर्तिमान रचेगा हमारा इसरो

इस साल यानी कि 2025 में इसरो द्वारा निसार, महिला रोबोट व्योमनित्र(महिला ह्यूमनॉइड व्योमनित्र), गगनयान सहित अन्य मिशन लॉन्च लेंगे। उल्लेखनीय है कि व्योममित्र मिशन गगनयान के मानव मिशन(व्योम मित्र रोबोट) की तैयारी का एक महत्वपूर्ण कदम है। दरअसल, व्योम मित्र मिशन फाइनल मानव मिशन जैसा ही होगा, बस इसमें इंसान नहीं होंगे। उल्लेखनीय है कि गगनयान के पहले मानवरहित मिशन को भी नए साल की पहली तिमाही में लॉन्च किया जा सकता है। जानकारी मिलती है कि नासा- इसरो सिंथेटिक अपर्चर रडार (निसार) सैटेलाइट लॉन्च कर सकता है, जो कि अपनी तरह का सबसे महंगा सैटेलाइट है,जिसकी अनुमानित लागत 12,500 करोड़ बताई जा रही है। उल्लेखनीय है कि यह भारत-अमेरिका द्वारा विकसित मिशन है। यह उपग्रह हर 12 दिन में पृथ्वी की सतह और बर्फ की निगरानी करेगा, जिसमें उस रेजोल्यूशन की क्षमताएं होंगी। कहना गलत नहीं होगा कि, इसरो का गगनयान मिशन एक गमराह मिशन होगा। इस संबंध में जानकारी मिलती है कि मानव युक्त अंतरिक्ष उड़ान गगनयान 2025 के अंत तक या 2026 की शुरुआत में लेगा।

— सुनील कुमार महला

वर्ष 2025 का आगमन हो चुका है। नया साल भारत के लिए अंतरिक्ष के क्षेत्र में बहुत ही शानदार उपलब्धियों व कीर्तिमान स्थापित करने वाला होने वाला है। मीडिया के हवाले से खबरें आ रही हैं इस वर्ष यानी कि 2025 में इसरो चार जीएसएलवी, तीन पीएसएलवी और एक एसएसएलवी रॉकेट लॉन्च करेगा। पाठकों को जानकारी देना चाहूंगा कि स्पेस मिनिस्टर श्री जितेंद्र सिंह ने इसरो की उपलब्धियों पर जोर देते हुए कुछ समय पहले यह कहा था कि एक समय अमेरिका चंद्रमा मिशन में व्यस्त था और आज इसरो अमेरिकी उपग्रहों को लॉन्च कर रहा है। 2025, ने केवल इसरो की तकनीकी प्रगति का गवाह बनेगा, बल्कि भारत की अंतरिक्ष शक्ति को वैश्विक स्तर पर और अधिक सशक्त करेगा। जानकारी के अनुसार नए साल(2025) के पहले छह महीनों में छह बड़े मिशन लॉन्च होंगे। पाठकों को जानकारी देना चाहूंगा कि इसरो वर्ष 2024 के अंत में अपने स्पैडेक्स मिशन को लांच कर चुका है और यह भी जानकारी देना चाहूंगा कि अब जनवरी-2025 में इसरो अपने 100 वें मिशन को लांच करने जा रहा है। इस मिशन को जीएसएलवी एफ-15/एनवीएस-02 नाम दिया गया है। यह सेकंड जनरेशन का सैटेलाइट होगा, हालांकि, इसे जनवरी में कब लॉन्च किया जाएगा, इसकी आधिकारिक तारीख अभी जारी नहीं की गई है?। सीवा मिशन जियोसिंकोनस सैटेलाइट लॉन्च व्हीकल यानी जीएसएलवी एमके-2 बूस्ट रॉकेट के जरिए भेजा जाएगा। इस मिशन का उद्देश्य भारतीय उपग्रह नेविगेशन का विस्तार करना है। नेविगेशन पेलोड के जरिए ही धरती पर यूजर्स तक सिग्नल्स पहुंचाए जाते हैं। ऐसा तीन बैंड एल-1, एल-5 और एस स्पेक्ट्रम के जरिए होता है मिशन के जरिए भेजा जाने वाला नेविगेशन सैटेलाइट(एनवीएस) भारतीय जीपीएस नेविगेशन विद इंडियन कॉन्स्टेलेशन का हिस्सा रहेगा। इस मिशन से फायदा यह होगा कि इससे आर्मी की लोकेशन के साथ जमीन, हवा और पानी में नजर रखी जा सकेगी। इससे एक ओर जहां खेती-किसानी में मदद मिलेगी वहीं पर दूसरी ओर इससे इमरजेंसी सर्विस भी बेहतर हो सकेंगी। मोबाइल में लोकेशन से जुड़ी सर्विसेस को भी इससे बेहतर बनाया जा सकेगा। इतना ही नहीं, इससे फाइनेंशियल इंस्टीट्यूशन, पावर ग्रिड और सरकारी एजेंसी को ट्रांसमिट सर्विस उपलब्ध कराई जा सकेंगी तथा साथ ही साथ इससे इंटरनेट वेस्ड ऐप और अधिक बेहतर हो सकेंगी। उल्लेखनीय है कि इसरो ने मार्च से पहले गगनयान मिशन के लिए 'ह्यूमन फ्लाइट सिस्त्र' का परीक्षण करने की भी योजना बनाई है।

इतना ही नहीं,एक अमेरिकी कस्टमर के लिए मोबाइल कम्युनिकेशन सैटेलाइट का कमर्शियल लॉन्च भी जल्द ही होने वाला है। पाठकों को बताता चलूं कि केंद्रीय मंत्री ने बताया था कि पहली तिमाही में एक अंतरराष्ट्रीय कस्टमर के लिए एलवीएम 3-एम-5 मिशन निर्धारित है। फरवरी या मार्च तक अमेरिका के लिए डायरेक्ट मोबाइल कम्युनिकेशन के लिए एक उपग्रह भी लॉन्च किया जा रहा है। यहां यह भी उल्लेखनीय है कि इसरो द्वारा की अन्य महत्वपूर्ण मिशन भी अभी पाइपलाइन में हैं। निश्चित ही ये सारे मिशन भारत की अंतरिक्ष क्षमताओं को और अधिक मजबूत करेंगे। कहना गलत नहीं होगा कि इसरो न सिर्फ देश के लिए बल्कि दुनियाभर के लिए स्पेस साइंस में योगदान दे रहा है। अंत में, यही कहूंगा कि इस साल जहां एक ओर एनवीएस-02 हमारे देश के नेविगेशन सिस्टम को बेहतर बनाएगा, वहीं दूसरी ओर निसार (भारत -अमेरिका द्वारा विकसित)पृथ्वी की निगरानी में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। गौरतलब है कि भारत का व्योममित्र मिशन गगनयान के लिए रास्ता तैयार करेगा, जो भारत के लिए एक ऐतिहासिक और गौरवान्वित करने वाली उपलब्धि होगी। इसी बीच, हाल ही में केंद्र सरकार ने श्री नारायणन को भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) का नया अध्यक्ष और अंतरिक्ष विभाग का सचिव नियुक्त किया है और वे 14 जनवरी 2025 को इसरो के वर्तमान प्रमुख एस सोमनाथ से पदभार ग्रहण करने जा रहे हैं। कहना गलत नहीं होगा कि अब इसरो को एक नया चेहरा मिलने जा रहा है, जो कि इसरो में काफी बड़ा नाम है। जानकारी के अनुसार वे 1984 में इसरो में शामिल हुए थे तथा उन्होंने करीब चार दशकों तक अंतरिक्ष संगठन में कई महत्वपूर्ण पदों पर काम किया है। आपकी विशेषज्ञता रॉकेट और अंतरिक्ष यान प्रोपल्शन में है। उल्लेखनीय है कि डॉ. नारायणन का आदित्य अंतरिक्ष यान और जीएसएलवी एमके-3बूस्ट मिशन, चंद्रयान-2 और चंद्रयान-3 के प्रणोदन प्रणालियों में भी योगदान रहा है।

विश्व हिंदी दिवस

2025 थीम : हिंदी-एकता और सांस्कृतिक गौरव की वैश्विक आगाज

— राजेश कुमार मीना

विश्व हिंदी दिवस प्रतिवर्ष 10 जनवरी को मनाया जाता है।इस को मनाने का उद्देश्य विश्व में हिंदी भाषा के प्रति जागरूकता पैदा करना तथा हिंदी को अंतर्राष्ट्रीय भाषा के रूप में पेश करना है। इसके लिए विश्व हिंदी सम्मेलनों की शुरुआत की गई प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन 10 जनवरी 1975 को नागपुर में आयोजित हुआ बाद में 2006 से प्रतिवर्ष 10 जनवरी को विश्व हिंदी दिवस मनाना आरंभ हुआ विश्व हिंदी सम्मेलन प्रति 3 वर्ष में आयोजित होते है।

11वां विश्व हिंदी सम्मेलन 2018 में आयोजित हुआ 2021 में 12 विश्व हिंदी सम्मेलन आयोजित हुआ। 13वां विश्व हिंदी सम्मेलन 2024में आयोजित हुआ था।जबकि हिंदी दिवस प्रतिवर्ष मनाया जाता है हिंदी भाषा चीनी भाषा के बाद विश्व में सर्वाधिक बोली जाने वाली द्वितीय भाषा है। विश्व के लगभग 150 देशों में हिंदी भाषा बोली जाती है। हिंदी भाषा का नमस्ते शब्द सर्वाधिक प्रयुक्त किया जाने वाला शब्द है जैसा कि भारत के महान साहित्यकार भारतेंदु हरिश्चंद्र ने कहा है-

निज भाषा उन्नति अहै,
सब उन्नति को मूल, बिन निज भाषा ज्ञान के,
मिटत न हिय को शूल, विविध कला शिक्षा अमित, ज्ञान अनेक प्रकार, सब देशों से ले करहु,
भाषा माही प्रचार, अंग्रेजी पढ़ के जदपि,
सब गुन होत प्रवीण, पर
निज भाषा ज्ञान बिन, रहत हीन के हीन

सर्वप्रथम राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने 1917 में भरूच (गुजरात) में हिंदी को राष्ट्रभाषा के रूप में मान्यता देने पर बल दिया था। 1918 में गांधी जी ने हिंदी साहित्य सम्मेलन में हिंदी भाषा को राष्ट्रभाषा बनाने की बात दोहराई साथ ही हिंदी को जनमानस की भाषा कहा। अब हम बात करें करौली रियासत की तो राजकीय कार्यालयों में उर्दू,फारसी और अंग्रेजी का प्रचलन था।

हिंदी का कहीं कोई स्थान नहीं था। न्यायालयों में भी उर्दू और फारसी पढ़े लिखे लोगों का बोलवाला था जो आम जनता का शोषण करते थे कायस्थों के जगदीश्वर विमन सिंह जी के पुत्र कुंवर मदन सिंह ने राजतंत्र के विरुद्ध बिगुल बजाकर हिंदी को राजकीय भाषा का दर्जा दिलाने के लिए प्रयास किए।

22 अक्टूबर 1916 को ठाकुर पूर्ण सिंह की अध्यक्षता में राष्ट्रभाषा घर एक सभा आयोजित की गई जिसमें ठाकुर पूर्ण सिंह ने न्यायालय में उर्दू के स्थान पर हिंदी के प्रयोग की मांग रखी इस प्रकार करौली रियासत में 1916 से ही हिंदी को राष्ट्रभाषा का दर्जा दिलाने के प्रयास आरंभ हो चुके थे। कुंवर मदन सिंह ने सबसे पहले हिंदी समाचार पत्रों में अपने धमाकेदार लेखों से जनता में हिंदी के प्रति जागरूकता का प्रसार किया। 1923 में कुंवर मदन सिंह ने करौली नरेश से तीन मांगे एक रजिस्टर्ड पत्र के माध्यम से पेश की-

(1) प्रजा से बेगार उठना
(2) हिंदी को राजभाषा बनाना
(3) जानवर मारने की आज्ञा देना।

इन मांगों में मांग नंबर (2) हिंदी को छोटा राज्य की तरह राजभाषा बनाना थी अपने समाचार पत्र करौली राज्य में कानून भंग तथा तीन लाख में तीन मांगेंगे माध्यम से करौली नरेश भैरवलाल (1886-1927) को भिजवाई 15 जनवरी 1924 को मदन सिंह ने कानून तोड़ने का निश्चय किया और 28 फरवरी से अन्शान आरंभ करने का संकल्प लिया। करौली राजा द्वारा जब कोई सुनवाई नहीं हुई तो 28 फरवरी 1924 (फागुन कृष्ण अष्टमी संवत 1981) के दिन शाम 4.00 बजे अपनी पत्नी सरदार कुंवरी के साथ झंडा हाथ में लेकर नदी दरवाजे के पास स्थित गोपाल सिंह की छतरी पर मदन सिंह पहुंच गए श्यामपुर के गूर्जर भी अन्शान पर बैठने के लिए आ गए पुलिस शहर में निरंतर गश्त कर रही थी। 28 फरवरी के दिन ठाकुर परम सिंह ने सात समावार पत्रों को तार भेजकर वस्तुस्थिति से अवगत कराया मदन सिंह का स्वास्थ्य खराब होने लगा 1 मार्च को मूंगी त्रिलोक चंद जी ने काफी समझा बुझाकर मदन सिंह को दवा पिलाई 2 मार्च को 200 लोगों का शिष्टमंडल करौली दीवान से मिला अंत में दीवान करौली ने राजा भैरवपाल (1886-1927) को सारी बातें बताई तो 2 मार्च के दिन ही हिंदी भाषा के उपयोग को न्यायालय में पढ़ाने के साथ-साथ अन्य दो मांगों को भी करौली नरेश भैरवपाल (1886-1927) द्वारा स्वीकार कर लिया गया और करौली रियासत में हिंदी भाषा का प्रचलन बढ़ा।

शरित्सयत — बढ़ता राजस्थान/रूपेश तर्मा

संजीव नैन
एसपी, अलवर

नमस्कार साथियों हमारी आज की शख्सियत कॉलम के स्टार हैं भारतीय पुलिस सेवा के शानदार अधिकारी श्री संजीव नैन सर जोकि अभी अलवर जिले की पुलिस कप्तान की बागडोर संभाते हुए हैं। 24 दिसम्बर सन 1970 को भरतपुर जिले में जन्मे संजीव नैन शुरू से ही जमीनी व्यवहार को अपने जीवन में बनाए रहे। राजस्थान पुलिस सेवा के अधिकारी के रूप में राजस्थान पुलिस बेड़े में शामिल हुए कई स्थानों पर डिप्टी एसपी रहे उसके बाद प्रमोट हुए और अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक बने कई जिलों में रहकर शानदार पुलिसिंग करते हुए आगजन में विश्वास व अपराधियों में भय स्लोगन को चरितार्थ किया। सन 2022 को भारतीय पुलिस सेवा में पदोन्नति पर पुलिस अधीक्षक, सी आई डी- एसएसबी जयपुर लगाए गए। इनकी कार्यशैली अद्भुत व पुलिस प्रणाली के लिए बेहतरीन होने पर सरकार ने इन्हें पुलिस अधीक्षक, दौसा लगाया उसके बाद पुलिस उपायुक्त, जयपुर शहर (पश्चिम) पुलिस आयुक्तालय जयपुर रहे। उसके बाद पुलिस अधीक्षक, टोंक और आज पुलिस अधीक्षक, अलवर के पद को सुशोभित कर रहे हैं। पुलिस टीम के लिए हमेशा हौसला बढ़ाने का काम करने वाले शानदार आईपीएस के रूप में संजीव नैन सर को देखा जाता है। पुलिस उपायुक्त, जयपुर शहर (पश्चिम) पुलिस आयुक्तालय रहते हुए इन्होंने मानवीय संवेदना का बेहतरीन परिचय देते हुए मकर संक्रांति के पर्व पर जयपुर की कच्ची बस्तियों व झोपड़ पट्टियों में रहने वाले बच्चों को पतंग व मौताई का वितरण किया जिसे पूरे जयपुर ही नहीं बल्कि राजस्थान भर में सराहा गया। बात सी दी सी पतंगों की नहीं बल्कि आपके मन व आपकी मानवीयता की है। बहुत सुलझे हुए व सरल व्यक्तित्व के धनी हैं संजीव नैन। दैनिक बढ़ता राजस्थान की टीम आपके उज्ज्वल भविष्य की कामना करती है।

2025_012 — बढ़ता राजस्थान — Ans_2025_011

Suduko

5	2	6		7	3		1	
		4			8		6	
8				6		2	9	7
	4						3	
	6			4				1
9		5			6	8		2
1		3	6	4		7		9
				8	1			3
		2		9		1		

8	9	4	7	2	3	6	1	5
7	3	1	5	6	4	9	2	8
2	6	5	8	1	9	3	7	4
5	1	2	4	3	8	7	9	6
6	7	9	1	5	2	8	4	3
4	8	3	9	7	6	1	5	2
9	2	8	3	4	7	5	6	1
1	4	7	6	8	5	2	3	9
3	5	6	2	9	1	4	8	7

कैसे खेलें

वर्ग को 1 से 9 तक अंकों से ऐसे भरें कि आड़ी व खड़ी पंक्ति के साथ ही 3 गुणा 3 के बॉक्स में 1 से 9 तक अंक आएं। कोई अंक दुबारा नहीं आए।

स्वत्वाधिकारी, मुद्रक व प्रकाशक श्रीमती कमलेश विजयवर्गीय द्वारा बढ़ता राजस्थान प्रिंटिंग प्रेस,हमीरपुरा रोड खण्डवा,निवाई टोंक (राज.) से मुद्रित एवं 185/ 116 "प्रतीक्षा" सेक्टर-18, प्रताप नगर सांगानेर, जयपुर से प्रकाशित, संपादक-नन्दुजा पडान*। प्रधान संपादक-राम बिलास विजयवर्गीय मो. 9414242258, 9214048888,जयपुर फोन न.0141-2796794,795 टोंक कार्यालय-बाईपास निवाई, टोंक फोन नं.01432-244881 निवाई 01438-222201,202,203 अलवर कार्यालय-मेहताब सिंह का नोहरा,अलवर मो. 7733000123,कोटा कार्यालय-छावनी मेन रोड,कोटा मो.9414823448 । ई मेल-badhatarajasthan@yahoo.com *पीसाधवी एक्ट के तहत समाचार चयन के लिए जिम्मेदार

विचार

नवभारत टाइम्स

नवभारत टाइम्स । नई दिल्ली। शुक्रवार, 10 जनवरी 2025

ज़रूरी पहल

अफगानिस्तान के कार्यवाहक विदेश मंत्री के साथ भारतीय विदेश सचिव की चुधवार को दुबई में हुई मुलाकात को सामान्य कूटनीतिक कवायद के रूप में नहीं लिया जा सकता। द्विपक्षीय संबंधों के लिहाज से ही नहीं इस पूरे क्षेत्र के भू-राजनीतिक समीकरणों की दृष्टि से भी यह एक महत्वपूर्ण पहल है।

टाइमिंग है अहम | भारत ने अफगानिस्तान की तालिबान सरकार को मान्यता नहीं दी है। लेकिन काबुल में तालिबान की दूसरी पारी शुरू होने के बाद से यह पहला मौका है जब भारत ने विदेश सचिव स्तर पर उसके साथ औपचारिक बैठक की है। जो बात इस बैठक को खास बनाती है, वह है इसकी टाइमिंग।

तालिबान से उच्चस्तरीय बातचीत

पाकिस्तान से खटपट | अभी जब ईरान, इस्राइल की ओर से अपने प्रॉक्सी पर हो रहे हमलों के चलते दबाव में है, रूस यूक्रेन युद्ध में फंस है और अमेरिका में ट्रंप के सत्ता संभालने का इंतजार हो रहा है, भारत की यह पहल बहुत मायने रखती है। सबसे बड़ी बात यह कि अफगानिस्तान में तालिबान का मुख्य संरक्षक माने जाने वाले पाकिस्तान के साथ उसके रिश्ते खराब हो चुके हैं। अफगानिस्तान की सीमा के अंदर पाकिस्तान द्वारा किए गए हवाई हमले के बाद से दोनों देशों में तनातनी बहुत बढ़ गई है। इस मामले में भारत ने साफ कहा कि पाकिस्तान को अपनी आंतरिक समस्याओं के लिए पड़ोसियों को दोषी ठहराने की आदत हो गई है।

सुरक्षा सबसे बड़ा मसला | भारत की मुख्य चिंता सुरक्षा को लेकर है। ऐसे में तालिबान का यह वादा महत्वपूर्ण है कि वे अफगानिस्तान की जमीन का इस्तेमाल भारत के खिलाफ नहीं होने देंगे। भारत का शरणार्थियों के पुनर्वास में मदद देने का आश्वासन इस मायने में भी अहम है कि पाकिस्तान ने अफगान शरणार्थियों को वापस भेजना शुरू कर दिया है। ऐसे ही अफगानिस्तान की विकास परियोजनाओं पर दोबारा काम शुरू करने, स्पोर्ट्स खासकर क्रिकेट को प्रोत्साहित करने और चाबहार पोर्ट के व्यापारिक गतिविधियों में इस्तेमाल को बढ़ावा देने पर हुई सहमति भी रिश्तों के बेहतर भविष्य का संकेत करती है।

महिला अधिकारों पर चुप्पी | हालांकि बैठक के बाद जारी बयान में अफगानिस्तान में महिलाओं के अधिकारों का कोई जिक्र नहीं है। बेहतर होगा कि रिश्तों में बेहतरी की इच्छा से प्रेरित तालिबान महिलाओं और मानवाधिकारों पर अपने नजरिये में भी बदलाव पर विचार करे।

रोज़-ब-रोज़

फ्री स्पीच, वाकई!

शैलेंद्र पांडेय

सोशल मीडिया ने कुछ मायनों में जिंदगी आसान कर दी है, लेकिन इसके आने के बाद सच-झूठ का फैसला भी बड़ा मुश्किल हो गया है। किसी परिचित के नंबरों पर सवार होकर जब कोई सूचना हम तक पहुंचती है, तो यह पता लगाना मुश्किल हो जाता है कि वह सही है या गलत, खासकर जब उस पर फॉरवर्डेड मेसेज का ठप्पा लगा हो। पिछला साल देश के लिए चुनावी था और तब ऐसी फर्जी जानकारियों की बाढ़ आ गई थी, जिनके फर्जी होने के बारे में बाद में पता चला। कुछ सोशल मीडिया प्लैटफॉर्म अपनी तरफ से फैक्ट चेक करते हैं, ताकि फर्जी और भ्रामक सूचनाओं को फैलने से रोका जा सके। लेकिन, फेसबुक की पैरंट कंपनी मेटा ने अब इस काम से हाथ खींच लिए हैं।

मेटा अभी तक थर्ड पार्टी फैक्ट चेक कराती थी, पर कंपनी के संस्थापक मार्क जकरबर्ग को लगता है कि यह प्रोग्राम बेकार है और इसमें गलतियां होने की आशंका ज्यादा है। उनके मुताबिक, फैक्ट चेकिंग का झुकाव किसी एक पक्ष की तरफ भी हो सकता है और सारी पोस्ट्स को खुला छोड़ देना दरअसल फ्री स्पीच है। फ्री स्पीच, यही वह वादा है जिसे करके सोशल मीडिया प्लैटफॉर्म ने पूरी दुनिया पर अपनी पकड़ बनाई है। लेकिन इसके सबसे जरूरी हिस्से से ये कंपनियां हमेशा भागती रही हैं कि स्पीच फ्री तो हो, लेकिन साथ में सही हो और उससे किसी को नुकसान न पहुंचे। गलत सूचनाएं किसी मिसाइल से भी ज्यादा मारक हो सकती हैं। इनके जरिये राजनीतिक-सामाजिक समीकरण बदले जा सकते हैं। पिछले साल, चुनावों के पहले भारत में पहली बार वोट डालने जा रहे युवाओं पर हुए एक सर्वे के मुताबिक, 80% ने माना था कि उनके सोशल मीडिया अकाउंट्स पर फेक न्यूज आती हैं। अमेरिका की बात करें, तो 66% यूजर्स ने माना कि सोशल मीडिया प्लैटफॉर्म पर तीन तिहाई खबरें फेक होती हैं।

इस समय दो युद्ध चल रहे हैं, लेकिन इनको संभालने से ज्यादा मुश्किल है इनके बारे में फैलने वाली फर्जी खबरों को संभालना। ऐसे वक्त में जब मिस इन्फॉर्मेशन पर ज्यादा सख्ती बरतने की जरूरत है, तब कंपनियों को कथित फ्री स्पीच की याद आ रही है। हकीकत में उनका यह बयान भी गलत और भ्रामक है।

एकदा

राष्ट्रप्रेम में भाषा

20वीं सदी में एक महान इतिहासकार हुए, रघुवीर सिंह। सिटामऊ, मध्य प्रदेश के एक शाही परिवार में उनका पालन-पोषण हुआ। लेकिन, पिता राजा राम सिंह ने अपने बड़े बेटे को शाही परिवार की परंपराओं से दूर रखा। रघुवीर सिंह अक्सर फ्रांस जाते थे। वहां वह एक राजवंशीय परिवार में ठहरते। उस परिवार में एक छोटी बच्ची थी, जो उन्हें अंकल कहती और उनसे जरूरत का सामान उपलब्ध कराती थी। इस तरह से वह बच्ची उनकी मुंहलगी हो गई थी। एक दिन की बात है। रघुवीर को भारत से भेजा हुआ एक पत्र मिला। बच्ची की इच्छा हुई कि वह पत्र को देखे। दरअसल बच्ची देखना चाहती थी कि भारत में किस तरह से लिखा जाता है। पत्र देखने के बाद बच्ची हैरान रह गई, क्योंकि उसमें अंग्रेजी में लिखा था। वह निराश हो गई और उसने रघुवीर से पूछा, 'आपके देश की अपनी कोई भाषा नहीं है?' बच्ची ने अपनी मां से सारी बात बता दी। घर की मालकिन ने तब रघुवीर से कहा, 'आप अपने ठहरने का इंतजाम कहीं और कर लें। जिनके पास अपनी भाषा नहीं होती, उन्हें हम सभ्य नहीं समझते।' फिर उस महिला ने भाषा की मर्यादा से जुड़ी अपनी मां लोरेन की कहानी सुनाई। रघुवीर सिंह ने माना कि राष्ट्र से वही प्रेम करता है, जो भाषा से प्रेम करे।

Subrata Dhar

संकलन : पल्लवी वर्मा

हाल में कई इनोवेशन हुए, लेकिन ये समाज के ख़ास तबके तक ही सिमट कर रह गए हैं

तकनीक में ख़ास-ओ-आम का फ़र्क़

निमिष दुबे

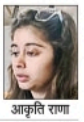

आकृति राणा

टेक्नॉलजी की दुनिया में एक कहावत बहुत मशहूर है कि, हर नई तकनीक के बारे में काफी बातचीत होती है। तब पहले उसका इस्तेमाल होता है टेक सोसायटी में। इसके बाद उसका उत्पादन और उपयोग होता है समाज के ऊंचे तबकों में। फिर घाट-घाट का पानी पीकर यह टेक्नॉलजी आती है आम जनता के बीच।

दुनिया के दो हिस्से | लेकिन, हाल के दिनों में ऐसा नहीं हुआ है। पिछले कुछ बरसों में टेक की दुनिया दो हिस्सों में बंटी नजर आई है। एक तरफ है वे लोग, जो लेटेस्ट टेक्नॉलजी का उपयोग कर फायदा उठा पा रहे हैं। दूसरी तरफ खड़ी है आम जनता, जो ज्यादातर थोड़ी पुरानी तकनीक को कुछ नए डिजाइन और एकाध नए कंपोनेंट के साथ चला रही है।

दिखता है पर ठहरा नहीं | दूर से देखने पर लगता है कि टेक वर्ल्ड में कोई खास परिवर्तन हुआ ही नहीं। वही थोड़े बेहतर प्रोसेसर व कैमरों और 9-10 मिनट जल्दी चार्ज होने वाली बैटरी के साथ आने वाले फोन, वही विंडोज और मैक ऑपरेटिंग सिस्टम पर चलने वाले नोटबुक व डेस्कटॉप कंप्यूटर जो कुछ ज्यादा ही पतले और रंगीन हो चले हैं, वही दवा की डिब्बी जैसे दिखने वाले TWS, वही कलाई पर चिपकी कदम और हार्ट रेट गिनने वाली स्मार्ट घड़ियां वगैरह...! हालांकि इससे यह सोच बनानी गलत होगी कि टेक की दुनिया ठहरी हुई है।

आम जनता से दूर | पिछले कुछ बरसों में कई तकनीकी खोजें हुई हैं, जो हमारे जीवन को पूरी तरह से बदल सकती हैं, जैसे कि आर्टिफिशल इंटेलिजेंस, इलेक्ट्रॉनिक वीकल (EV), वर्चुअल रियलिटी (VR), मुड़ने वाले फोन। अफसोस की बात यह है कि ये सब अभी तक अखबारों के पन्नों, टेक वेबसाइट्स की स्क्रीन और बाजार की पृष्ठभूमि में ही हैं, आम जनता के पास नहीं पहुंचे। इन टेक्नॉलजी की बात काफी समय से हो रही है। Foldable mobile phone के बारे में बात करते हुए आधा दशक से ज्यादा गुजर चुका है, EV का सपना भी कोई नया नहीं और VR के बारे में तो हमें सोनी कंपनी 8-10 साल पहले बता चुकी थी। इन सभी में करोड़ों डॉलर निवेश किया जा चुका है, इन पर ढेरों पन्ने लिखे जा चुके हैं और तमाम वेबसाइट्स पर हजारों बार टिप्पणी की जा चुकी है। इतना सब होने के बाद भी ये टेक्नॉलजी मात्र कुछ लोगों तक पहुंच सकी है।

AI Image

क्या है मसला

- टेक्नॉलजी अब भी महंगी
- लोगों तक पहुंच बनानी होगी
- AI का हो बेहतर इस्तेमाल

नुकसान पहुंचा रही आदत | कंपनियों के सीईओ टेक्नॉलजी के लोकतांत्रीकरण को लेकर बड़ी-बड़ी बातें करते हैं, लेकिन तकनीक के उच्चतम पायदानों पर पिछले कुछ बरसों से पैसा फेंक और तमाशा देख वाला हिसाब चल रहा है। ऐसा लगता है कि लेटेस्ट और सबसे इनोवेटिव टेक्नॉलजी पर केवल कुछ ही लोगों का हक है, और कंपनियां बस इन्हीं लोगों के लिए प्रॉडक्ट बना रही हैं। यह प्रवृत्ति टेक्नॉलजी और मानवता, दोनों के लिए हानिकारक है।

सबकी पहुंच में हो | कितना अच्छा होगा अगर हम 10 हजार रुपये के फोन पर AI का बेहतरीन अनुभव कर सकें! यह भी कितना अच्छा रहेगा कि पेट्रोल-डीजल और इलेक्ट्रॉनिक गाड़ियों के बीच कीमत का अंतर मामूली हो जाए और मुड़ने वाले मोबाइल फोन बस 30 हजार रुपये में मिलने लगें! तमाम लोग इन ख्यालों को कुछ ज्यादा ही आदर्शवादी और काल्पनिक समझेंगे, लेकिन सच तो यही है कि टेक्नॉलजी हो या कोई कला, वह सही मायने में तभी काम आती है, जब ज्यादा प्रचलित होती है। ऐसा होने के लिए उसे आना पड़ेगा आम जनता की पहुंच में। टच स्क्रीन हम लोग 90 के दशक से देख रहे थे, लेकिन उसका असली प्रभाव तब पड़ा, जब एपल ने उसे iPhone और गूगल ने Android पर दर्शाया।

पहल की जरूरत | वैसे भी जितने अधिक उपभोक्ता होंगे, कंपनी को उतना ही फायदा मिलेगा। टेक्नॉलजी तैयार है, जरूरत है किसी के पहल करने की, जैसा गूगल ने तब किया था, जब उसने Google Maps जैसे सॉफ्टवेयर को मोबाइल उपभोक्ताओं को फ्री में उपलब्ध करा दिया था। गूगल ने दुनिया को बताया कि वह कैसे तकनीक दिखाया था कि रास्ता तलाशने के लिए GPS यंत्रों पर हजारों रुपये खर्चने की जरूरत नहीं है। इसी तरह से रिलायंस जियो ने 4G को काफी कम दरों पर उपलब्ध कराकर मोबाइल इंटरनेट का कायापलट कर दिया।

सबके पास हो तकनीक | आशा करते हैं कि 2025 में इसी तरह की पहल होगी और टेक्नॉलजी कुछ लोगों के कमरों से निकलकर आम बाजार में पहुंचेगी। 'कुछ के पास और काफी खास' के दिन बहुत हो गए, समय आ गया है टेक्नॉलजी में 'सबके पास, सबके विकास' का। राहत इंदौरी साहब के शब्दों को थोड़ा-सा बदल कर कहें तो, 'सभी का श्रम और शौर्य शामिल है इस जहां में, किसी के बाप का तकनीकी आविष्कार नहीं।'

(लेखक और लेखिका Tech एक्सपर्ट हैं)

नए भारत में क्या है NRIs की भूमिका

अंशु जोशी

दुनिया भर में फैले भारतीय प्रवासियों के लिए अपनी मातृभूमि को सशक्त बनाने के लिए खुद को विकसित करना एक लंबी यात्रा रही है। अमेरिका और ब्रिटेन को इसके उदाहरण के रूप में देख सकते हैं। विदेशों में प्रवासियों की भूमिका ने ऐसे देशों के साथ अपने द्विपक्षीय संबंधों को विकसित करने में भारत की मदद भी की। इसीलिए भारत सरकार ने इस बार भुवनेश्वर में हो रहे 18वें प्रवासी भारतीय दिवस का मुख्य विषय 'विकसित भारत में प्रवासी भारतीयों का योगदान' रखा है।

लौटे थे गांधीजी | प्रवासी भारतीय दिवस 9 जनवरी, 1915 को महात्मा गांधी के दक्षिण अफ्रीका से लौटने की याद में मनाया जाता है। 9 जनवरी, 2003 को पहला प्रवासी भारतीय दिवस सम्मेलन आयोजित किया गया था। 2015 से यह सम्मेलन हर दो साल में एक बार आयोजित किया जाता है। अब तक 17 प्रवासी भारतीय दिवस सम्मेलन आयोजित किए जा चुके हैं।

बढ़ती संख्या | भारतीय विदेश मंत्रालय की एक रिपोर्ट के अनुसार 26 नवंबर, 2024 तक 35.4 लाख NRI और भारतीय मूल के लोग (PIO) हो गए थे। 2001 में इनकी संख्या लगभग 17 लाख थी। संयुक्त राष्ट्र की रिपोर्ट 'अंतरराष्ट्रीय प्रवासन 2020 हाइलाइट्स' के अनुसार बड़ी संख्या में भारतीय प्रवासी UAE (3.5 लाख), USA (2.7 लाख) और सऊदी अरब (2.5 लाख) में रहते हैं। इसके अलावा यूरोप, अफ्रीका, लैटिन अमेरिका में भी प्रवासी भारतीयों की संख्या लगातार बढ़ी है। इससे भारत के कई देशों के साथ संबंध और मजबूत हुए हैं।

सामरिक शक्ति | पहले इस बात पर विचार किया जाना चाहिए कि प्रवासी भारतीय के जरिए भारत की आर्थिक और सामरिक शक्ति में किस तरह सुधार हुआ है। 1990 के बाद जब भारत में उदारीकरण का दौर शुरू हुआ, चीजें बदलने लगीं। पैसे भेजने के अलावा, विदेशी मुद्रा संकट में पूंजी प्रवाह को बढ़ाने और भारत विकास बॉन्ड व अन्य विशेष योजनाओं की सुरक्षित मार्केटिंग के लिए NRI समुदाय का रुख किया जाने लगा है।

कॉमन रूम

बढ़ता दबदबा | भारत ने निवेश, व्यापार और अमेरिका जैसे देशों के साथ अच्छे संबंधों को बढ़ावा देने के लिए सार्वजनिक कूटनीति के संदर्भ में अपने प्रवासियों का लाभ उठाना शुरू किया। यह वह समय भी था जब IT उद्योग दुनिया भर में फल-फूल रहा था। प्रवासी भारतीयों की पहचान बदलने लगी थी क्योंकि भारतीय सॉफ्टवेयर इंजिनियरों ने अपने बेहतरीन पेशेवर कौशल के साथ दुनिया भर में अपना दबदबा बनाया। आज हम बहुराष्ट्रीय कंपनियों में शीर्ष पदों पर कई भारतीयों को देखते हैं। इससे वास्तव में वैश्विक राजनीति में सॉफ्ट पावर के रूप में भारतीय प्रवासियों की शक्ति में वृद्धि हुई है।

वसुधैव कुटुंबकम | भारत ने अपने महत्वाकांक्षी लक्ष्य 'विकसित भारत' और स्किल इंडिया, स्मार्ट सिटीज, मेक इन इंडिया, डिजिटल इंडिया जैसी प्रमुख योजनाओं की घोषणा की है। नए भारत के लक्ष्य को साकार करने के लिए प्रवासी भारतीयों की भूमिका महत्वपूर्ण रही है। UAE, चीन, जापान, कोरिया और US जैसे देशों ने भारत में भारी मात्रा में निवेश किया है। अपने शक्तिशाली प्रवासी भारतीयों की मदद से भारत न केवल विकास की यात्रा में बड़े प्रतिमान हासिल करने के काबिल बना है, बल्कि दुनिया को प्रभावी ढंग से 'वसुधैव कुटुंबकम' की सीख भी दे रहा है।

(लेखिका JNU के SIS में प्रफेसर हैं)

THE SPEAKING TREE

और पढ़ने के लिए देखें

hindi.speakingtree.in

दस अवतारों में हमारे जीवन की संपूर्ण यात्रा है

सुरक्षित गोस्वामी

जीवन धारण के साथ ही भगवान विष्णु के दस अवतार, जो हमारे ही अवतार हैं, वे शुरू हो जाते हैं। पहला है मत्स्य अवतार! जब मछली की तरह दिखने वाले पिता के अश्रुओं से एक मां के गर्भ में जाकर आकार लेता है। कुछ समय बाद गर्भ में वह फेटस का रूप ले लेता है। अब हम दूसरा यानी कच्छ अवतार धारण करते हैं। अब बाहर आना है तो हम अपने मुख को गर्भ में पलट देते हैं और सुअर की भांति मां की योनि से बाहर निकलने के लिए तैयार हो जाते हैं। यह हमारा तीसरा, वराह अवतार धारण है। फिर हम मां की योनि से निकले, जैसे नरसिंह आधे मानव-आधे शेर के रूप में खंभा फाड़कर प्रकट हुए थे। तब रोने की आवाज जानवर और एक बच्चे जैसी mix होती है, जो जीवन में दोबारा नहीं आती। फिर हमने अपने पैरों पर चलना शुरू किया, हमारा वामन अवतार हुआ।

जब teenage में आ गए तब परशुराम अवतार आया। इस अवतार में हमने कोई अंकुश नहीं चाहा, नियम-कानून नहीं माने। विकास के लिए परशुराम अवतार महत्वपूर्ण है। इस अवतार की ऊर्जा की भलीभांति संभाल हो तो बच्चा जीवन में बहुत आगे जाता है, न हो तो बिखर भी जाता है। पर जब विद्रोह बढ़ा, तब काम-धंधे और शादी से एक नए अवतार की ओर ले जाया गया- मर्यादा पुरुषोत्तम राम अवतार। अब हमने सामाजिक नियम-कानून पर चलना अपना धर्म बना लिया। लेकिन मर्यादा में comfort होता है, इसलिए इस अवतार से आगे जाना कठिन हो जाता है। यहां तक कम प्रयास से आने वाले अवतार हैं। इसके बाद के तीन अवतार बड़े महत्वपूर्ण होते हैं, जिनमें हमें जाना है।

हमारे भीतर जब यह प्रश्न प्रचंड अग्नि की तरह उठे कि मैं कौन हूं, जीवन का सार क्या है, तब हम सतगुरु की खोज करते हैं, उनसे ज्ञान लेते हैं। फिर प्रकट होता है कृष्ण अवतार। अब हम चेतना को ऊर्ध्वगामी करने के अभ्यास में हैं। हमारे भीतर नव-सृजन पैदा होने लगते हैं। जीवन को ज्ञान सहित सुजागी और रौनक के साथ जीना आ जाता है, हमारी फलक बदल जाती है। कृष्ण अवतार में आने के बाद ही हम आगे के दो अवतार में पहुंच सकते हैं। इसके बाद नौवां अवतार आता है, बुद्ध अवतार। यहां हमें चेतना को सर्वोच्च शिखर पर प्रतिष्ठित करना होगा। जिसके बाद ज्ञान का दान हमारा लक्ष्य हो जाता है, जैसे बुद्ध ने दिया। फिर एक जलता दीया अनेक दीये जलाने लगता है।

अंत में दसवां कल्कि या निर-कलंक अवतार आता है। जब समाज द्वारा लगाए गए कलंक का कोई फर्क नहीं पड़ता। कृष्ण, बुद्ध, महावीर को लोग गाली देते थे। उससे उन्हें कोई फर्क नहीं पड़ता था। इस तरह से हमें भी दसवें अवतार तक अपने जीवन की यात्रा करनी है।

वीपी सिंह ने आरिफ़ से क्यों मांगी माफ़ी

के.सी. त्यागी

1984 में सहानुभूति लहर में कांग्रेस पार्टी शीर्ष पर थी। तभी बिहार के नए राज्यपाल बने आरिफ मोहम्मद खान केंद्र में आ गए। आपातकाल के बाद 1977 में बुलंदशहर के स्याना विधानसभा क्षेत्र से निर्वाचित होकर रामनरेश यादव के मंत्रिमंडल में सबसे कम उम्र के मंत्री बने। लेकिन 1978 आते-आते उनके विचार हिलोरें मारने लगे। उन्होंने पहला मोर्चा अपनी ही सरकार के विरुद्ध तब खोल दिया, जब रामनरेश सरकार ने अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय को अल्पसंख्यक दर्जा देने का फैसला किया। उनका तर्क था कि विश्वविद्यालय को एक सार्वजनिक शिक्षण संस्थान के रूप में देखा जाना चाहिए, न कि किसी विशेष समुदाय से जोड़ा जाना चाहिए।

1980 में जनता पार्टी छोड़कर वह कांग्रेस पार्टी के टिकट पर कानपुर से लोकसभा के लिए निर्वाचित हुए और शीघ्र ही कांग्रेस आलाकमान की नजर में आ गए। गृह, ऊर्जा, कंपनी मामलों के राज्य मंत्री के रूप में उनका कार्य सराहा गया। 23 अप्रैल, 1985 को सुप्रीम कोर्ट ने शाहबानो केस में फैसला दिया। इस फैसले का मुस्लिम धर्मगुरुओं ने कड़ा विरोध किया, जिसके चलते तत्कालीन राजीव गांधी सरकार ने 'मुस्लिम महिला अधिनियम 1986' पारित कर दिया। इससे पहले 23 अगस्त 1985 को लोकसभा में आरिफ ने सुप्रीम कोर्ट के फैसले का जमकर बचाव किया। बाद में उन्होंने सार्वजनिक तौर पर एक इंटरव्यू में बताया कि उन्हें खुद राजीव गांधी ने सुप्रीम कोर्ट के फैसले का संसद में समर्थन करने को कहा था।

बढ़ने लगा विरोध

राजीव गांधी की कैबिनेट के भी सदस्य शाहबानो फैसले के खिलाफ थे। वे इसे शरीयत में दखल बताते हुए इस्लाम विरोधी करार दे रहे थे। उस समय सैयद शहाबुद्दीन विरोधियों के सबसे बड़े प्रवक्ता के रूप में उभरे। उन्होंने मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड नाम की एक संस्था बनाई। राजीव गांधी ने उनकी मांगें मान लीं और एक अन्य मंत्री जिया उर रहमान अंसारी को लोकसभा में बहस के बीच उतार कर कांग्रेस का बदला हुआ स्टैंड पेश किया। आरिफ ने इसे समाज सुधार और न्याय के खिलाफ माना और इस्तीफा दे दिया।

राजीव गांधी के विरुद्ध सरकार और पार्टी में असंतोष बढ़ता जा रहा था। 1987 में वीपी सिंह, राजीव गांधी सरकार के विरुद्ध भ्रष्टाचार के आरोप लगाकर निरंतर लोकप्रियता के शिखर को छू रहे थे। इसी बीच, हरियाणा विधानसभा चुनावों में कांग्रेस को 90 में से मात्र 5 सीटों पर ही संतोष करना पड़ा। चौधरी देवीलाल मुख्यमंत्री बने और राष्ट्रीय स्तर पर कांग्रेस विरोधी मुहिम के मुखिया भी। इसी बीच वीपी सिंह ने अपने आधा दर्जन से अधिक वरिष्ठ साथियों के साथ कांग्रेस छोड़कर अक्टूबर, 1987 में जनमोर्चा बनाया। उनके साथ पार्टी छोड़ने वालों में अरुण नेहरू, आरिफ मोहम्मद खान, सत्यपाल मलिक आदि थे। देवीलाल ऐसे ही मौके की ताक में थे। उन्होंने सभाओं में वीपी सिंह को प्रधानमंत्री के उम्मीदवार के रूप में प्रस्तुत कर दिया। हालांकि, चंद्रशेखर और बहुगुणा इसके पक्ष में नहीं थे। लेकिन बोफोर्स तोप घोटाले को लेकर वीपी सिंह भ्रष्टाचार विरोधी मुहिम के केंद्र बिंदु बन गए और उनकी सभाओं में लाखों की भीड़ जुटने लगी। BJP से लेकर वामपंथी दलों तक सभी का उन्हें समर्थन मिला।

इलाहाबाद का उपचुनाव

इसी बीच, 1988 इलाहाबाद लोकसभा उपचुनाव के कार्यक्रम की घोषणा हो गई। अमिताभ बच्चन के इस्तीफे से सीट खाली हुई थी। शुरू में वीपी सिंह इसमें अपनी उम्मीदवारी के पक्ष में नहीं थे। लाल बहादुर शास्त्री परिवार से उनके निजी रिश्ते थे। शास्त्री जी के सुपुत्र सुनील शास्त्री कांग्रेस के उम्मीदवार थे। दबाव में आकर उन्होंने चुनाव लड़ने का फैसला किया। यह चुनाव एक आंदोलन का रूप लेने लगा। लेकिन वीपी सिंह भी राजीव गांधी वाली गलती कर बैठे। उन्होंने आरिफ मोहम्मद खान के बजाय सैयद शहाबुद्दीन को इलाहाबाद चुनाव के लिए आमंत्रित किया ताकि मुस्लिम मतों में बंटवारा न हो। आरिफ मोहम्मद खान को इससे पीड़ा हुई और उन्होंने चुनाव में जाने से इनकार कर दिया। वीपी सिंह उपचुनाव में विजयी रहे, लेकिन जनमोर्चा का विश्वास जीतने में असफल। बाद में उन्होंने आरिफ मोहम्मद खान के आवास पर जाकर खेद व्यक्त किया और उनसे माफी मांगी थी। उसके बाद दोनों फिर साथ हो गए।

विशुद्ध राजनीति

दास्तान

रीडर्स मेल

www.edit.nbt.in

■ सावधानी जरूरी

9 जनवरी का लेख 'HMP वायरस से डरने की जरूरत नहीं' पढ़ा। ह्यूमन मेटान्यूमोवायरस (HMPV) के बारे में हाल की रिपोर्टों से एक डर उभरा है, पर वायरस कोई नया खतरा नहीं है। यह अमूमन बच्चों में पाया जाता है। इसका संक्रमण वयस्कों के लिए गंभीर नहीं होता। केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय ने साफ कर दिया है कि HMPV कोविड-19 जैसा गंभीर संकट पैदा नहीं करेगा। यह वायरस आमतौर पर हलके लक्षणों के साथ ठीक हो जाता है और इसके लिए विशेष इलाज की जरूरत नहीं होती। चिंता करने के बजाय स्वस्थ जीवनशैली अपनाना जरूरी है।

संकेत राणा, ईमेल से

■ यादों में मौसम

8 जनवरी को 'कभी-कभी' कॉलम में प्रकाशित लेख 'अहसासों का पलायन' में लेखक ने फेलिनिस के महत्व को खूबसूरती से समझाया है। खासकर मौसम पर बात की गई है। मौसम बदलता है तो हमारी यादों को खींचकर ले आता है। चाहे वह पहली बारिश में मिट्टी का सौंधापन हो या ठंडी और गर्मी का अहसास। ठंड के दिनों में आग के चारों तरफ जुटने वाली मंडली की बातें भी अक्सर याद आती हैं।

कमल रावत, इंदिरापुरम

■ साइबर सुरक्षा की चिंता

साइबर ठगी और हैकिंग के बढ़ते खतरे से सतर्क रहना बहुत जरूरी है। खासकर सरकारी वेबसाइटों और ऑनलाइन गैवलिंग साइट्स के माध्यम से हैकर आसानी से हम तक पहुंच जाते हैं। सरकार की सख्ती तो जरूरी है ही, लेकिन साइबर सेफ्टी के प्रति हम जागरूक रहेंगे तो हैकर्स अपनी साजिश में सफल नहीं होंगे।

कांतिलाल मांडोत, ईमेल से

nbtedit@timesofindia.com पर अपनी राय नाम-पते के साथ मेल करें।

अंतिम पत्र

रईसों में रंगीन रत्नों का बढ़ा चलन - एक खबर
- अमीरी के साथ ही खोने का डर भी तो बढ़ता है।

पूर्णिमा गोयल

आर.एन.आई. नं. 67572/97 स्वामित्व एवं प्रकाशन विवरण अनुसूची के लिए संपादन एवं प्रकाशन कार्यालय, बेनेट, कोलमैन एंड कंपनी लिमिटेड, टाइम्स हाउस, 7, बहादुर शाह जफर मार्ग, नई दिल्ली-110002 से प्रकाशित। मुद्रक: एम.पी. सिंह, प्रकाशन अधिकारी, बेनेट, कोलमैन एंड कंपनी लिमिटेड, टाइम्स हाउस, 7, बी. शाह जफर मार्ग, नई दिल्ली-110002 द्वारा मुद्रित। संपादक: जयदीप बोस। टेलिफोन: 23720201। विज्ञापन केंद्र कार्यालय : 8, बी. शाह जफर मार्ग, नई दिल्ली-110002। टेलिफोन: 23720201। फैक्स: 23720207। संपादकीय कार्यालय : टाइम्स हाउस, 7, बी. शाह जफर मार्ग, नई दिल्ली-110002। टेलिफोन: 23720201। फैक्स: 23720207। ई-मेल: nbteditor@timesofindia.com। संपादक (दिल्ली एडिशन): जयदीप बोस। इस अंक में प्रकाशित समाचार सामग्री के चयन हेतु संपादक विनु मेनन हैं। सभी विवाद दिल्ली में सुने जाएंगे।

अमर उजाला
प्रवाह
विभिक पत्रकारिता का आठवां दशक
स्थापना वर्ष : 1948
नई दिल्ली ■ शुक्रवार, 10 जनवरी 2025

मौन ही ईश्वर की भाषा है, बाकी सब इसका खराब अनुवाद। -रूमी

विभिन्न जनसमुदायों से मिले जीनोम डाटा को सार्वजनिक किए जाने के साथ ही केंद्र सरकार के महत्वाकांक्षी कार्यक्रम जीनोम इंडिया का पूरा होना देश के जैव-तकनीकी क्षेत्र में मील के पत्थर जैसा है। अब यहां से देश की विकास-गाथा निश्चित ही अलग ढंग से लिखी जाएगी।

विकास का जीनोम

भारत के विभिन्न जनसमुदायों का एक समग्र आनुवंशिक नक्शा तैयार करने के उद्देश्य की ओर बढ़ते हुए अब उनसे मिले जीनोम का डाटा सार्वजनिक किए जाने से शैक्षिक व वैज्ञानिक शोध को तो नई दिशा मिलेगी ही, यह हमारे स्वास्थ्य क्षेत्र में भी क्रांति ला सकता है। जीनोम डाटा का प्रस्तुतीकरण देश के जैव-प्रौद्योगिकी क्षेत्र के लिए एक ऐतिहासिक क्षण है, जो भारत की संभावनाओं को निश्चित ही राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय, दोनों स्तरों पर नई ऊंचाइयों पर ले जाएगा। जीनोम डाटा दरअसल, एक व्यक्ति के डीएनए में निहित आनुवंशिक जानकारी है, जो मानव जीवन की बारीकियों को समझने में मदद करती है। इससे व्यक्ति के जीनोम की आनुवंशिक संरचना और स्वास्थ्य, बीमारियों और औषधियों पर उसकी प्रतिक्रिया के पैटर्न को भी समझा जा सकता है। भारत जैसे अद्वितीय सांस्कृतिक व जैविक विविधता वाले देश में तो इस डाटा का महत्व कई गुना बढ़ जाता है। हालांकि पश्चिमी देशों में जीनोमिक्स शोध का तेजी से विकास हुआ है, भारतीय संदर्भ में इसकी प्रगति अपेक्षया धीमी रही है। यही वजह है कि चिकित्सा क्षेत्र में हम ज्यादातर पश्चिमी देशों द्वारा निर्धारित मानकों पर ही निर्भर रहे हैं। लेकिन, जनवरी, 2020 में केंद्र सरकार द्वारा शुरू किया गया जीनोम कार्यक्रम इस खाई को पाटने का ही एक साहसिक प्रयास है, जिसका उद्देश्य ही देश के विभिन्न समुदायों की आनुवंशिक संरचनाओं का अध्ययन कर एक व्यापक डाटाबेस तैयार करना था। यह जानकारी बीमारियों की रोकथाम और उपचार की दिशा में तो महत्वपूर्ण साबित होगी ही, इससे भारतीय आबादी की आनुवंशिक विविधताओं को भी समझा जा सकेगा। हालांकि दस हजार नमूने सच्चा अरब से भी ज्यादा आबादी वाले देश के सटीक प्रतिनिधि नहीं हो सकते, लेकिन तब भी इसके महत्व को नकारा नहीं जा सकता। पूर्णतया स्वदेशी प्रकृति वाले इस कार्यक्रम की कामयाबी से निस्संदेह देश में बीमारियों की जांच, उपचार और रोकथाम के तरीकों में

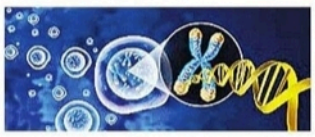

बदलाव आएगा, जो सही मायनों में आत्मनिर्भर भारत का प्रतिनिधित्व करेगा। पुराने मर्जों के साथ ही कैंसर, कोलेस्ट्रॉल, हृदय रोग व मधुमेह जैसी बीमारियों की संक्रामकता स्थितियों को समझने में भी इससे मदद मिलेगी। डाटा की गोपनीयता से जुड़ी नैतिक चुनौती के बावजूद यह जरूर है कि जीनोम कार्यक्रम में कामयाबी की दिशा में आगे बढ़ने से नई औषधियों के अनुसंधान एवं विकास में मदद मिलेगी और देश की अर्थव्यवस्था में भी नई ऊर्जा का संचार होगा। देखना होगा कि सरकार इस डाटा का उपयोग मानवता के फायदे में कितनी कुशलता से करती है। पर यह तो तय है कि विविधता की ही हमारे सबसे बड़े संसाधन में बदलने वाला जीनोम इंडिया विकास की नई गाथा लिखने को तैयार है।

ताकि बची रहे सांस्कृतिक बहुलता

यूनेस्को की ताजा रिपोर्ट बताती है कि हर साल दुनिया से नौ भाषाएं खत्म हो रही हैं। भारत की कोरगा (कर्नाटक), सिरमौरी (हिमाचल प्रदेश) और पारजी (छत्तीसगढ़) भी संकट में हैं। सामूहिक कोशिशों ही इन मरती हुई भाषाओं को बचा सकती हैं।

उमेश चतुर्वेदी
वरिष्ठ एवं राजनीतिक विश्लेषक

बीसवीं सदी के भाषा दार्शनिकों में लुडविग विट्गेंस्टाइन का नाम गंभीरता से लिया जाता है। लुडविग ने भाषा को लेकर अनोखी बात कही है, 'मेरी भाषा की सीमा का अर्थ है, मेरी दुनिया की चौहद्दी।' इसका साफ मतलब यह है कि हर व्यक्ति की अपनी भाषा दरअसल उसकी दुनिया होती है। ऐसी दुनिया, जिसमें सिर्फ भूगोल ही शामिल नहीं है, इतिहास भी है और संस्कृति भी, जिसमें परंपरा भी शामिल है और सदियों का अपना एक्सक्लूसिव ज्ञान भी। जिस तरह नदियां अपने उद्गम और अपने प्रवाह वाले इलाकों की पूरी संस्कृति और पर्यावरण के अथाह गुणों को खुद में समाए रहती हैं, भाषाएं भी नदी की भांति ही अपनी परंपरा, अपनी सोच, अपने दर्शन, अपने भूगोल और अपने इतिहास के साथ ही समूची संस्कृति को लेकर प्रवाहित होती रही हैं।

सवाल उठता है कि भाषाओं को लेकर ऐसी बातों का संदर्भ क्या है? दरअसल, यूनेस्को ने भाषाओं को लेकर जो ताजा रिपोर्ट जारी की है, उसमें कहा गया है कि हर दो हफ्ते बाद दुनिया की एक भाषा मर रही है। यूनेस्को के अनुसार, पहले जहां हर तीन महीने के अंतराल पर एक भाषा की मौत की खबर आती थी, वहीं साल 2019 के बाद इसमें तेजी आई है। इस दर से हर साल दुनिया से करीब नौ भाषाओं का अस्तित्व खत्म होता जा रहा है। साफ है कि अगर एक भाषा मर रही है, तो उस भाषा की अपनी विशिष्ट संस्कृति, उसकी सोच और उसका परिवेशबोध भी मर रहा है। इन अर्थों में देखें, तो भाषाओं का इस तरह मरना दरअसल संस्कृतियों के बहुलवादी स्वरूप का संकुचित होते जाना है।

यूनेस्को के अनुसार, साल एक हजार ईस्वी तक दुनिया भर में नौ हजार से कुछ ज्यादा भाषाएं अस्तित्व में थीं, जिनकी संख्या घटते-घटते आज सात हजार के आसपास सिमट गई है। यूनेस्को को आशंका है कि भाषाओं के मरने की यही दर बनी रही, तो 21वीं सदी के अंत तक दुनिया भर की करीब तीन हजार भाषाओं का अस्तित्व खत्म हो जाएगा। जबकि पश्चिम के कई भाषा और मानवशास्त्री मानते हैं कि अगर भाषाओं के मरने की गति ऐसी ही रही, तो 2200 ईस्वी तक दुनिया में महज 100 भाषाएं ही जीवित रह पाएंगी।

भाषाओं के लुप्त होने को लेकर भारत में एक अवधारणा यह है कि जो भाषा विलुप्त या कठिन होती है, वह लोकव्यवहार में खत्म होती जाती है। संस्कृत के बारे में भी कहा जाता है कि उसका चलन घट गया है। एक खास धारा की वैचारिकी और भाषा दार्शनिक संस्कृत के चलन से बाहर होने के लिए उसके गंभीर होते जाने का उदाहरण देकर भाषाओं के लुप्त होने का सिद्धांत गढ़ते रहे हैं। लेकिन क्या सचमुच भाषाएं सिर्फ विलिप्त होने की वजह से खत्म हो रही हैं? आधुनिक संदर्भों में देखें, तो यह तर्क सही नहीं लगता। अंग्रेजी को ही लीजिए। कठिन अंग्रेजी बोलना शान का प्रतीक माना जाता है। इस लिहाज से तो उसे भी चलन से दूर होना चाहिए था। लेकिन वह बढ़ ही रही है।

आधुनिक विश्व में लोकतंत्र को सबसे बेहतरीन व्यवस्था माना जाता है, पर लोकतंत्र सिर्फ राजनीतिक संदर्भों तक ही सिमटता जा रहा है। संस्कृतियों और उनकी अपनी विशिष्ट परंपराएं रोजाना के व्यवहार का विषय नहीं रहीं। उदारीकरण और वैश्वीकरण की वजह से पूरी दुनिया तकरीबन एक तरह के खानपान, पहनावे और एक तरह की भाषा की ओर आकर्षित होती जा रही है। पश्चिमी सभ्यता और उसका सलीकेदा ही मानक बनते जा रहे हैं। इस लिहाज से दुनिया भर की बोलियों में भी एकरूपता कभी सायास, तो कभी अनायास ही आती जा रही है।

इस पूरी प्रक्रिया में छोटे समुदायों की भाषाएं लगातार हाशिये पर जा रही हैं। चूंकि रोजी-रोजगार के लिए छोटे समुदायों की भाषाएं सहयोगी नहीं रह पाईं हैं, तो उनका चलन रोजाना की जिंदगी में कम होता जा रहा है और भाषाएं मर रही हैं। इसमें हर देश की केंद्रीय भाषाएं, जहां केंद्रीय भूमिका में रहती हैं, वहीं उनके देसज रूप लगातार या तो कमजोर हुए हैं या फिर लुप्त हो रहे हैं। कथित आधुनिक सोच इस प्रवृत्ति को और बढ़ावा दे रही है। भारत में अंग्रेजी इस आधुनिकता की वाहक है। इसी तरह कुछ प्रमुख भाषाएं अपने-अपने क्षेत्रों में आधुनिकता का केंद्रीय तत्व बन चुकी हैं।

बहुत-सी ऐसी भाषाएं हैं, जो इतने कम लोगों द्वारा बोली जाती हैं कि निकट भविष्य में उनका अस्तित्व ही नहीं रहेगा। यूनेस्को की रिपोर्ट 'एटलस-लुप्तप्राय भाषाएं' के अनुसार भारत में तीन ऐसी भाषाएं हैं, जिनके अस्तित्व पर संकट आ खड़ा हुआ है। इसमें पहले नंबर पर कर्नाटक की कोरगा है, जिसे बोलने वालों की संख्या महज सोलह हजार ही है। इसी तरह हिमाचल प्रदेश की सिरमौरी भाषा को महज 31 हजार लोग ही बोलते हैं। और तीसरे स्थान पर छत्तीसगढ़ की पारजी भाषा है, जिसे सिर्फ पचास हजार लोग बोल रहे हैं। जाहिर है कि इन भाषाओं के अस्तित्व पर संकट है। रोहिंग्या लोगों की भाषा हनीफी भी मरने के कगार पर है। यूरोप में अस्तित्व के संकट से आयरिश, सिसिली और विडिश भाषाएं भी जूझ रही हैं।

हमें याद रखना चाहिए कि भाषाओं की गहन विविधता सांस्कृतिक विविधता को न सिर्फ सुनिश्चित करती है, बल्कि अपने क्षेत्र की सांस्कृतिक पहचान को आकार देती है। अगर आज के दौर में किसी भाषा को पीछे धकेला जा रहा है या किनारे किया जा रहा है, तो इसका मतलब यह भी है कि इसके जरिये एक तरह से उस भाषा क्षेत्र की संस्कृति का हिस्सा भी गायब हो रहा है। हर संस्कृति में सब कुछ लिखने की क्षमता नहीं होती, उसके कई तत्व श्रुति, स्मृति और चलन के सहारे जिंदा रहते हैं। भाषा के मरने के बाद संस्कृति का वह अविलक्षण हमेशा-हमेशा के लिए खत्म हो जाता है। इसलिए जरूरी है कि हम अपनी भाषाओं को जिंदा रखें।

भाषाओं को जिंदा रखने के लिए स्थानीय स्तर पर कोशिशें भी हो रही हैं। चीन ने अपनी पुरानी मंदारिन को संरक्षित करने के लिए अभियान चला रखा है। नाइजीरिया अपनी भाषाओं को वाचिक रूप में बचाए रखने के लिए रिकॉर्ड करने का सहारा ले रहा है। भारत में भी कई लोग अपनी बोलियों को बचाने के लिए ऐसी कोशिशें कर रहे हैं। मरती हुई भाषाओं को बचाने के लिए व्यक्तिगत के बजाय सामूहिक कोशिशें होनी चाहिए। भाषाओं के महत्व को हम अमेरिकी नारीवादी रीटा मे ब्राउन के शब्दों में समझ सकते हैं। रीटा कहती हैं, 'भाषा किसी भी संस्कृति का रोडमैप होती है। वह आपको बताती है कि इसे बोलने वाले लोग कहां से आते हैं और कहां जा रहे हैं।'

editamarujala.com

जीवन धारा

तुई पाश्चर

दुखों के समय खुद को हतोत्साहित न होने दें, बल्कि प्रयोगशालाओं और पुस्तकालयों की शांति में रहें। हमें खुद से सवाल पूछना चाहिए कि मैंने अपनी शिक्षा के लिए क्या किया है?

खुद से सवाल पूछें और दुनिया को रोशन करें

मेरा फलसफा दिल का है, दिमाग का नहीं। हमारी आत्मा की गहराई में कोई ऐसा तत्व होता है, जो हमें बताता है कि दुनिया घटनाओं के समन्वय से काफी आगे है। इसलिए, मैं आपसे अनुरोध करता हूं कि उन पवित्र क्षेत्रों में जरूर दिलचस्पी लें, जिन्हें प्रयोगशालाएं कहा जाता है। प्रार्थना करें कि और भी ऐसे प्रार्थना स्थल हों, जिन्हें सजाया जाए, क्योंकि भविष्य में ये धन और खुशहाली के मंदिर होंगे। मैं जितना अधिक इस पवित्र स्थल में प्रकृति का अध्ययन करता हूं, उतना ही अधिक मैं सृष्टिकर्ता के कार्य पर आश्चर्यचकित होता हूं।

विज्ञान मनुष्य को ईश्वर के निकट लाता है। इसी जगह पर मानवता विकसित होगी, मजबूत होगी और बेहतर होगी। यहां मानवता, प्रकृति के कार्यों में प्रगति और व्यक्तिगत सामंजस्य को पढ़ना सीखेगी, चूंकि मानवता के अपने कार्य अक्सर बर्बरता, कट्टरता और विनाश के होते हैं। विज्ञान किसी देश और विशेष लोगों को नहीं जानता, क्योंकि ज्ञान मानवता का है और यह यह मशाल है, जो दुनिया को रोशन करती है। विज्ञान राष्ट्र का सर्वोच्च अवतार है और वह राष्ट्र प्रथम रहेगा, जो विज्ञान और बुद्धि के कार्यों को सबसे आगे ले जाएगा। इसलिए हमें जीवन में सीखने के क्रम में एक बात ध्यान में रखनी चाहिए, खासकर युवाओं को, उन शक्तिशाली और सुरक्षित तरीकों पर भरोसा रखना चाहिए, जिनके रहस्य अभी भी खोजे जाने हैं। और, चाहे आपका पेशा कुछ भी हो, अपने आपको किसी भी नकारात्मक और बंजर संदेह से कलंकित नहीं होने दें, जीवन में बौतने वाले दुखों के समय खुद को हतोत्साहित नहीं होने देना चाहिए, बल्कि प्रयोगशालाओं और पुस्तकालयों की शांति में रहें। हमें खुद से सवाल पूछना चाहिए कि मैंने अपनी शिक्षा के लिए क्या किया है? एक समय बाद फिर पूछें कि मैंने अपने देश के लिए क्या किया है? इस तरह के तमाम प्रश्नों को पूछते रहें, जब तक आपके भीतर एक खुशी न आ जाए कि हमने किसी तरह से मानवता की प्रगति और भलाई में योगदान दिया है।

हमारे प्रयास चाहे जीवन के अनुकूल हों या न हों, हम आखिरी में जब महान लक्ष्य के करीब पहुंचें, तो यह कहने में सक्षम हों, 'मैंने वह किया, जो अपनी ओर से कर सकता था।' मुझे लगता है कि हममें से प्रत्येक में दो व्यक्ति होते हैं। पहला, वह जो स्पष्ट रूप से अवलोकन, प्रयोग और तर्क के माध्यम से प्रकृति के ज्ञान तक पहुंचने की इच्छा रखता है। दूसरा, वह भावुक व्यक्ति, जो अपने किसी प्रियजन की मौत का शोक मनाता है और कल्पना करता है कि उसे वह एक दिन फिर से देखेगा और इसी आशा में जीवन जीता है। जीवन हो या विज्ञान, कल्पना के माध्यम से हमें विचारों को गढ़ने देना चाहिए, लेकिन एक समय बाद हमें हमेशा निर्णायक प्रयोगात्मक प्रमाण की आवश्यकता होती है।

खुद पर भरोसा रखें

खुद पर भरोसा रखें। ऐसे वातावरण का निर्माण करें, जिसके साथ आप खुश रहें। संभावनाओं की छोटी-छोटी आंतरिक चिंगारियों को उपलब्धि की लपटों में बदलकर खुद का अधिकतम लाभ उठाएं। जब आप अपना खयाल रखते हैं, तो आप दूसरों के लिए बेहतर इन्सान बनते हैं। जब आप अपने बारे में अच्छा महसूस करते हैं, तो दूसरे के साथ बेहतर व्यवहार करते हैं।

सूत्र

दूसरा पहलू

वैज्ञानिक समुदाय जिस तरह जुटा है, उससे जल्द ही मंगल ग्रह पर जीवन के रहस्य खुलने की उम्मीद की जा सकती है।

मंगल के रहस्य खुलने के इंतजार में

विश्व विख्यात वैज्ञानिक स्टीफन हॉकिंग ने अपनी मृत्यु से कुछ वर्ष पहले कहा था कि हमको दूसरे ग्रहों पर जीवन बसाना होगा। यदि ऐसा नहीं होता है, जलवायु परिवर्तन और विनाशकारी कार्यों के कारण मानव सभ्यता का अंत निश्चित है। शायद यही सोचकर एलन मस्क ने अगले 20 वर्षों में मंगल पर पूरा शहर बसाने की योजना बनाई है। उनकी कंपनी स्पेसएक्स अगले दो वर्षों में मंगल ग्रह पर अपने सबसे बड़े रॉकेट स्टारशिप को भेजने की योजना बना रही है।

निरंकार सिंह

उनके अनुसार, यदि बिना क्रू वाला यह मिशन सफल रहा, तो अगले चार वर्षों में मानव मिशन को मंगल पर भेजा जाएगा। उधर, नासा का मंगल पर मानव अभियान इसी साल भेजने का इरादा है। मंगल ग्रह के लिए नासा पहले अपने आर्टिमिस अभियान को पूरा करेगा, जिसमें वह 2027 तक दो यात्रियों को कुछ दिनों के लिए चंद्रमा पर भेजेगा, जिसके बाद वहां स्थायी बेस बनाने का सिलसिला शुरू हो जाएगा। मंगल ग्रह पर जीवन को लेकर वैज्ञानिक अब भी बहुत गहन शोध कर रहे हैं। अब तक उन्हें यही पता चला है कि मंगल पर फिलहाल जीवन नहीं है। पर उन्हें इस बात के संकेत मिलते रहे हैं कि कभी मंगल ग्रह पर जीवन के अनुकूल हालात जरूर थे।

तरल पानी को धरती पर जीवन के लिए सबसे जरूरी तत्वों में से एक माना जाता है। इसी वजह से, वैज्ञानिकों की दिलचस्पी मंगल के 'टेरा सिरेनम' नामक क्षेत्र में है। इसके भीतर एक टोपोग्राफिक डिप्रेशन है, जो मंगल ग्रह के आर्द्र इतिहास को समझने में महत्वपूर्ण सुराग दे सकता है। आहमदाबाद की फिजिकल रिसर्च लैबोरेटरी के वैज्ञानिकों ने दावा किया है कि यह डिप्रेशन असल में एक विशाल तलछटी बेसिन का हिस्सा है। जानकारी के अनुसार, सेंट्रल इटैलिजेंस एजेंसी ने 1984 में एक मनोवैज्ञानिक का इस्तेमाल किया, जिसे 'रिमोट व्यूअर' के रूप में जाना जाता है, ताकि वे अपने दिमाग को किसी स्थान और समय पर केंद्रित कर सकें और बता सकें कि उन्होंने क्या देखा। 'रिमोट व्यूअर' ने देखा कि दस लाख साल पहले मंगल ग्रह पर क्या था? मार्स एक्सप्लोरेशन भई 22, 1984 टाइटल वाले डॉक्यूमेंट के अनुसार, एस्ट्रल प्रोजेक्शन-ऐसी तकनीक है, जिसके बारे में माना जाता है कि यह व्यक्ति को चेतना या सूक्ष्म रूप को शरीर से परे यात्रा करा सकती है-के जरिये किसी को मंगल पर कोई दस लाख साल ईसा पूर्व भेजा गया था। अब यह कितना सच है, इसका तो कोई प्रमाण नहीं है, लेकिन यह तय है कि अंतरिक्ष के कई रहस्य खुलने के इंतजार में हैं।

मंगल ग्रह पर जीवन को लेकर वैज्ञानिक गहन शोध कर रहे हैं। अब तक उन्हें यही पता चला है कि मंगल पर फिलहाल जीवन नहीं है। पर उन्हें इस बात के संकेत मिलते रहे हैं कि कभी मंगल ग्रह पर जीवन के अनुकूल हालात जरूर थे।

आंकड़े

मुद्रा अवमूल्यन

वर्ष 2024 में अमेरिकी डॉलर के मुकाबले दुनिया भर की मुद्राओं में करीब 22 फीसदी तक की बड़ी गिरावट दर्ज की गई।

ब्राजीलियाई रियाल	21.6%
रूसी रूबल	18.6%
द. कोरियाई वॉन	12.6%
न्यूजीलैंड डॉलर	11.4%
जापानी येन	10.3%

आंकड़े अमेरिकी डॉलर के मुकाबले मुद्रा अवमूल्यन के, प्रतिशत में | स्रोत : ब्लूमबर्ग

एक साधु ने धन्ना जी को शालिग्राम की मूर्ति देकर कहा, इन्हें भोग लगाने के बाद ही भोजन करना। धन्ना जी की लगन देखकर भगवान ने प्रकट होकर भोग लगाया।

भक्त धन्ना जी का भरोसा

भक्त धन्ना जी का जन्म राजस्थान के टोंक जिले के धुआं गांव में हुआ था। धन्ना जी के पिता खेती-बाड़ी करते थे। जब धन्ना जी की उम्र करीब पांच वर्ष की थी, तो एक साधु उनके घर आए। उन्होंने स्नान किया और अपनी झोली से शालिग्राम की मूर्ति निकालकर उसकी पूजा की और भोग लगाकर आचमन किया।

बालक धन्ना यह सब कौतूहल से देख रहे थे। वह सोचने लगे कि यदि उनके पास भी ऐसी मूर्ति होती, तो वह पूजा करते। साधु के पास जाकर उन्होंने वैसी ही मूर्ति के लिए याचना की। साधु ने शालिग्राम जी की मूर्ति देते हुए कहा, 'बेटा! यह भगवान हैं, तुम इनकी पूजा किया करो। इन्हें भोग लगाए बिना खुद कभी भोजन नहीं करना।' यह बात बालक धन्ना के दिल में बस गई। धन्ना जी सूर्योदय से पूर्व उठकर स्वयं स्नान करके अपने भगवान को स्नान कराते, चंदन लगाते, तुलसी चढ़ाते और पूजा आरती करते। मां जब खाने के लिए बाजरे की रोटी देती, तो वह उसे भगवान के आगे रखकर आंखें मूंद लेते। वह बीच-बीच में अपनी आंखें खोलकर देख लेते थे कि भगवान ने भोग लगाना शुरू किया कि नहीं। जब भगवान रोटी नहीं खाते, तो धन्ना जी भी भूखे रह जाते। अंततः भक्त के दुख से द्रवित होकर भगवान उनके सामने प्रकट हुए और भोग लगाने लगे। इससे धन्ना जी बहुत प्रसन्न हुए। यह धन्ना जी का साधु की बात पर भरोसा करने का ही फल था कि भगवान को प्रकट होना पड़ा।

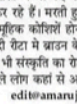

अंतर्यात्रा
संकलित

अमर उजाला

पुराने पन्नों से — 03 मई, 1963

विंस्टन चर्चिल का ब्रिटेन के राजनीतिक जीवन से संन्यास

सर विन्स्टन चर्चिल का ब्रिटेन के राजनीतिक जीवन से संन्यास

ब्रिटेन के राजनीतिज्ञ विंस्टन चर्चिल ने घोषणा की कि वह राजनीति से संन्यास ले रहे हैं। वह अगले आम चुनाव में भाग नहीं लेंगे। मतदाताओं से कहा कि वे अगले आम चुनाव के लिए नया प्रतिनिधि चुन लें।

अंग्रेजीमय माहौल में कैसे खिलेगी हिंदी

भारत में अंग्रेजी वैश्विक औसत से भी ज्यादा कुशलता से बोली जाती है। हमें अपनी पहचान को बनाए रखने के लिए हिंदी को महत्व देना होगा।

राजीव रंजन प्रकाश

विश्व हिंदी दिवस

हाल में प्रकाशित प्रिंयर्सन ग्लोबल इंग्लिश प्रोफिशियेंसी रिपोर्ट-2024 में अंग्रेजी बोलने की क्षमता के वैश्विक औसत स्कोर 54 की तुलना में भारतीयों का औसत स्कोर 57 पाया गया है, जो यह दर्शाता है कि अंग्रेजी बोलने में भारतीयों का कौशल वैश्विक स्तर से कहीं बेहतर है। देश के बड़े शहरों में अंग्रेजीमय माहौल की बात करें, तो दिल्ली 63 के औसत स्कोर के साथ देश में सबसे आगे है, लेकिन राजस्थान जैसे शुद्ध हिंदी भाषी राज्य का 60 के स्कोर के साथ द्वितीय और पंजाब जैसे पंजाबी भाषी प्रदेश का 58 के स्कोर के साथ तृतीय स्थान पर आना निश्चित तौर पर अचंभित करता है। इस रिपोर्ट में भारत, फिलीपीन, जापान, मिस्र और यूरोप जैसे देशों में अंग्रेजी कौशल के रुझानों का विश्लेषण किया गया है।

विश्व हिंदी दिवस के मौके पर उक्त रिपोर्ट पर चर्चा करना हिंदी के प्रति नकारात्मकता है, फिर भी यहां यह चर्चा जरूरी है, क्योंकि एक ओर हम हिंदी को वैश्विक भाषा बनाने की बातें करते हैं, दूसरी ओर हमारे देश में

हिंदी की स्थिति दयनीय होती जा रही है। प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा पर अंग्रेजी पूर्णतः हावी है। हम आज तक उच्च शिक्षा में अंग्रेजी के निरंतर बढ़ते प्रभाव का कोई विकल्प नहीं ढूंढ पाए हैं।

मुझे अचंभा तब हुआ, जब जोधपुर में एक मित्र से बात के दौरान उनके दस वर्षीय पुत्र ने उन्हें 'डैडा' कहा। भारत में एक पिता कब पिताश्री से पिताजी, पापा, फिर डैडी बना और अब उसका नया संस्करण 'डैडा' बन गया है। माताश्री तो कब की मम्मी होते हुए मॉम तक पहुंच चुकी हैं और मॉम का डैडा वाला संस्करण क्या होगा? फिलहाल अंदाजा लगाना मुमकिन नहीं।

इसके अलावा, डिजिटल इंडिया के बढ़ते प्रभाव के कारण अनेक ओटीटी चैनलों पर हर तरह की फिल्मों और वेब सीरीजों का अथाह सागर मौजूद है। यहां अमेजन प्राइम पर उपलब्ध एक अंग्रेजी फिल्म *गर्ल्स विल बी गर्ल्स* की चर्चा की जा सकती है। अंग्रेजी में बनी यह फिल्म एक शिक्षण संस्थान के विद्यार्थियों पर आधारित है, जिसमें सभी पात्र अंग्रेजी बोलते हैं। यहां तक कि मां-बेटी भी अंग्रेजी में ही संवाद करती हैं, लेकिन जब वे खरीदारी के लिए जाते हैं, तो दुकानदार से हिंदी में बात करते हैं। इस फिल्म में वैसे सभी दृश्य हैं, जो आम तौर पर अंग्रेजी फिल्मों में होते हैं। यह फिल्म भारतीय फिल्मों में हो रहे बदलाव का संकेत है।

स्पष्ट है कि देश की नई पीढ़ी बदल रही है। अपनी पौराणिक धर्म, संस्कृति और परंपरा से भी निरंतर दूर होती जा रही है। सोशल मीडिया पर दिखाए जा रहे एक विज्ञापन की चर्चा समीचीन है, जिसमें अस्पताल में भर्ती एक लड़की अपने पिता की मृत्यु के बाद दाह-संस्कार करने वाली एजेंसी को फोन करती है। यह विज्ञापन कहीं न कहीं यह दर्शाने की कोशिश करता है कि भारत जैसे सामाजिक परंपरा में यकीन करने वाले देश में अब दाह-संस्कार सेवा भी शुरू हो गई है। हाल ही में वाराणसी में प्रवास में आए एक मामले ने भारत में बदलती संस्कृति की झलक दिखा दी, जिसमें करीब 400 धार्मिक पुस्तकों के लेखक और 80 करोड़ रुपये से अधिक की संपत्ति के मालिक श्रीनाथ खंडेलवाल को उनके बच्चों ने घर से निकाल दिया। वृद्धाश्रम में उनकी मृत्यु होने पर जब उनके बेटे-बेटी को इसकी सूचना दी गई, तो वे अंतिम संस्कार में भी नहीं आए। भारत में ये घटनाएं इस बात की साक्षी हैं कि हमने किस अंग्रेजी भाषा को अपनाया ही नहीं, बल्कि अंग्रेजी संस्कृति में पूर्णतः रम गए हैं।

भारत में निरंतर बढ़ती अंग्रेजी के चलते वर्ष 1858 में भारतीय शिक्षा अधिनियम के संबंध में ब्रिटिश संसद में दिया गया लार्ड मैकाले का कथन, 'हमें हिंदुस्तानियों का एक ऐसा वर्ग तैयार करना है, जो अंग्रेज शासकों एवं उन करोड़ों भारतीयों के बीच दुभाषिए का काम कर सके, जिन पर हम शासन करते हैं। ऐसा वर्ग भी तैयार करना है, जिनका रंग-रूप भले ही भारतीय हो, परंतु वे विचार, नैतिकता और बौद्धिकता में पूर्णतः अंग्रेज हों' सहसा स्मरण में आ जाता है। शायद भारत में भी अपनी भाषा के प्रति ऐसी दुरदर्शी सोच रखने वाले राजनेता होते, तो शायद हिंदी वैश्विक फलक पर सफलता की पताका फहरा रही होती। हालांकि वर्तमान सरकार हिंदी के प्रचार-प्रसार को लेकर काफी सजग है।

इसमें कोई शक नहीं कि आज अमेरिका, रूस, चीन, जापान, जर्मनी, फ्रांस, इंग्लैंड, कनाडा, इटली, यूएई, पोलैंड, हंगरी, रोमानिया जैसे कई देशों के करीब 200 से अधिक विश्वविद्यालयों में हिंदी पढ़ाई जा रही है। संयुक्त राष्ट्र की विश्व प्रवासी रिपोर्ट 2022 के अनुसार, 2020 में दुनिया भर में सबसे बड़ी प्रवासी आबादी भारतीयों की थी। हिंदी विश्व की तीसरी बड़ी बोली जाने वाली भाषा है। अब बदलते परिपेक्ष्य में हमें इस बात पर ध्यान देना चाहिए कि हमारी भाषा ही हमारी सभ्यता की सच्ची वाहक है। हमें अपनी भाषा पर गर्व करते हुए उसे पर्याप्त महत्व देना होगा, तभी भविष्य में विश्व स्तर पर हम अपनी और अपने देश की पहचान कायम रख पाएंगे।

हिम्मत और दृढ़ता के पास जादुई ताबीज होता है, जिसके सामने मुश्किलें लुप्त हो जाती हैं और बाधाएं हवा में नष्ट हो जाती हैं।

– जान क्विंसी एडम्स

उदासीनता का रुख

इससे बड़ी विडंबना क्या होगी कि किसानों का आंदोलन लंबे समय से जारी है, उसके मुद्दे स्पष्ट हैं, लेकिन सरकार कोई भी ऐसा ठोस कदम उठाने के प्रति उदासीन दिख रही है, जो एक समाधान की राह तक पहुंचे। क्या यह साफतौर पर सरकार के भीतर राजनीतिक इच्छाशक्ति के अभाव को प्रदर्शित नहीं करता कि वह किसानों की मांग को लेकर इस हद तक अगंभीर दिख रही है कि आंदोलन के एक नेता की सेहत दिनोंदिन बिगड़ती जा रही है, उनके जीवन पर खतरा बढ़ता जा रहा है और वह हल के लिए सहमति बनाने के बजाय समस्या की अनदेखी करने में लगी है। सवाल है कि आखिर किन वजहों से वह फसलों के न्यूनतम समर्थन मूल्य को लेकर कानूनी गारंटी पर स्थिति स्पष्ट नहीं करना चाहती है और उसका यह रुख किसके हित में है। गौरतलब है कि एक ओर किसान नेता जगजीत सिंह डल्लेवाल पिछले पैंतालीस दिनों से अनशन पर हैं और उनकी हालत लगातार नाजुक बनी हुई है, दूसरी ओर, इसी मसले पर सरकार द्वारा मांगें नहीं मानने की वजह से बीते तीन हफ्ते के भीतर दो किसानों ने आत्महत्या कर ली।

यह समझना मुश्किल है कि एक लोकतांत्रिक सरकार इस हद तक उदासीन कैसे हो सकती है कि अपनी समस्याओं की अनदेखी किए जाने की वजह से किसानों के जान देने की खबरें आ रही हैं, वहीं उनके नेता का जीवन भी जोखिम में है। अगर किसानों के संगठित आंदोलन के सामने ऐसे चुनौतीपूर्ण हालात पैदा हो रहे हैं, तो बाकी मसलों के संदर्भ में अंदाजा लगाया जा सकता है। डल्लेवाल के अनशन और उनकी सेहत को लेकर सुप्रीम कोर्ट भी चिंता जाहिर कर चुका है। मगर इसके बावजूद सरकार कोई ऐसी राह तलाशने को लेकर उत्सुक नहीं दिख रही है, जिससे किसान आंदोलन की मांगों पर सभी पक्षों के बीच कोई सहमति कायम हो सके और डल्लेवाल अपना अनशन फिलहाल खत्म करें। अगर सरकार फसलों के न्यूनतम समर्थन मूल्य सुनिश्चित किए जाने के मसले पर ईमानदार है तो वह इस संबंध में कानूनी गारंटी का प्रावधान करने से क्यों हिचक रही है? जबकि खुद एक संसदीय समिति भी न्यूनतम समर्थन मूल्य पर कानूनी गारंटी देने की वकालत कर चुकी है।

मौजूदा दौर में खेती-किसानी के सामने बढ़ती चुनौतियां किसी से छिपी नहीं है। बाजार के बदलते ढांचे के बीच किसानों की बढ़ती समस्याओं को दूर करने के मकसद से नीतिगत पहल करना सरकार को जरूरी नहीं लगता। उल्टे जिस तरह की व्यवस्था से किसान अपनी असहमति जताते हैं, भविष्य में उसके घातक परिणाम बताते हैं, सरकार को उस ओर कदम बढ़ाने में कोई हिचक नहीं होती। पिछली बार किसानों के कई महीने चले आंदोलन के बाद सरकार को विवश होकर विवादित तीन कृषि कानूनों को वापस लेने की घोषणा करनी पड़ी थी। तब यह उम्मीद की गई थी कि अब सरकार किसानों के साथ मिल-बैठ कर इस समस्या पर सहमति के बिंदुओं की तलाश करेगी और कोई ठोस हल उभर कर सामने आएगा। मगर यह अफसोस की बात है कि किसानों को अब भी न्यूनतम समर्थन मूल्य पर कानूनी गारंटी के लिए लड़ाई लड़नी पड़ रही है और सरकार ने लगातार टालमटोल का रवैया अख्तियार किया हुआ है। सरकार और किसानों के बीच चल रही यह खींचतान की स्थिति अब एक नाजुक मोड़ पर पहुंच चुकी है। सरकार को चाहिए कि वह समय रहते इस समस्या के समाधान को लेकर कोई ठोस पहल करे।

कुप्रबंधन की कीमत

किसी भी हादसे का सबसे बड़ा सबक यह होना चाहिए कि ऐसे उपाय किए जाएं, ताकि दोबारा उसी तरह के हालात पैदा न हों। मगर धार्मिक स्थलों पर या ऐसे आयोजनों में जमा होने वाली भीड़ और उसके प्रबंधन को लेकर अक्सर इस हद तक लापरवाही बरती जाती है कि बार-बार भगदड़ की वजह से लोगों की जान जाने की घटनाएं सामने आ रही हैं। गौरतलब है कि तिरुपति के भगवान वेंकटेश्वर स्वामी मंदिर परिसर में बुधवार को मची भगदड़ ने पुराने जख्मों को कुरेद दिया है। यह आमतौर पर देखा गया है कि किसी खास आयोजन की तैयारी तो कर ली जाती है, लेकिन भीड़ नियंत्रण और प्रबंधन के उपाय पहले से नहीं किए जाते। तिरुपति में भी ऐसा ही हुआ। वहां टोकन लेने के लिए श्रद्धालु उमड़ पड़े और देखते ही देखते अफरा-तफरी मच गई। उसके बाद मची भगदड़ में छह लोगों की जान जाने की खबर आई। तीर्थयात्रियों की सुरक्षा के लिए कारगर तैयारी की गई होती, तो इस हादसे से बचा जा सकता था। सवाल है कि इस हद तक बरती गई लापरवाही की वजह से जो हुआ, उसके लिए किसे जिम्मेदार ठहराया जाएगा!

यह विचित्र है कि धार्मिक स्थलों पर होने वाले आयोजनों में भगदड़ मचने की स्थिति में उसमें फंसे श्रद्धालुओं को शीघ्रता से बाहर निकालने के लिए वैकल्पिक मार्ग का प्रबंध नहीं किया जाता। जबकि विशिष्ट अतिथियों को किसी भी प्रतिकूल स्थिति से बचाने के लिए उनके आने और जाने का अलग इंतजाम होता है। पिछले कुछ समय से इस तरह के आयोजनों में भीड़ के बेकाबू हो जाने की घटनाएं आए दिन सामने आ रही हैं। कई राज्यों में हुए ऐसे कई हादसों में अब तक सैकड़ों लोगों की मौत हो चुकी है। मगर ऐसी घटनाओं को रोकने को लेकर न तो कभी गंभीरता से विचार होता है, न कभी कोई ऐसी कार्रवाई होती है, जो आगे के आयोजनों के लिए सबक सिद्ध हो। ज्यादातर जांच रपटों में इसकी वजह भीड़ बताई जाती है, जबकि कुप्रबंधन का तथ्य आमतौर पर छिपा लिया जाता है। शायद ही कभी ऐसी भगदड़ और उसमें लोगों की मौत के लिए आयोजकों की जवाबदेही तय की जाती है और प्रशासनिक लापरवाही को जिम्मेदार ठहराया जाता है। नतीजतन, ऐसे हादसे लगातार सामने आ रहे हैं।

मध्यम आय के घेरे में उलझा विश्व

एक अनुमान है कि अमेरिकी प्रतिव्यक्ति आय के एक-चौथाई तक पहुंचने में चीन को दस और इंडोनेशिया को सत्तर वर्ष लगेंगे। भारत को वहां तक पहुंचने में लगभग पचहत्तर साल लग जाएंगे।

सत्येंद्र किशोर मिश्र

विश्व बैंक द्वारा जारी विश्व विकास रपट 2024 वैश्विक आर्थिक परिदृश्य में मध्यम-आय जाल की चिंता तथा इससे निकलने के उपाय सुझाता है। आर्थिक विकास के महत्त्वाकांक्षी लक्ष्य के बावजूद पिछले सैंतीस वर्षों के बाद मात्र चौंतीस देशों को मध्यम-आय जाल से बाहर निकलने में कामयाबी मिल सकी है। आज दुनिया भर की लगभग छह अरब आबादी वाले 108 देश मध्यम-आय जाल की जकड़ में हैं, जहां आर्थिक विकास दर अपेक्षाकृत कमजोर है। वहां मंदी बार-बार पलटती रही है। बढ़ती वैश्विक भू-राजनीतिक और पर्यावरणीय चुनौतियों के कारण तीव्र आर्थिक विकास में दिक्कतें हैं। इसलिए मध्यम-आय देशों को विशेष प्रयास करने होंगे। विकसित भारत की संकल्पना के सम्मुख भी मध्यम-आय जाल चुनौती है, जिससे भारत को बचना होगा।

विश्व बैंक, वर्ष 1987 से वैश्विक अर्थव्यवस्थाओं के चार वर्गों उच्च-आय, उच्च-मध्यम आय, निम्न-मध्यम आय तथा निम्न-आय में विभाजन करता रहा है। सैंतीस वर्षों बाद, उच्च-आय वाले देशों की संख्या 41 से बढ़ कर 86 हो गई, जिनकी वैश्विक आबादी तथा जीडीपी में हिस्सेदारी क्रमशः 16 और 60 फीसद है। निम्न-आय वाले देशों की संख्या 49 से घट कर 26 रह जाने के बाद वैश्विक आबादी तथा जीडीपी में उनकी हिस्सेदारी क्रमशः नौ फीसद और 0.6 फीसद रह गई। दुनिया की लगभग तीन चौथाई आबादी तथा जीडीपी में 38 फीसद हिस्सा रखने वाले मध्यम-आय देशों की संख्या 74 से बढ़ कर 108 हो गई। मध्य-आय देशों में 1970 के दशक से निरंतर प्रति व्यक्ति आय अमेरिका के दसवें हिस्से से भी कम रही है। किसी देश की प्रति व्यक्ति आय अमेरिका की प्रति व्यक्ति आय के 11 फीसद तक पहुंचने के बाद व्यवस्थागत विक्कतों के कारण मध्यम-आय जाल में फंस जाती है।

निम्न-आय देश निवेश को निर्देशित कर तीव्र विकास दर हासिल करते हैं। मध्यम-आय अर्थव्यवस्था वाले देशों में बढ़ते ऋणभार, बढ़ता संरक्षणवाद, भू-राजनीतिक तनाव, विदेशी व्यापार तथा निवेश में गिरावट जैसे कारण सुस्त आय वृद्धि दर के साथ-साथ आर्थिक दुश्वारियां बढ़ा रहे हैं। निजी निवेश के साथ-साथ सार्वजनिक निवेश भी घटे हैं, लोकलुभावन वादों वाली सरकारों के सामने आर्थिक गुंजाइशें भी कम हैं। मगर मध्यम-आय देश आज भी निवेश बढ़ाने की पुरानी तथा परंपरागत रणनीतियों पर ही भरोसा बनाए हुए हैं। पूंजी निवेश की विकास रणनीति निम्न-आय देशों की अपेक्षा मध्यम-आय देशों में कम ही कामयाब है।

मध्यम-आय देशों में उच्च-आय अर्थव्यवस्था बनने की महत्त्वाकांक्षा स्वाभाविक है। मध्यम-आय जाल से बचने के लिए विश्व विकास रपट तीन कारकों की पहचान करती है- निवेश, आधुनिक तकनीक का प्रसार तथा नवाचार। निम्न-आय अर्थव्यवस्थाएं निवेश प्रेरित नीतियों पर ध्यान केंद्रित करती हैं। मध्यम-आय अर्थव्यवस्थाओं को उच्च आय स्तर प्राप्त कर उसे बरकरार रखने एवं आर्थिक संरचनाएं विकसित करने के लिए विकास क्रम के आधार पर उत्तरोत्तर दो भिन्नित नीति संक्रमणों से गुजरना होगा।

भारत जैसे मध्यम-आय देशों को संरचनात्मक दक्षता के सतही तथा परंपरागत उपायों जैसे उद्यम आकार, आय असमानता तथा ऊर्जा स्रोतों की अपेक्षा पूंजी, श्रम तथा ऊर्जा के बेहतर उपयोग के साथ दक्षता पर भरोसा करना होगा। इनको मूल्य संवर्द्धन, सामाजिक आर्थिक गतिशीलता और कम कार्बन उत्सर्जन तकनीक पर ध्यान देने की आवश्यकता होगी।

> **भारत जैसे मध्यम-आय देशों को संरचनात्मक दक्षता के सतही तथा परंपरागत उपायों जैसे उद्यम आकार, आय असमानता और ऊर्जा स्रोतों की अपेक्षा पूंजी, श्रम तथा ऊर्जा के बेहतर उपयोग के साथ दक्षता पर भरोसा करना होगा। इनको मूल्य संवर्द्धन, सामाजिक आर्थिक गतिशीलता और कम कार्बन उत्सर्जन तकनीक पर ध्यान देने की आवश्यकता होगी, यही नीतिगत रूप में अधिक भरोसेमंद तथा व्यावहारिक होंगे। मध्यम-आय देशों में बड़े निगम, सार्वजनिक उद्यम और प्रभावी उद्यमिता उपयोगी हो सकते हैं। पूंजी के कुशल उपयोग के लिए लघु तथा मध्यम उद्यमों के सम्मुख बाधाएं पैदा करने तथा बड़े उद्यमों को परेशान करने से बचना होगा।**

मध्यम-आय देशों में बड़े निगम, सार्वजनिक उद्यम और प्रभावी उद्यमिता उपयोगी हो सकते हैं। पूंजी के कुशल उपयोग के लिए लघु तथा मध्यम उद्यमों के सम्मुख बाधाएं पैदा करने तथा बड़े उद्यमों को परेशान करने से बचना होगा। उद्यम प्रबंधन को आधुनिक तथा बाजार से जोड़ते हुए अलाभकर उद्यमों से निजात पाना भी जरूरी है।

मध्यम-आय जाल से बाहर आने में पूर्व तथा नवस्थापित दोनों ही उद्यम मददगार हो सकते हैं। पूर्व स्थापित उद्यम पैमाना लाते हैं, जो किसी देश की तकनीकी क्षमताओं का वैश्विक प्रसार एवं विस्तार करते हैं। नवाचार के जरिए पुरानी व्यवस्थाओं, उद्यमों, नौकरियों, प्रौद्योगिकी, निजी अनुबंधों, नीतियों और सार्वजनिक संस्थानों का प्रतिस्थापन जरूरी है। आमतौर पर सार्वजनिक उद्यम यथास्थिति बनाए रखने, कम कार्बन उत्सर्जन प्रतिस्पर्धा से बचने का प्रयास करते हैं। अनेक अर्थव्यवस्थाएं कम कार्बन प्रौद्योगिकी उत्पादों को प्रोत्साहित कर रही हैं। संस्थागत तौर पर प्रतिस्पर्धा को बढ़ावा देकर, मध्यम-आय देश लोगों का समर्थन सुनिश्चित कर बाजार शक्तियों के दुरुपयोग को रोक सकते हैं। विदेशी व्यापार, निवेश और प्रतिभा सम्मान तकनीक उन्नयन में मदद करता है।

मध्यम-आय अर्थव्यवस्थाओं को विकास और ऊर्जा सुरक्षा की चुनौतियों का सामना करना होता है। मध्यम-आय देश-निवेश के साथ-साथ नवाचार को बढ़ा कर जलवायु और ऊर्जा संकट का लाभ उठाने के लिए 'डीकार्बोनाइजेशन' तकनीक का समर्थन कर सकते हैं। कार्बन उत्सर्जन को घटाने के लिए मध्यम-आय देश प्रभावी कीमत-तंत्र के जरिए उत्तरोत्तर कम कार्बन ऊर्जा को बढ़ावा दे सकते हैं। सस्ती तथा विश्वसनीय ऊर्जा तेज आर्थिक विकास की बुनियाद है, पर ऊर्जा दक्षता और कम कार्बन उत्सर्जन पर अधिक ध्यान देने की जरूरत है।

एक अनुमान है कि अमेरिकी प्रतिव्यक्ति आय के एक-चौथाई तक पहुंचने में चीन को दस वर्ष तथा इंडोनेशिया को सत्तर वर्ष लगेंगे। भारत को वहां तक पहुंचने में लगभग पचहत्तर वर्ष लग जाएंगे। फिर भी, विश्व विकास रपट विकसित भारत की संकल्पना को साकार करने की कोशिशों में भारत को सतर्क करती है। भारत को अभी उच्च-आय अर्थव्यवस्था बनने की लंबी यात्रा तय करनी है। यहां आर्थिक विकास की जबरदस्त संभावनाएं हैं। भारत जनांकिकी लाभांश की स्थिति में है, ऊर्जा दक्षता और कम कार्बन उत्सर्जन के लक्ष्य निर्धारित हैं, कृत्रिम मेधा के क्षेत्र में भारत में महत्त्वपूर्ण प्रगति हुई है, हरित तकनीक प्रक्षमताकता बनी है, डिजिटल सार्वजनिक अधोसंरचना निर्माण तेज है। नीतिगत स्पष्टता बढ़ी है, शिक्षा एवं कौशल विकास, डिजिटल इंडिया तथा मेक इन इंडिया पर जोर है। अत्याधुनिक प्रौद्योगिकी के उपयोग के साथ-साथ नवाचार भी बढ़ा है। साथ ही चुनौतियां भी नए कलेवर में सामने हैं। भारत में सामाजिक-राजनीतिक संस्थान एवं व्यवस्थाएं बदलाव पर हठधर्मिता छोड़ने को तत्पर नहीं हैं। गरीबी, बेरोजगारी तथा सामाजिक-आर्थिक असमानता का सिलसिला बरकरार है। राजनीतिक संस्थाओं को लोकलुभावन उपायों के जरिए सत्ता हथियाने से गुरेज नहीं है।

भारत को निम्न मध्यम-आय से उच्च मध्यम-आय तक का लंबा सफर तय करने के लिए विकास केंद्रित नजरिया रखना होगा। भारत को विश्व विकास रपट से परेशान होने की कतई जरूरत नहीं है। अभी तो भारतीय अर्थव्यवस्था ने रफ्तार पकड़ी है। परिस्थितियां अनुकूल हुई हैं। सामाजिक-आर्थिक बदलाव की संभावनाएं स्पष्ट हैं। भारत को मध्यम-आय जाल से घबराने के बजाय मजबूत संकल्पों तथा तय लक्ष्यों के साथ विकसित भारत की ओर रफ्तार बढ़ाना है।

भाग्य बनाम अवसर

मनीष कुमार चौधरी

अगर भविष्यवाणी करने का कोई ऐसा तरीका है जो कभी विफल नहीं होता, तो वह है किस्मत। शायद इसीलिए लोग खुद से कहते हैं कि भाग्य वास्तव में केवल कड़ी मेहनत है। हम काम के बारे में कुछ कर सकते हैं– यानी, इसे करें। लेकिन काम और परिश्रम कभी भी भाग्य के अभिभावक नहीं हो सकते, क्योंकि भाग्य की कोई मां नहीं होती, कोई पिता नहीं होता, कोई मिसाल या संदर्भ नहीं होता। भाग्य एक स्वतःस्फूर्त उत्परिवर्तन है, जो असंभव का संकेत देता है, बेतरतीब ढंग से प्रकट होता है, मनमर्जी के अनुसार घूमता रहता है। हम उतने ही भाग्यशाली हैं, जितना हम खुद को समझते हैं। इसका एक मतलब यह है कि हम जितने अधिक आशावादी होंगे, उतना ही हम दुसरों को भाग्यशाली मानेंगे। अच्छी किस्मत तब होती है, जब चीजें हमारे लिए सही होती हैं। भले ही किसी घटना के परिणाम को पहले से न देख पाने या नियंत्रित न कर पाने की वजह से हमें इसकी उम्मीद करने का कोई कारण न नजर आता हो। अगर हम हर उस चीज का पूर्वानुमान लगा सकते हैं, जो होने वाली है, तो किस्मत के लिए कोई जगह नहीं होती। यह समझना कि जीवन का अधिकांश हिस्सा हमारे नियंत्रण से बाहर है, हमें अहंकार से मुक्त करता है।

किस्मत कोई ताकत, कारक या माध्यम नहीं है, बल्कि यह जीवन के एक तथ्य का प्रतिबिंब है, क्योंकि ऐसी कई चीजें हैं, जिनका हम अनुमान नहीं लगा सकते। किसी दिन हमारे बहुत से कार्य अंधेरे में तीर चलाने के समान होते हैं। किस्मत को देखना, मानना या समझना इस बात पर निर्भर करता है कि किस्मत के प्रति हमारा दृष्टिकोण कैसा है? हम सड़क पर मिलने वाले सौ रुपए में ज्यादा आनंद लेते हैं, न कि उन सौ रुपए में जो हम मजदूरी के रूप में कमाते हैं। ऐसा क्यों है? जब किस्मत हमारे साथ होती है तो ऐसा लगता है जैसे दुनिया हम पर मेहरबान है। किस्मत को समझने का एक बेहतर तरीका है इसे दार्शनिक अंदाज में लेना। जिसे बुरी किस्मत कहा जाता है, उसे सहजता से लेना चाहिए। खुद को दूसरे मैदान और दूसरे दिन अच्छी लड़ाई के लिए तैयार करना चाहिए। यह याद रखने की जरूरत है कि किस्मत है तो बदलती ही रहती है। पुरानी कहावत है कि 'किस्मत के बारे में एक बात पक्की है कि यह बदलेगी।' यह उस जटिल और असहयोगी दुनिया की अपरिहार्य विशेषता है जिसमें हम काम करते हैं। हमें अपने निर्णयों और अपेक्षाओं में यथार्थवादी होना चाहिए, लेकिन इतना जोखिम लेने से भी नहीं बचना चाहिए कि हम अवसरों को खो दें। हमेशा आशावादी बने रहना याद रखना चाहिए। भाग्य वह है जो हमारे पास सौ फीसद देने के बाद बचा है। भाग्य और समय द्वारा निभाई गई भूमिकाओं को स्वीकार करना हमें सभी स्थितियों में अपना सर्वश्रेष्ठ देने से नहीं रोकता है, बल्कि हमें ऐसा करने के लिए स्वतंत्र करता है, परिणाम के बावजूद।

अल्बर्ट आइंस्टीन ने एक बार कहा था, 'भगवान ब्रह्मांड के साथ पासा नहीं खेलते हैं।' फिर भी किस्मत बनी रहती है। ऐसा इसलिए है कि हम सब कुछ नहीं जान सकते। भले ही हमारे लिए किसी आकस्मिक घटना के होने का पूर्वानुमान लगाना संभव हो, लेकिन हमने ऐसा नहीं किया, इसलिए हम अभी भी भाग्यशाली हैं। भाग्य को हम जिस रूप में मानते हैं, उसकी एक अजीब आदत है कि वह उन लोगों का साथ देता है जो उस पर निर्भर नहीं होते और जब हम उस पर निर्भर होते हैं तो वह काफूर हो जाता है। किसी भी तरह से, चाहे वह समझ की कमी से हो या जानकारी की कमी से, अज्ञानता भाग्य का मुख्य आधार बनती है। हम कभी भी अपने भाग्य को नियंत्रित नहीं कर सकते, लेकिन कुछ तरीके हैं, जिनसे हम इसे प्रभावित कर सकते हैं। सबसे पहले सौभाग्य को आमंत्रित करके। उन अवसरों का लाभ उठाकर भाग्य को मौका देना चाहिए, जो हमें ऐसी स्थिति में डालते हैं जहां अनुकूल विकास हो सकता है। हम ऐसी चौड़ सड़ें जीत सकते, जिसमें हम भाग नहीं लेते, न ही ऐसी लाटरी जीत सकते हैं, जिसके लिए टिकट नहीं खरीदते। दूसरा है, बाधाओं का सामना करना। सावधानी बरतते हुए भी कुशल प्रयास पर समझदारी भरे भरोसे को नहीं छोड़ना चाहिए और अपनी किस्मत पर भरोसा नहीं करना चाहिए। भाग्य तब होता है जब कौशल और अवसर एक साथ आते हैं। कई चीजें जो पहली नजर में भाग्य की तरह लगती हैं, वास्तव में एक प्रणाली का हिस्सा होती हैं। तीसरा, अनावश्यक जोखिम से बचने की जरूरत है। अपनी किस्मत को आजमाना नहीं चाहिए। अपने ज्ञान का विस्तार करना चाहिए।

दुनिया मेरे आगे

> **भाग्य को हम जिस रूप में मानते हैं, उसकी एक अजीब आदत है कि वह उन लोगों का साथ देता है जो उस पर निर्भर नहीं होते और जब हम उस पर निर्भर होते हैं तो वह काफूर हो जाता है। किसी भी तरह से, चाहे वह समझ की कमी से हो या जानकारी की कमी से, अज्ञानता भाग्य का मुख्य आधार बनती है।**

अज्ञानता के कारण अप्रत्याशित को संभालने का सबसे अच्छा तरीका तर्कसंगत निर्णय लेने के लिए आवश्यक जानकारी हासिल या विकसित करना है। हम अपने जीवन से भाग्य को हटा नहीं सकते। यह खुलेपन और अनिश्चितता का वह तत्त्व है जो मनुष्य होने को उसका स्वाद देता है और हमें रहस्यपूर्ण रुचि प्रदान करता है। अगर भाग्य नहीं होता तो जीवन नीरस, अरुचिकर और असहनीय होता। भाग्य को हटाना उस चीज को हटाना है जो मनुष्य को मानव बनाती है। भाग्य अच्छा नहीं है तो बुरा हमेशा हमारे साथ रहेगा। मगर यह बुद्धिमानों का पक्ष लेने और बेवकूफों को पीठ दिखाने का एक तरीका है। हम कभी यह नहीं जान सकते कि हमारी बुरी किस्मत ने हमें किस बुरी किस्मत से बचाया है!

बाजार में सुंदरता

वर्तमान दौर में महिलाओं और युवावर्ग में प्लास्टिक सर्जरी का चलन बढ़ा है। विकासशील देशों के युवा अपनी सुंदरता बढ़ाने के लिए खूब प्लास्टिक सर्जरी करा रहे हैं। चीन में 'ब्यूटी सर्विस' देने वाले एंप के अनुसार कास्मेटिक सर्जरी कराने वाले 67 फीसद लोग 28 वर्ष से कम उम्र के हैं। वहीं अमेरिका में 27 फीसद लोग 34 वर्ष से कम उम्र के हैं। युवाओं में वीडियो काल पर बेहतर दिखने के लिए सर्जरी का जुनून छाया हुआ है। दूसरी ओर सौंदर्य प्रसाधनों का बड़ा बाजार बन गया है। 'इंटरनेशनल सोसायटी आफ एस्थेटिक प्लास्टिक सर्जरी' के अनुसार 2019 में डाई करोड़ प्लास्टिक सर्जरी हुई थी। वर्ष 2023 में यह बढ़ कर 3.5 करोड़ हो गई। अभी यह उद्योग सात लाख करोड़ रुपए का है। अगले पांच वर्ष में इसके दोगुना होने का अनुमान है। अमेरिका में 2021 में हुए एक सर्वे में प्लास्टिक सर्जरी करने वाले 80 फीसद चिकित्सकों ने बताया कि उनके पास आए अधिकतर लोग वीडियो काल पर बेहतर दिखने के लिए सर्जरी करवाते हैं। कुछ भी हो, सुंदरता की होड़ में ऐसी सर्जरी के दुरगामी परिणाम होते हैं। अच्छा खान-पान, योगाभ्यास और अन्य उपाय से भी सुंदरता बढ़ सकती है।

– योगेश जोशी, कंवर कालोनी, बड़वाह

पुराने की स्मृति

पुराने दौर की श्वेत-श्याम फिल्में आज भी याद आती हैं। उनमें काम करने वाले अभिनय में जान डाल देते थे। मधुर संगीत, सुंदर और गीत के बोल आज भी पसंद किए जाते हैं। कई पुरानी हिट फिल्मों को रंगीन भी किया गया। धीरे-धीरे विदेशों से 'स्पेशल इफेक्ट' और 'थ्री डी' आदि का प्रयोग कर दर्शकों को खींचने की कोशिश की गई। इन प्रयोगों से कुछ ही फिल्में जिनकी लागत करोड़ों में थी, हिट हो पाईं। महज गानों और फिल्मांकन से सफलता की अपेक्षा की गई।

जबकि पुराने जमाने में कहानी ही फिल्म का मुख्य आधार रहती थी। दर्शक मंत्रमुग्ध हो जाते थे। उस समय फिल्में मनोरंजन का एकमात्र साधन थीं। अब अंतरराष्ट्रीय फिल्मोत्सव में चयनित फिल्मों का दूरदर्शन पर प्रसारण किया जाना चाहिए, ताकि दर्शक राष्ट्र की संस्कृति एवं ज्ञानार्जन में उपयोगी पटकथा और नवीन विचारधाराओं से परिचित हो सकें। ये फिल्में मन को प्रभावित करने वाली होती हैं। इनमें मानवीय संवेदना उभर कर सामने आती है।

– संजय वर्मा 'दृष्टि', धार

कारोबार की कड़ियां

भारत में पारंपरिक किराना दुकानें समाज की रीढ़ मानी जाती रही हैं। ये दुकानें न केवल रोजमर्रा की आवश्यकताओं की पूर्ति करती थीं, बल्कि स्थानीय समुदायों को जोड़ने वाली एक महत्त्वपूर्ण कड़ी भी थीं। लेकिन डिजिटल युग की तेजी, ई-कामर्स मंचों की बढ़ती लोकप्रियता और बड़ी खुदरा श्रृंखला के उभार ने पारंपरिक दुकानों के अस्तित्व को खतरे में डाल दिया है। फ्लिपकार्ट, अमेजन, बिग-बास्केट जैसे मंच उपभोक्ताओं को उनकी सुविधा के अनुसार उत्पाद उपलब्ध करा रहे हैं। शहरी क्षेत्रों में यह बदलाव अधिक स्पष्ट है, परंतु इसकी छाया अब ग्रामीण इलाकों में भी पड़ने लगी है। इस क्षेत्र में प्रतिस्पर्धा, महंगाई, थोक कीमतों में बढ़ोतरी और डिजिटल तकनीक की कमी छोटे दुकानदारों के लिए मुख्य चुनौतियां हैं। पारंपरिक दुकानों का अस्तित्व केवल आर्थिक नहीं, बल्कि सामाजिक महत्त्व भी रखता है। उचित कदम उठाकर यह चुनौती अवसर में बदली जा सकती है।

– आरके जैन 'अरिजीत', बड़वानी

प्रौद्योगिकी के पांव

प्रौद्योगिकी पर अत्यधिक निर्भरता ने मनुष्य को आलसी बना दिया है। इसने निष्क्रिय जीवनशैली को बढ़ावा दिया है, जिससे मोटापा, तनाव, चिंता और अवसाद जैसी स्वास्थ्य समस्याएं बढ़ रही हैं। स्वचालन और कृत्रिम बुद्धिमत्ता ने कई क्षेत्रों में मानव श्रम को प्रतिस्थापित कर दिया है, जिससे बेरोजगारी बढ़ी है। वहीं कुशल एवं अकुशल श्रमिकों के बीच की खाई चौड़ी हो गई है। इसलिए प्रौद्योगिकी का दुरुपयोग सही नहीं। यह नैतिक और सामाजिक चिंताओं को जन्म देता है। प्रौद्योगिकी एक शक्तिशाली उपकरण है जो मानवता की सेवा कर सकता है, लेकिन इसका प्रभाव इस पर निर्भर करता है कि इसका उपयोग कैसे किया जा रहा है। यह वरदान है जब इसका उपयोग जिम्मेदारी और नैतिकता के साथ किया जाता है, लेकिन इसका गलत उपयोग किया जाए, तो यह अभिशाप बन सकता है।

– समराज चौहान, कार्बी आंगलांग, असम

www.readwhere.com

दिल्ली में चुनाव
त्रिकोणीय संघर्ष

दिल्ली में 5 फरवरी को चुनाव घोषणा के बाद कटि का त्रिकोणीय निश्चित हो गया है। निर्वाचन आयुक्त द्वारा आधिकारिक रूप से दिल्ली के आगामी विधानसभा चुनाव का कार्यक्रम घोषित करने के बाद अब कटि के त्रिकोणीय संघर्ष का मार्ग खुल गया है। दिल्ली की 70 विधानसभा सीटों के लिए मतदान 5 फरवरी को होगा और नतीजे 8 फरवरी को सामने आएंगे। यह चुनाव आम आदमी पार्टी-आप, भारतीय जनता पार्टी-भाजपा तथा कांग्रेस के बीच कड़े मुकाबले का होगा। ये तीनों अपनी रणनीतियां, विभर्श तथा मुद्दे सामने ला रहे हैं। अरविंद केजरीवाल के नेतृत्व में 'आप' दिल्ली में लगातार तीसरा कार्यकाल पाने का प्रयास कर रही है। पिछले दो चुनावों में असाधारण सफलता प्राप्त करने के बाद पार्टी 'हैट्रिक' के लिए अभियान चला रही है। 2012 में गठन के बाद केजरीवाल की पार्टी ने दिल्ली का राजनीतिक परिदृश्य बदल दिया है और अब वह अपने प्रशासनिक रिकार्ड तथा 'काम की राजनीति' पर दांव लगा रही है। 'आप' का ध्यान कल्याणकारी कामों पर केन्द्रित है जिसमें मुफ्त बिजली, पानी और स्वास्थ्यरक्षा शामिल है। इसके साथ ही पार्टी अपने कार्यकाल को विकास और पारदर्शिता से जोड़ रही है। 'फिर आएगी केजरीवाल' नारे के साथ 'आप' ने अपना अभियान शुरू किया है जो भविष्य के लिए सकारात्मक दृष्टिकोण पर आधारित है। वह अपनी उपलब्धियों को भाजपा की कथित 'विभाजनकारी राजनीति' के खिलाफखड़ा कर रही है। लेकिन 'आप' की विजय आसान नहीं है। पिछले दो चुनावों में अपने प्रभुत्व के बावजूद पार्टी अब चुनौतियों का सामना कर रही है। 'आप' पर भ्रष्टाचार के अनेक आरोप हैं और भाजपा प्रभावी रूप से इसका लाभ उठा कर उस पर हमले कर रही है। भाजपा ने 'फिर आएगी केजरीवाल' का मजाक उड़ाते हुए कहा है कि तिहाड़ के बाहर लगे पोस्टर से संकेत मिलता है कि वे फिर जेल जाएंगे। दिल्ली विधानसभा चुनाव में 'इंडिया' गठबंधन में बिखराव से भी भाजपा अपने लिए लाभ की उम्मीद कर रही है। भाजपा के लिए यह चुनाव 'करो या मरो' जैसा मुकाबला है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में पार्टी ने एक आक्रामक अभियान छेड़ा है जिसका उद्देश्य केजरीवाल और 'आप' को सत्ता से हटाना है। भाजपा की मुख्य थीम सत्ता-विरोधी लहर पर केन्द्रित है। उसने 'आप' पर भ्रष्टाचार में लिप्त रहने तथा राजधानी की विकास आवश्यकताओं को अनदेखा करने का आरोप लगाया है। प्रधानमंत्री मोदी भाजपा के आक्रमण को धार दे रहे हैं। उन्होंने 'आप' सरकार को 'आप-दा' कहते हुए दिल्ली के विकास के प्रति उसके दृष्टिकोण की विफलता की आलोचना की है। मोदी ने भाजपा को राष्ट्रीय प्रगति की पार्टी के रूप में पेश करते हुए केजरीवाल के नेतृत्व को दिल्ली के भविष्य में बाधा बताया है। भाजपा की द्वि-आयामी रणनीति का लक्ष्य 'आप' के प्रशासन को बदनाम करना तथा मतदाताओं में परिवर्तन की इच्छा जगाना है। एक समय दिल्ली में प्रभुत्वशाली शक्ति रही कांग्रेस अब तीसरे स्थान पर है। 2013 में राजधानी में सत्ता गंवाने के बाद पार्टी अपना राजनीतिक आधार मजबूत करने का प्रयास कर रही है जिस पर 'आप' और भाजपा ने काफी हद तक कब्जा कर लिया है। लेकिन इस बार चुनाव में पार्टी का असर दिखाई दे रहा है। गहरे ध्रुवीकरण, बहुत कुछ दांव पर लगे होने तथा सभी पक्षों की ओर से आक्रामक रणनीतियों को देखते हुए 2025 दिल्ली विधानसभा चुनाव राजनीतिक गरमी से भरे हैं, यहां कठिन संघर्ष और कटि की लड़ाई है। मतदाताओं को 'आप' की प्रशासनिक विरासत, भाजपा के परिवर्तनकारी दृष्टिकोण तथा कांग्रेस के स्थापित्व की संभावनाओं के बीच चुनाव करना होगा। इससे यह चुनाव पहले के किसी चुनाव की तुलना में अत्यधिक कठोर संघर्ष वाला चुनाव होगा।

एच-1 बी वीजा पर ट्रंप की दुविधा

निर्वाचित राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप अपने दूसरे कार्यकाल की तैयारी कर रहे हैं। ऐसे में कुशल विदेशी कामगारों के लिए एच-1 बी वीजा पर बहस तेज हो गई है।

कल्याणी शंकर
(लेखिका, वरिष्ठ पत्रकार हैं)

ट्रंप और मस्क के साथ आने से अब अनेक एच-1बी वीसा प्रार्थियों की उम्मीदें बढ़ गई हैं। मस्क ने दावा किया था कि उनको ज्यादा कुशल और बुद्धिमान कामगारों की जरूरत है। उन्होंने अभूतपूर्व रोजगार अवसरों का भी वादा किया है। यह एच-1बी वीजा प्रार्थियों के लिए सकारात्मक दृष्टिकोण प्रदर्शित करता है। भारत सरकार को अमेरिका में भारतीय एच-1बी वीजा धारकों में पैदा किसी नकारात्मक भावना पर गौर करना चाहिए।

निर्वाचित अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप 20 जनवरी को पद पर आने की तैयारी कर रहे हैं, लेकिन उनके समक्ष एक खास चुनौती है। आप्रवास और एच-1बी वीजा का मुद्दा दो प्रमुख समूहों के बीच विवाद का विषय बन गया है। ये खरबपति टेक समुदाय के टकराव वाले हितों को संतुष्ट करने का प्रयास कर रहे हैं जिसने उनके प्रचार अभियान तथा उनके 'अमेरिका प्रथम' नारे में काफी पैसा लगाया है। ट्रंप ने हाल ही में विदेशी कुशल कामगारों के लिए एच-1बी वीजा पर सकारात्मक बयान दिया था जिससे इस महत्वपूर्ण कार्यक्रम के भविष्य पर चर्चा को और हवा मिल गई है। 'द न्यूयार्क पोस्ट' ने ट्रंप का यह कथन प्रकाशित किया कि 'मैं हमेशा वीसा पसंद करता रहा हूं। मैं हमेशी वीसा के पक्ष में रहा हूं। इसी कारण वे हमारे यहां हैं। मेरी संपत्तियों पर अनेक एच-1बी वीजा हैं। मैं एच-1बी वीजा में विश्वास करने वाला रहा हूं। मैंने अनेक बार उनका प्रयोग किया है। यह बहुत अच्छा कार्यक्रम है।'

ट्रंप ने यह भी स्वीकार किया कि उन्होंने इलोन मस्क तथा सिलिकान वैली के अन्य अमीर दानदाताओं का समर्थन किया। दक्षिण अफ्रीका में जन्मे मस्क स्वयं एच-1बी वीजा पर आए थे। जहां तकनीकी क्षेत्र के उद्योगपति उदार एच-1बी वीजा व्यवस्था के पक्ष में हैं, वहीं 'अमेरिका प्रथम' का समर्थन करने वाले कट्टरपंथी सभी स्तरों पर आप्रवास पर कठोर नियंत्रण लगाना चाहते हैं। अपने पहले कार्यकाल में ट्रंप ने अमेरिकन नागरिकों के हितों की सुरक्षा देने में प्राथमिकता करती जिसके एच-1बी वीजा प्राथियों पर काफी प्रभाव पड़े। 'अमेरिका प्रथम' के पैरोकारों का तर्क है कि एच-1बी वीजा से अमेरिकन कामगारों का रोजगार छिन जाता है। ऐसे में बड़ा सवाल यह है कि क्या ट्रंप अपने इसरे कार्यकाल में अमेरिकन कामगारों के रोजगार को प्राथमिकता देंगे या वे परंपरागत रिपब्लिकन विश्वास पर लौट जाएंगे कि आप्रवासी मुख्यत: सेवायोजकों को लाभ पहुंचाते हैं। ट्रंप द्वारा भारतीय मूल के श्रीराम कृष्णन को कृत्रिम बुद्धि-एआई पर अपना सलाहकार नियुक्त करने के बाद एच-1बी वीजा पर बहस और तीखी हो गई है। इससे ट्रंप टीम के समर्थकों में विभाजन पैदा हो गया है।

इलोन मस्क तथा विवेक रामास्वामी जैसे ट्रंप के प्रभावशाली समर्थकों का तर्क है कि एच-1बी वीजा ने अमेरिका में इंजीनियरों की कमी जैसी महत्वपूर्ण समस्याओं से निपटने में सहायता प्रदान की है। अपने विशाल औद्योगिक साम्राज्य खड़े करने वाले इलोन मस्क तथा विवेक रामास्वामी ने एच-1बी वीजा कार्यक्रम का जोरदार समर्थन किया है। मस्क ने अपनी स्पष्ट प्रतिक्रियाओं से इस मुद्दे पर युद्ध जैसी स्थिति पैदा कर दी है। इलोन मस्क और विवेक रामास्वामी ने अमेरिकी श्रम बाजार में कौशल की भारी कमी की ओर ध्यान आकर्षित किया है। यह कमी खासकर 'स्टेम' क्षेत्रों में दिखाई देती है।

ऐसे में सवाल उठता है कि एच-1बी वीजा क्या है और यह इतने विवाद का विषय क्यों बन गया है? सवाल यह भी है कि यदि एच-1बी वीजा को हटा दिया जाए तो भारत को नुकसान होगा? दूसरे देशों के कुशल कामगारों के लिए वीसा की व्यवस्था 1990 में राष्ट्रपति बुश द्वारा निर्धारित की गई थी ताकि वे वैध रूप से अमेरिका में काम कर सकें। यह वीसा तीन साल के लिए होता है। वीजा प्रार्थियों को अमेरिका की स्पांसर कंपनी या संस्थान से रोजगार प्राप्त करना होता है। 2004 से अमेरिका ने नए एच-1बी वीजा की संख्या सीमित कर प्रति वर्ष 85,000 कर दी है। इस सीमा में अमेरिकन विश्वविद्यालयों से उच्च डिग्रियां प्राप्त करने वाले अंतरराष्ट्रीय छात्रों के लिए 20,000 वीजा रखे गए हैं। वित्त वर्ष 2023 में अमेरिका ने केवल 386,000 एच-1बी वीजा प्रार्थनाओं को मंजूर किया था। वित्त वर्ष 2024 में 758,994 वैध पंजीकरण हुए हैं जो 2023 की तुलना में 474, 421 अधिक हैं। इनमें से अधिकांश स्वीकृत वीसा विज्ञान, तकनीक, इंजीनियरिंग और गणित-स्टेम क्षेत्र के हैं। इस प्रकार एच-1बी वीजा का मुद्दा आर्थिक सरोकारों से आगे जाता है और अब इसमें कृत्रिम बुद्धि-एआई तथा उच्कृष्ट कंप्यूटिंग टेक्नोलोजी जैसे क्षेत्र भी शामिल हो गए हैं। ये सभी क्षेत्र अमेरिकी रक्षा और सुरक्षा क्षेत्र को और मजबूत करने के लिए महत्वपूर्ण हैं। भारत को एच-1बी वीजा में लगभग 72 प्रतिशत मिलते हैं, जबकि चीनी नागरिकों को लगभग 12 प्रतिशत वीजा मिलते हैं। देश-विशिष्ट सीमायें हटाने से अमेरिका में भारतीयों के लिए रोजगार के अवसर बढ़ सकते हैं। यह अनेक भावी प्रार्थियों के लिए महत्वपूर्ण है। टेक उद्योग के बड़े सेवायोजकों में भारतीय कंपनियां, जैसे इन्फोसिस, टीसीएस, एचसीएल और विप्रो शामिल हैं जो एच-1बी वीसा के सर्वोच्च 10 लाभार्थियों में 35 प्रतिशत स्थान पर कब्जा करती हैं। वित्त वर्ष 2025 से यूएससीआईएस ने सेवायोजक-आधारित व्यवस्था के बजाय लाभार्थी-आधारित पंजीकरण व्यवस्था लागू करने की बात कही है। यह वित्त वर्ष 2024 में एजेंसी की 'गंभीर चिन्ताओं' के कारण किया गया है। एच-1बी वीजा के सबसे बड़े स्पांसर अमेजन की स्वीकृतियों में भारी कमी आई है और यह 2023 में 11,000 से घट कर 2024 में 9,000 रह गई। अमेजन और गूगल प्रमुख अमेरिकन कंपनियों में शामिल हैं जो एच-1बी वीजा की स्पांसरशिप से पीछे हट रही हैं। इन्फोसिस और टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज-टीएसीएस जैसी भारतीय कंपनियों ने भी वीजा में काफी कमी की है। लेकिन सभी कंपनियां वीजा व्यवस्था समाप्त नहीं करना चाहती है।

अमेरिकन इंटरप्राइज इंस्टीट्यूट तथा पार्टनरशिप फॉर ए न्यू अमेरिकन इकोनोमी के अनुसार एच-1 बी वीजा सीमा बढ़ाने से 1.3 मिलियन नए रोजगारों का सृजन हो सकता है। इससे 2045 तक अमेरिकन जीडीपी में लगभग 158 बिलियन डालर का योगदान होगा। एच-1 बी वीजा धारक अक्सर अमेरिकन कामगारों की नौकरियां छीनने के बजाय कार्यबल में योगदान करते हैं। एच-1बी वीजा के बारे में ट्रंप के हालिया बयान से अनेक वीजा प्रार्थियों व खासकर भारतीयों में बहुत उम्मीद जगी है। उन्होंने कहा है कि अमेरिका को ज्यादा कुशल और बुद्धिमान लोगों की जरूरत है और उन्होंने ज्यादा रोजगार सृजन का वादा किया है। यह एच-1बी वीजा धारकों के लिए सकारात्मक दृष्टिकोण है क्योंकि अक्सर एच-1बी वीजा धारक अमेरिकन कामगारों से प्रतियोगिता करने के बजाय उनकी सहायता करते हैं। ट्रंप और मस्क के साथ आने से अब अनेक एच-1बी वीसा प्रार्थियों की उम्मीदें बढ़ गई हैं। मस्क ने दावा किया था कि उनको ज्यादा कुशल और बुद्धिमान कामगारों की जरूरत है। उन्होंने अभूतपूर्व रोजगार अवसरों का भी वादा किया है। यह एच-1बी वीजा प्रार्थियों के लिए सकारात्मक दृष्टिकोण प्रदर्शित करता है। भारत सरकार को अमेरिका में भारतीय एच-1बी वीजा धारकों में पैदा किसी नकारात्मक भावना पर गौर करना चाहिए।

जीवन में आत्मावलोकन का महत्व

जिंदगी पटरी से उतरने पर दूसरों पर दोषारोपण आसान पलायन है, पर इससे व्यक्तिगत विकास में बाधा आती है।

ब्रह्म कुमार निकुंज
(लेखक, आध्यात्मिक शिक्षक हैं।)

प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन का निर्माता है, इसलिए आसानी से कहा जा सकता है कि हम सब अपने जीवन को अपनी इच्छानुसार बनाने का प्रयास करते हैं। लेकिन जब कुछ गलत हो जाता है तो हम फौरन किसी दूसरे या किसी चीज को दोषी ठहराने के लिए तलाशने लगते हैं। ऐसे में हम स्थिति बेहतर करने के लिए स्वयं में बदलाव नहीं करते हैं। यह तथ्य है कि हम सभी अपने समय और ऊर्जा का बड़ा हिस्सा अपने जीवन की सभी समस्याओं का दोषारोपण दूसरों पर करने में करते हैं। कुछ गलत करने के दोष से स्वयं को मुक्त करने के लिए हम उसे सही ठहराते हैं क्योंकि आंतरिक रूप से हम अपने व्यवहार की जिम्मेदारी किसी अन्य व्यक्ति, स्थिति या बाहरी तत्व पर डाल देते हैं। यह बात बहुत सामान्य लगती है। यह बहुसंख्य लोगों की आदत हो सकती है, पर दोषारोपण का खेल करते समय हम भूल जाते हैं कि कर्म सिद्धान्त के अनुसार स्वयं को सबसे पहले बदलने वाला ही प्रसन्न रहता है। इसलिए यदि हम शांति और प्रसन्नता चाहते हैं तो हमें स्वयं को बदलना चाहिए और दूसरों से हमारे लिए काम करने की इच्छा नहीं करनी चाहिए। अपनी गलतियां पहचानने और उनको स्वीकार करने के दृष्टिकोण की कमी से परिवर्तन करने में सुस्ती आती है। धीरे-धीरे सुस्ती एक जीवनशैली की आदत बन जाती है। आमतौर से हम अपने कष्टों के लिए दूसरों को दोषी ठहराते हैं। हमें लगता है कि यदि दूसरे लोग ठीक से काम करते तो चीजें बेहतर होतीं। लेकिन हम यह समझने में विफल रहते हैं कि प्रत्येक क्रिया की विपरीत और समान प्रतिक्रिया होती है। इसलिए हम आत्मावलोकन करने के बजाय हमेशा दूसरे लोगों को सही करने के लिए संघर्ष करते रहते हैं। जब हम किसी दूसरे को दोषी नहीं ठहरा पाते हैं तो स्थितियों को दोषी ठहराते हैं। लेकिन ऐसा करने में हम यह तथ्य भूल जाते हैं कि हमारे जीवन की सभी स्थितियां हमारी रचना हैं। इसलिए कर्म सिद्धान्त के अनुसार हम जो कुछ अनुभव करते हैं वह हमारे कार्यों, शब्दों या विचारों का परिणाम होता है। हो सकता है कि यह सब पहले हुआ हो, पर अब हमें इसका परिणाम भुगतना पड़ रहा है। हमें साहस के साथ इसे स्वीकार करना और अपने कर्म के अनुसार फल प्राप्त करना चाहिए जिससे हमारे दिमाग पर बोझ नहीं पड़ेगा।

जब किसी व्यक्ति या किसी चीज पर दोषारोपण काम नहीं करता है तो निराश आत्मा ईश्वर को दोष देने लगती है। उसे लगता है कि चूंकि दुनिया में सब कुछ ईश्वर की इच्छा पर निर्भर करता है, इसलिए उसका कष्ट भी ईश्वर की इच्छा का परिणाम है। यह स्थिति बहुत चिंताजनक है। लेकिन हम सभी रोज ऐसे ही काम करते हैं। याद रखें कि हम सभी कर्म सिद्धान्त से बंधे कार्ता हैं और अपने कार्यों के आधार पर फल प्राप्त करते हैं। ईश्वर कभी इसमें अपना योगदान नहीं करता है। हमारे शिक्षक और निर्देशक की तरह ईश्वर हमें शिक्षा दे सकता है और समझा सकता है, लेकिन वह परीक्षा में हमारा स्थान नहीं ले सकता है। इसलिए हम सबको अपने जीवन की परीक्षा स्वयं देनी होगी और यह काम पूरे विश्वास से करना होगा। आध्यात्मिक रास्ते पर चलने वाले के लिए असहज स्थितियां जीवन की परीक्षाओं की तरह होती हैं जो हमारा आध्यात्मिक स्तर ऊपर उठाने के लिए आवश्यक होती हैं तथा हमारी आत्म-प्रगति में सहायक होती हैं। इसलिए, हमें इस अवसर को गंवाने के बजाय इसका लाभ उठाना चाहिए तथा तार्किक दृष्टिकोण से विचार करना चाहिए। इससे फर्क नहीं पड़ता कि हम परीक्षाओं में पास होते हैं या फेल, पर महत्वपूर्ण चीज हमारा साहस और जीवनत्ता है जिसके माध्यम से हम परीक्षाओं का सामना करते हैं। आध्यात्मिक विकास के लिए दूसरों पर दोषारोपण बड़ी बाधा है क्योंकि इससे अपना आत्मावलोकन करने तथा दूसरों पर गौर करने की आध्यात्मिकता में बाधा आती है। इसलिए अपने अनुभवों का दायित्व स्वयं वहन करना सर्वोपरि महत्वपूर्ण है। इससे हम स्वयं को सही करने का सचेतन प्रयास कर सकते हैं तथा अपने प्रति ईमानदार और जवाबदेह बन सकते हैं। स्वयं को धोखा देने से हम आध्यात्मिक मुक्ति से और दूर होते चले जाएंगे। इसलिए दूसरों पर दोषारोपण बंद कर आत्मावलोकन पर ध्यान देना शुरू करें क्योंकि जब आप दूसरों पर दोषारोपण करते हैं तो अपने परिवर्तन की शक्ति खो देते हैं।

आप की बात

आर्थिक वृद्धि दर में सुस्ती

भारत की आर्थिक हालात को लेकर एनएसओ द्वारा जारी अनुमान के अनुसार, 2025 में भारत की जीडीपी ग्रोथ 6.4 रहने का अनुमान लगाया गया है। यह अनुमान इस बात को दर्शाता है कि भारत की आर्थिक वृद्धि दर में सुस्ती आ रही है। एनएसओ के अनुसार, मैन्युफैक्चरिंग और निवेश में कमी के कारण आर्थिक वृद्धि दर में कमी आ रही है। इसके अलावा, लोगों की क्रय शक्ति भी घटती जा रही है, जिससे आर्थिक वृद्धि दर पर नकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है। गिरते हुए रुपयों के कारण वस्तुएं महंगी हो रही हैं, जिससे लोगों की क्रय शक्ति और भी कम हो रही है। इसके अलावा, वैश्विक आर्थिक मंदी के कारण भारत के निर्यात में कमी आ रही है, जिससे आर्थिक वृद्धि दर पर नकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है। 2025 में भारत की आर्थिक हालात को सुधारने के लिए सरकार को कई कदम उठाने होंगे, जैसे कि करों में कमी करना और निवेश के लिए अनुकूल वातावरण बनाना। मैन्युफैक्चरिंग में वृद्धि करने के लिए कई कदम उठाने होंगे, जैसे कि मैन्युफैक्चरिंग के लिए अनुकूल वातावरण बनाना और मैन्युफैक्चरिंग में निवेश को बढ़ावा देना। लोगों कि क्रय शक्ति में वृद्धि करने के लिए कई कदम उठाने होंगे, जैसे कि मजदूरों के वेतन में वृद्धि करना और गरीबों के लिए कल्याणकारी योजनाएं बनाना। निर्यात में वृद्धि करना और वैश्विक बाजार में भारत की हिस्सेदारी बढ़ाना।

-विभूति चुपक्या, खाचरोद

तीर्थस्थलों पर भीड़ नियंत्रण

तिरुपति में भगदड़ के कारण हुई त्रासदी अत्यंत दुखद और चिंताजनक है। इस घटना ने न केवल प्रशासनिक विफलता को उजागर किया है, बल्कि धार्मिक आयोजनों में सुरक्षा उपायों की कमी पर भी गंभीर सवाल खड़े किए हैं। तिरुपति जैसे प्रमुख तीर्थस्थलों पर प्रतिदिन हजारों श्रद्धालु आते हैं, जिससे भीड़ प्रबंधन की चुनौतियां बढ़ जाती हैं। श्रद्धालुओं की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए प्रशासन को प्रभावी योजना बनानी चाहिए। पर्याप्त पुलिस बल की तैनाती, सीसीटीवी कैमरों की निगरानी, आपातकालीन सेवाओं की तत्परता और सूचना तंत्र को सुदृढ़ करना अनिवार्य है। इस प्रकार की त्रासदियों से बचने के लिए भीड़ प्रबंधन की ठोस रणनीति बनानी होगी। साथ ही, श्रद्धालुओं को भी संयम और धैर्य बनाए रखना चाहिए और प्रशासन द्वारा निर्देशित व्यवस्थाओं का पालन करना चाहिए। सरकार और संबंधित अधिकारियों को इस घटना की गहराई से जांच कर दोषियों पर उचित कार्रवाई करनी चाहिए। पीड़ित परिवारों को हर संभव सहायता प्रदान की जानी चाहिए, ताकि उनकी आस्था और विश्वास सुरक्षित माहौल में फल-फूल सके। इस घटना से सबक लेकर भविष्य में ऐसे आयोजनों के दौरान सुरक्षा मानकों को और कड़ा करना आवश्यक है, ताकि श्रद्धालु अपनी धार्मिक यात्राओं में सुरक्षित महसूस कर सकें।

-प्रो. आरके जैन अरिजीत, बड़वानी

एक देश, एक चुनाव

एक देश, एक चुनाव की अवधारणा पर विपक्ष का लगातार विरोध करना एक जटिल मुद्दा है। एक 1951 से 1967 तक चुनाव एक साथ ही हुए हैं। विपक्षी दलों को लगता है कि एक देश एक चुनाव की प्रणाली से उनके राजनीतिक हित प्रभावित हो सकते हैं। वे सोचते हैं कि इससे सत्तारूढ़ दल को अधिक लाभ होगा और उनकी अपनी राजनीतिक शक्ति कम हो जाएगी। कुछ विपक्षी दलों को लगता है कि एक देश एक चुनाव की प्रणाली से संविधान के कुछ प्रावधानों का उल्लंघन हो सकता है। वे सोचते हैं कि इससे राज्यों की स्वायत्तता और संघीय व्यवस्था को खतरा हो सकता है। एक देश एक चुनाव की प्रणाली को लागू करने के लिए व्यापक प्रशासनिक तैयारी की आवश्यकता होगी। विपक्षी दलों को लगता है कि सरकार इस चुनौती का सामना करने के लिए तैयार नहीं है। क्योंकि इसके लिए और अधिक कर्मचारी और संसाधनों कि आवश्यकता होगी। विपक्षी दलों को लगता है कि जनता एक देश एक चुनाव की प्रणाली के बारे में जागरूक नहीं है। वे सोचते हैं कि जनता को इस मुद्दे पर और जागरूक करने की आवश्यकता है हालांकि, सरकार का तर्क है कि एक देश एक चुनाव की प्रणाली से देश की प्रगति में मदद मिलेगी। एक देश एक चुनाव की प्रणाली से चुनाव आयोजित करने में होने वाले खर्च में कमी आएगी। इससे संसाधनों की बचत होगी और उन्हें अन्य महत्वपूर्ण कार्यों पर खर्च किया जा सकेगा।

-सुभाष बुड़ावन वाला, रतलाम

मुक्ति का अहसास महाकुंभ पर्व

धरा पर महाकुंभ पर्व आपाधापी और कलयुगी त्रास से भरे जीवन को आत्मिक शांति और आध्यात्मिक ऊर्जा भरने का अद्भुत धार्मिक समागम है। आस्था, विश्वास और धर्म भावना से ओत-प्रोत इस पर्व का महत्व भारतीय संस्कृति में अमृत-तुल्य है। 13 जनवरी से प्रयागराज में आयोजित यह पर्व जातीय समरसता, सांस्कृतिक चेतना और वैश्विक कल्याण की भावना को प्रगाढ़ बनाता है। स्नान, दान और सात्संग की त्रिवेणी के माध्यम से यह पर्व पापों के प्रायश्चित और सात्कर्म की प्रेरणा देता है। महाकुंभ वैश्विक उल्लास का भी प्रतीक है तभी तो दुनियां के कोने कोने से लोग सहभागी होकर पुण्य लाभ अर्जित करते हैं। महाकुंभ आयोजन के दौरान श्रद्धालुओं के लिए उत्तर प्रदेश सरकार ने बुनियादी सुविधाओं का जाल सा बिछाया है। लोगों को आयोजन की सफलता के लिए सरकार को पूर्ण सहयोग करना चाहिए। पवित्र धार्मिक नगरी में आयोजित महाकुंभ, भारतीय संस्कृति और आध्यात्मिकता का जीता-जागता उदाहरण है। कुंभ का प्रभाव अब वैश्विक हो गया है और पूरी दुनिया से इस समागम में लोग भाग लेते हैं।

-अमृत मारू रवि

पाठक अपनी प्रतिक्रिया ई-मेल से responsemail.hindipioneer@gmail.com पर भी भेज सकते है।

30 प्रतिशत अमेरिकी छात्र इंटरनेट मीडिया के प्रभाव में आकर गंभीर रूप से अवसाद में पाए गए हैं, नौवीं से 12वीं में पढ़ने वाले, अमेरिका के सेंटर फार डिजीज कंट्रोल एंड प्रिवेंशन के आंकड़ों के अनुसार। भारत के संदर्भ में भी ऐसे आंकड़े चिंताजनक हो सकते हैं।

आजकल

भ्रामक जानकारियों से भरा इंटरनेट मीडिया

डा. संजय वर्मा
एसोसिएट प्रोफेसर, वेनेट यूनिवर्सिटी, ग्रेटर नोएडा

इंटरनेट मीडिया के माध्यम से आजकल सूचना से लेकर सलाह तक की भरमार है। परंतु ये सही हैं या भ्रामक, यह समझ पाना आसान नहीं है। लिहाजा इस तरह की सूचना या सलाह को प्रसारित करने वालों को जवाबदेह बनाते हुए इसे नियंत्रित करने का काम स्वयं इंटरनेट मीडिया कंपनियों और कुछ अर्थों में सरकारों को नियम-कानून अपनाते हुए करना होगा। यह भी ध्यान रखना होगा कि यह महज अभिव्यक्ति की आजादी का मामला नहीं है, क्योंकि इसमें इन्फ्लुएंसरों द्वारा प्रसारित की गई भ्रामक जानकारी आम लोगों, देश और समाज की दशा-दिशा पर नकारात्मक असर डाल सकती है

प्रतीकात्मक

मानव इतिहास का ऐसा कोई कालखंड नहीं है जहां देश और समाज को दिशा दिखाने एवं सही-गलत का अंतर बताने वाले विद्वानों, ऋषि-मुनियों, साधुओं की उपस्थिति नहीं रही हो। राजा हो या प्रजा, हर किसी को उपदेशकों की जरूरत रही है। ये उपदेशक बताते थे कि क्या और कैसे बोला जाए, आहार और दिनचर्या क्या हो, आदर-सम्मान के क्या तौर-तरीके हैं। इन्हें सुन-समझकर मानने वालों ने मन का आपा खोने वाली वाणी बोलने की सलाह देने तो कबीरदास को संत की उपाधि दी। आज के संदर्भों में देखा जाए तो संत कबीर पुराने समय के इन्फ्लुएंसर थे। अगर उस जमाने में इंटरनेट मीडिया का अस्तित्व होता, तो संभव था कि संत कबीर के फालोअर्स की संख्या करोड़ों में होती। इंटरनेट मीडिया इन्फ्लुएंसर्स के संदर्भ में इस भूमिका की जरूरत इसलिए पड़ रही है, क्योंकि हाल में इंटरनेट मीडिया पर कुछ ऐसी चर्चाएं हुई हैं और कुछ ऐसे वीडियो बहुप्रसारित हुए हैं कि इधर जब मनाली से लेकर अयोध्या-काशी में पर्यटकों की फौज उमड़ी पड़ रही थी, तो उसी दौरान अपने मनोरम समुद्र तटों के लिए मशहूर गोवा के बीच खाली पड़े थे। लेकिन जब खबरें गोवा सरकार के कानों तक पहुंचीं, तो इन दावों को फर्जी बताते हुए इन्फ्लुएंसरों पर मानहानि का दावा ठोकने की बातें कही गईं।

नए साल पर जश्न मनाने के लिए पूरी दुनिया का आकर्षण का केंद्र रहे गोवा में इस मौके पर समुद्र तट (बीच) और होटल खाली दिखे (जैसा कि कुछ वीडियो में दिखाया गया) और बताया गया कि वहां की सड़कों पर सन्नाटा पसरा हुआ है, तो हर किसी का चौंकना स्वाभाविक था। इसी दौरान ऐसे वीडियो और खबरें इंटरनेट मीडिया पर खूब चलाई गईं कि हिमाचल प्रदेश के मनाली में बर्फबारी का आनंद लेने के लिए जो भीड़ वहां जमा हुई, उसे देखकर ऐसा लगा कि पूरा भारत ही वहां पहुंच गया है। कुछ ऐसे ही समाचार वाया इंटरनेट मीडिया अयोध्या-काशी समेत कई अन्य धार्मिक स्थलों और पर्यटकों की पसंदीदा अन्य जगहों को लेकर आए। लेकिन गोवा क्या सच में नए साल पर खाली था। इंटरनेट मीडिया और उससे प्रेरित कुछ संगठनों द्वारा चलाई गई खबरों को मानें तो एकबारगी ऐसा लगा भी। वजह यह है कि इंटरनेट मीडिया इन्फ्लुएंसर जो सूचना और वीडियो हम तक पहुंचा रहे थे, उनमें यह सच इसी तरह दिखाई दे रहा था। लेकिन इन खबरों और वीडियो को झूठा (फेक) बताते हुए गोवा के पर्यटन मंत्री रोहन खाउंटे ने इंटरनेट मीडिया इन्फ्लुएंसरों पर गोवा की छवि खराब करने का आरोप लगाया और कहा कि गोवा को लेकर झूठ फैलाने वालों के खिलाफ मानहानि के मामले दर्ज किए जाएंगे। यही नहीं, गोवा सरकार ने वे आंकड़े भी पेश किए जिनसे इस दौरान वहां के होटलों के पूरी तरह भरे होने का पता चलता है। गोवा के पर्यटन मंत्री ने इस मामले में यह दावा भी किया कि कुछ इंटरनेट मीडिया इन्फ्लुएंसर अपने स्वार्थ के लिए ऐसा कर रहे हैं।

आठ करोड़ उपदेशक : बात इंटरनेट मीडिया और इस पर मौजूद इन्फ्लुएंसर्स की हो, तो मामला केवल गोवा तक सीमित नहीं रहता। एक अनुमान के अनुसार, हमारे ही देश में इस समय जो आठ करोड़ से ज्यादा इंटरनेट मीडिया इन्फ्लुएंसर इंस्टाग्राम, यूट्यूब, फेसबुक आदि तमाम मंचों पर उपस्थित हैं, वे वहां हर किस्म का ज्ञान और जानकारी परोस रहे हैं। घुमक्कड़ी (पर्यटन), खाना बनाने-पकाने, फैशन टिप्स से लेकर वीडियो के संपादन और शेयर बाजार के खिलाड़ी बनाने तक के गुर बताने वाले इन्फ्लुएंसर्स की संख्या भी हजारों-लाखों में हैं। इनमें से सैकड़ों ऐसे भी हैं, जिनके शुभचिंतकों (फालोवर्स) की संख्या भी लाखों-करोड़ों में हैं। इसी वजह से आनलाइन सामान और सेवाएं बेचने वाली कंपनियां तो इनकी काफी ज्यादा सेवाएं लेती हैं और बदले में इन्हें भुगतान भी करती हैं। लेकिन यदि ये इन्फ्लुएंसर भ्रामक जानकारी दे रहे हों, सच के नाम पर झूठ परोस रहे हों, गलत पाठ पढ़ा रहे हों, तो इन्हें सही करने या इन्हें रोकने-टोकने का जिम्मा आखिर किसका है।

कंपनियों का जिम्मा : इसमें तो संदेह नहीं है कि फेसबुक, ट्विटर, वाट्सअप और इंस्टाग्राम आदि इंटरनेट मीडिया मंचों ने हर व्यक्ति को अपनी बात खुलकर कहने का अवसर दिया है। इस लिहाज से इंटरनेट मीडिया ने नागरिकों को एक व्यक्ति के तौर पर अधिक सशक्त बनाया है। यह इसी रूप में सीमित रहता तो संकट न आता। मुसीबत तब शुरू हुई जब एक तरफ इंटरनेट मीडिया कंपनियों ने यह निर्णय अपने हाथ में ले लिया कि लोग आनलाइन क्या देखें और क्या नहीं। दूसरी तरफ, इनके विभिन्नों मंचों पर अधकचरी जानकारी के साथ आने वाले उपदेशकों (इंटरनेट मीडिया इन्फ्लुएंसरों) ने हर क्षेत्र में हाथ आजमाने की कोशिश की। इनमें से अधिकांश के पास न तो संबंधित ज्ञान परोसने की कोई डिग्री है और न ही ऐसा विशद अनुभव, जिसके आधार पर उन्हें विद्वान माना जा सके। लेकिन कहने की शैली और डिजिटल प्रबंधों के बल पर ये कोई भी बात इस तरह पेश करते हैं कि लोग बड़ी आसानी से इनके प्रभाव में आ जाते हैं। समस्या का एक छोर यह है कि ये इन्फ्लुएंसर अपनी लोकप्रियता और भरोसे का फायदा उठाकर लोगों को घटिया या फर्जी उत्पाद खरीदने को प्रेरित करते हैं। शेयर बाजार में उन कंपनियों के बारे में बढ़ा-चढ़ाकर दावे करते हैं, जिनका रिकार्ड खराब हो।

वित्तीय सलाहकारों पर अंकुश : ऐसा नहीं है कि ऐसे फर्जी उपदेशकों पर कुछ अंकुश नहीं लगाया जा सकता। देश में बड़ी संख्या में युवाओं के शेयर बाजार में ट्रेडिंग को लेकर बढ़ती दिलचस्पी को देखकर जब बड़े पैमाने पर इंटरनेट मीडिया पर वित्तीय सलाह देने वाले विशेषज्ञों (फिनफ्लुएंसर) की बाढ़ आ गई तो उससे एक फर्जीवाड़ा सामने आया। इनमें से ज्यादातर के पास वित्तीय सलाह देने वाली कोई डिग्री नहीं है। यह भी पता चला कि कई फाइनेंस इन्फ्लुएंसर ने शेयर कारोबार में हुए नुकसान की भरपाई के लिए युवाओं को फ्यूचर एंड आप्शन के कोर्स बेचकर पैसे वसूले। इस फर्जीवाड़े का पता चलने पर शेयर बाजार की नियामक संस्था- सेबी ने इन फिनफ्लुएंसर्स पर लगाम लगाने की कोशिशें शुरू कीं। चूंकि सेबी स्वयं सीधे-सीधे इंटरनेट मीडिया पर मौजूद इन्फ्लूएंसरों पर रोक नहीं लगा सकता, इसलिए यह प्रविधान सुझाया गया कि शेयर बाजार में पंजीकृत बिचौलियों के जरिए विज्ञापन, इवेंट्स और अन्य आयोजनों में इन्फ्लुएंसर्स को जोड़ने पर प्रतिबंध लगाया जाएगा। वहीं, वित्तीय इन्फ्लुएंसर को सेबी के पास अपना पंजीकरण कराना होगा और विशिष्ट दिशानिर्देशों का पालन करना होगा।

युवा जनसंख्या के कारण हमारे लिए चिंता का विषय

इन्फ्लूएंसरों को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका इंटरनेट मीडिया कंपनियों की है। उन्होंने आर्थिक लाभ के लिए अपने मंच इस तरह डिजाइन किए हैं कि वहां आकर लोग अपनी जानकारी और अनुभव पूरी दुनिया से साझा कर सकते हैं। इसलिए पहली जांच इंटरनेट मीडिया कंपनियों की सामाजिक जवाबदेही को लेकर होनी चाहिए। उल्लेखनीय है कि इस बारे में एक शोध सिडनी (आस्ट्रेलिया) स्थित न्यू साउथ वेल्स यूनिवर्सिटी में ने किया है। इंटरनेट मीडिया कंपनियों की सामाजिक जवाबदेही से संबंधित शोध के निष्कर्ष में डा. कानर क्लून ने लिखा कि इन कंपनियों के एल्गोरिदम इस मामले में बेहतर हो रहे हैं कि कैसे उनके मंचों पर मौजूद लोगों की सामग्री (कंटेंट) को नियंत्रित किया जाए। इसका इस्तेमाल ये कंपनियां कंटेंट को अपनी नीतियों के पक्ष और फायदे में नियंत्रित कर सकती हैं। सरल शब्दों में कहें तो ये कंपनियां किसी खास उत्पाद, नीति, विचारधारा का प्रचार-प्रसार नियंत्रित कर सकती हैं। यदि ये चाहें तो उन सामग्रियों की पहुंच सीमित कर सकती हैं, जिसे ये पसंद नहीं करतीं। साथ ही, जिस चीज का प्रचार करना चाहें, आम लोगों के कंटेंट के जरिए ऐसा आसानी से कर सकती हैं।

उदाहरण के तौर पर अमेरिका के कैलिफोर्निया और न्यूयार्क समेत 33 राज्यों में इंस्टाग्राम और फेसबुक को संचालित करने वाली कंपनी- मेटा पर दर्ज मुकदमों में आरोप लगाया गया है कि इन इंटरनेट मीडिया मंचों से छोटे बच्चों और किशोरों को नशे की लत के लिए उकसाया गया है। साथ ही, इन पर उपलब्ध कंटेंट ने बच्चों के मानसिक स्वास्थ्य पर प्रतिकूल असर डाला है। दर्ज मुकदमों के अनुसार, ये कंपनियां बच्चों और किशोरों को लुभाने के लिए ताकतवर तकनीकों का इस्तेमाल कर रही है। इनकी वजह से बच्चों में बाडी डिस्मार्फिक डिसआर्डर नामक मानसिक बीमारी पैदा हो गई है। इस बीमारी के प्रभाव में आकर बच्चे और किशोर अपने भीतर किसी शारीरिक कमी का अनुभव करते हैं और स्वयं को वास्तविक समाज से दूर कर लेते हैं। हालांकि ये कंपनियां इन सारे आरोपों को बेतुका बताती रही हैं, लेकिन उनकी दलीलों को सरकारों ने सही नहीं माना। यही कारण है कि आस्ट्रेलिया से पहले अमेरिकी राज्य यूटा ने पिछले साल मार्च से ऐसा कानून लागू किया, जिसके अंतर्गत 18 साल से कम उम्र के बच्चों को इंटरनेट मीडिया का इस्तेमाल करने से पहले अपने माता-पिता की लिखित मंजूरी लेना अनिवार्य होगा।

अमेरिका के सेंटर फार डिजीज कंट्रोल एंड प्रिवेंशन के आंकड़े बताते हैं कि वहां नौवीं से 12वीं कक्षा में पढ़ने वाली 30 प्रतिशत अमेरिकी बालिकाओं ने इंटरनेट मीडिया के प्रभाव में आकर आत्महत्या करने पर गंभीर रूप से विचार किया। कुछ और शोध से जुड़े आंकड़ों के अनुसार, इंटरनेट मीडिया का इस्तेमाल करने वालों में एंग्जाइटी, अवसाद (डिप्रेशन) और तनाव (टेंशन) के लक्षण अक्सर पाए जाते हैं। ऐसे शोध और आंकड़े युवा आबादी की बहुतायत वाला भारत में ज्यादा चिंता की वजह बन सकते हैं, क्योंकि यहां इंटरनेट मीडिया का इस्तेमाल करने वालों की संख्या और दर दुनिया के किसी भी देश के मुकाबले कहीं ज्यादा है।

(डा. संजय वर्मा)

खरी-खरी

उड़ी-उड़ी रे पतंग, मेरी उड़ी रे

शरद उपाध्याय

चारों ओर पतंगें उड़ रही हैं। किसी की पतंग आसमान को छू रही है तो किसी की पतंग जमीन से उड़ ही नहीं पा रही है। सभी का मन है कि उनकी पतंग सबसे ऊपर रहे। दूर-दूर तक कोई अन्य पतंग नहीं हो ही नहीं। छतें अलग-अलग हैं, कोई राजनीति की छत है, कोई साहित्य की तो कोई कला, सिनेमा, खेल या व्यवसाय की। लेकिन उद्देश्य एक ही है- अपनी पतंग को सर्वाधिक ऊंचाई पर उड़ाना।

लेकिन साहब चाहने से क्या होता है, सबसे ऊंचा उड़ना कोई आसान काम नहीं है। उड़ तो सभी सकते हैं, पर बात तो दूसरे से ऊंचा उड़ने की है, दूसरे की पतंग काटने की है। अब साहब बिना लड़े काम भी नहीं चलता। सबको अपनी पतंग ही दिख रही है। दूसरी की पतंग भले ही सच्चाई, ईमानदारी और सिद्धांत के तंग से बंधी हो, पर ईमानदारी के धागे से उड़ रही पतंग को ऊंचाई कहां मिल पाती है, भ्रष्टाचार की जोरदार हवाओं के सामने पतंग का संतुलन कायम रखना मुश्किल काम है।

सब ऊंचे उड़ रहे हैं, रास्ते में न जाने कितनी दूसरी पतंगें भी हैं, झट से बाधा डाल देती हैं, पेंच लड़ा देती है। पेंच में बहुत लोचे हैं। ढील और खींच भी मायने रखती है। जब तक आप काम के हो, आदमी आपको ढील देता रहता है। ढील से आदमी निश्चिंत हो जाता है कि इतने में दूसरा खींचकर पेंच काट देता है। कई बार एक ही छत से कई पतंगें उड़ती हैं, एक ही पार्टी, एक ही खेमे की पतंग। कहने को अपने 'समर्थन' की ही पतंगें होती हैं। एक ही छत से उड़ने वाली पतंगों में साथ वाली पतंगों की गलत उड़ान को नजरंदाज भी करना पड़ता है, क्योंकि ऐसे में कोई भी चरखी छोड़ सकता है। जिससे पतंग का संतुलन बिगड़ सकता है।

इसलिए पतंग की ऊंची उड़ान को कायम रखने के लिए बहुत सावधानियां रखनी पड़ती है। यहां जरा सी भी सावधानी हटी, तो दुर्घटना घटनी पक्की है। कभी भी पतंग कटकर जमीन पर गिर सकती है और ऊंचे उड़ने वालों के लिए, जमीन पर पड़े रहकर दूसरों को उड़ते देखने से बड़ा दुख बना ही नहीं है। इसलिए पतंग को सावधानी से उड़ाने में ही समझदारी है।

पोस्ट

सबसे ताकतवर देश अमेरिका भी आग की विभीषिका के सामने बेबस है। जलते शहर, जंगल एवं पहाड़ के वीडियो बहुत ही डरावने है। अंकित अवस्थी@kaankit

जलवायु परिवर्तन अब वास्तविकता है। खेती-किसानी को इस असलियत से ताल बिठानी होगी। ठंड का देर से आना, वसंत का गायब होना, बारिश के बीच लंबा ड्राई स्पेल आम हो गया है। मंजीत ठाकुर@manjit2007

कनाडा को अमेरिका में मिलाने की डोनाल्ड ट्रंप की मंशा का भारत में कुछ लोग 'अखंड अमेरिका' कहकर उपहास उड़ा रहे हैं। अगर ऐसा शिगूफा बाइडन प्रशासन के दौरान छिड़ता तो ऐसे लोग क्या कहते, जिन्हें बांग्लादेश में अमेरिकी हस्तक्षेप भी 'छात्रों का आंदोलन' नजर आ रहा था। मोनिका वर्मा@TrulyMonica

बुमराह को पूर्णकालिक कप्तान बनाने से पहले बीसीसीआइ गंभीरता से विचार करे। बुमराह को विकेट लेने और फिट रहने पर ध्यान केंद्रित करने की जरूरत है। नेतृत्व का बोझ उन पर दबाव बढ़ा सकता है। इस कारण एक स्वर्णिम करियर पर समय से पहले ग्रहण लग सकता है। मो. कैफ@MohammadKaif

जागरण जनमत — कल का परिणाम

मुख्यमंत्री आवास का मामला आम आदमी पार्टी को राजनीतिक नुकसान पहुंचाएगा?

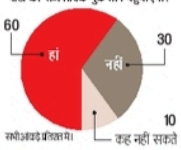

सभी आंकड़े प्रतिशत में।

आज का सवाल
क्या एक देश एक चुनाव पर विपक्षी दलों की आपत्तियां उचित हैं?

परिणाम जागरण इंटरनेट संस्करण के पाठकों का मत है।

जनपथ

गलती उनसे हो गई माना कि दो बार,
करते हैं महसूस ये खुद नीतीश कुमार।
खुद नीतीश कुमार समझते क्या हैं लालू,
लुभा रहे वे रोज दिखाकर उबला आलू!
बोले कितनी बार न मारेंगे अब पलटी,
यारो जाओ भूल हुई जो हमसे गलती!!
- ओमप्रकाश तिवारी

झारखंड डायरी

महुआ के सहारे आर्थिक समृद्धि की राह

शशिशेखर
संपादकीय प्रभारी, रांची

महुआ को झारखंड का किशमिश कहा जाता है। झारखंड की पहचान महुआ से भी जुड़ी है। महुआ के नाम पर यहां गांवों के नाम भी मिल जाते हैं। इससे इसके महत्व और आदिवासियों के जीवन को समझ सकते हैं, परंतु महुआ का नाम आते ही सबसे पहले हमारे दिमाग में 'शराब' आता है। महुआ को लेकर हमारे समाज में नकारात्मक छवि ही उभरती है, जबकि झारखंड के ग्रामीणों, खासकर आदिवासियों की आजीविका का एक प्रमुख साधन है। झारखंड की नई सरकार की नई कृषि मंत्री शिल्पी नेहा तिर्की ने महुआ का न्यूनतम समर्थन मूल्य तय करने की बात कही है। इससे आदिवासियों को बहुत हद तक लाभ होगा। आदिवासी समुदाय की आय का प्रमुख स्रोत वनोपज है और इसमें महुआ एक प्रमुख भूमिका निभाता है। जंगलों में आदिवासी महुआ चुनने का काम करते हैं और फिर बाजार या व्यवसायियों को बेचते हैं। केंद्र सरकार ने जो न्यूनतम समर्थन मूल्य तय किया है वह 30 रुपये प्रति किलो है, जबकि बाजार में यह अभी 60 रुपये किलो बिक रहा है। अब झारखंड की सरकार कितना मूल्य तय करती है, यह अभी भविष्य के गर्भ में है, लेकिन कृषि मंत्री ने इस दिशा में एक कदम आगे बढ़ा दिया है।

सबसे बड़ी समस्या यह है कि सरकार के पास कोई आंकड़ा नहीं है कि झारखंड में प्रति वर्ष इसका उत्पादन कितना होता है और कितने आदिवासी इस पारंपरिक पेशे से जुड़े हुए हैं। परंतु महुआ आदिवासी जीवन का हिस्सा है। न केवल देशी शराब बनाने में, बल्कि दवा आदि के रूप में भी। इधर, एक दशक पहले महुआ से लड्डू बनाने की शुरुआत हुई थी और आज इस पेशे में काफी महिलाएं भी जुड़ गई हैं। देश के दूसरे हिस्सों में भी इसके गुणकारी लड्डू पसंद किए जा रहे हैं। वैसे भी, आदिवासी वैद्य इसके गुणों को जानते हैं। आदिवासी की इस पैथी को होड़ोपैथी (वनौषधित से उपचार की विधि) कहा जाता है। होड़ोपैथी पर रिसर्च करने वाले हाल ही में दिवंगत डा. पीपी हेंब्रम इसके गई गुणों की बात करते रहे हैं। महुआ की छाल से लेकर फूल और फल कई मायने में दवा के रूप में कार्य करते हैं। महुआ के छाल का इस्तेमाल क्रोनिक ब्रोंकाइटिस, डायबिटीज मेलिटस एवं ब्लीडिंग में किया जाता है। महुआ में कार्बोहाइड्रेड, फैट और प्रोटीन के साथ ही कैल्शियम, फास्फोरस, आयरन, कैरोटीन और विटामिन सी भरपूर मात्रा में पाई जाती है। इतने पोषक तत्वों से भरे होने के कारण इसे खाने के बहुत से फायदे होते हैं। डायबिटीज मरीजों के लिए महुआ अमृत से कम नहीं है। महुआ का छाल डायबिटीज में अमृत की तरह काम करता है। इतने सारे इसके औषधीय गुण हैं। इस दिशा में भी झारखंड सरकार को काम करना चाहिए।

एक अनुमान के अनुसार, झारखंड में 20 हजार टन महुआ का उत्पादन होता है। वैसे किसी किसी वर्ष मौसम के प्रतिकूल होने पर उत्पादन कम भी हो जाता है। परंतु सरकार इसके उपयोग को व्यापक बनाए, आदिवासियों को इससे जोड़े, उन्हें उचित मूल्य मिले तो आदिवासियों की तकदीर बदल सकती है। महुआ के औषधीय पक्षों पर शोध की भी आवश्यकता है। कृषि मंत्री को इस दिशा में भी पहल करनी चाहिए। इसके साथ ही महुआ से बनाने वाले उत्पाद के लिए छोटे-छोटे कुटीर उद्योग को भी बढ़ावा देना चाहिए। इसकी पहल पंचायत या जिला स्तर पर की जा सकती है। इससे बड़ी संख्या में महिलाओं को स्थायी रोजगार मिल सकता है। महुआ को लेकर बनी-बनाई गलत धारणा को भी हमें बदलने की जरूरत है। महुआ को हमारे यहां ऐसे ही नहीं किशमिश कहा गया है। इसका विस्तार और प्रचार की जरूरत है। केवल न्यूनतम समर्थन मूल्य से महुआ उत्पादन से जुड़े आदिवासियों का भाग्य नहीं बदला जा सकता।

गरमी के मौसम में इस प्रकार वनों में महुआ के फूल एकत्रित करती है महिलाएं। फाइल

लहराती धर्मध्वजाएं और श्रद्धा-आस्था का अलौकिक आवेग

राकेश पांडेय
संपादकीय प्रभारी, प्रयागराज

यत्र विश्वम् भवति एक नीड़म् ... संगम के तट पर सनातनियों का वैश्विक संगम होने लगा है। कुंभनगरी एक ऐसे घोसले में बदल चुकी है, जहां विश्व भर के मानवों का कलरव एक स्वर और एक सुर में स्पंदित है। कुहासे की ओट से निकलते भगवान भास्कर की स्वर्णिम रश्मियां मोक्षदायिनी की सतह पर पिघले स्वर्ण की तरह फैल रही हैं। ऐसा बोध करा रही हैं जैसे सूर्यदेव इस पावन पर्व के अवसर पर मां जाह्नवी के आंचल को स्वर्णाच्छादित कर रहे हों। तट के इस ओर जहां मां गंगा की लहरों का उछाह चरम पर है, वहीं तट के ऊपर हिलोरें मारता सनातनियों का उत्साह एक दूसरे से प्रतिस्पर्धा करते दिखाई देता है।

अठखेलियां करती लहरों से भक्तों को स्नान कराती भागीरथी और हर-हर गंगे का जाप करते आह्लादित श्रद्धालुओं का डुबकी लेना बरबस उस ममत्व की याद दिलाता है, जब बच्चा अपने मां के आंचल में छिपना चाहे और मां उसे अपने आंचल में भर कर संसार भर की खुशियां सौंप दे।

प्रयागराज में महाकुंभ सज रहा है, तैयारियां अपने अंतिम चरण में हैं, परंतु श्रद्धालु हैं कि नक्षत्र, मुहूर्त दिशा-दशा की चिंता छोड़ उमड़े पड़े हैं। जिन्हें कुंभ के प्रारंभ की तिथि का ज्ञान न हो तो वे यहां आने के बाद हड़बड़ा जाएंगे कि कहीं उन्हें आने में देर तो नहीं हो गई। दुकानदारों, गुमटी वालों ने गंगा मइया को खील-बताशे, माला-फूल और कहीं-कहीं चुनरी भी चढ़ा कर आशीर्वाद मांग लिया है। अक्षय वट पर मनौती मांगने वालों की लंबी कतार लगी हुई है।

कुंभ नगरी में उत्सव और उल्लास की छटा है और उल्लास बिखरा पड़ा है। आप सनातन के उद्वेग को वायुमंडल में सूंघ सकते हैं जिसमें धुएं की गंध की जगह धूप, कपूर और यज्ञ में डाली गई समिधा की सुगंध है। दिन जैसे-जैसे समीप आ रहा है, तीर्थराज में सनातनी-संगम विस्तृत होता जा रहा है।

नक्षत्रों, मुहूर्त और कालखंड के बीज से महाकुंभ का प्रस्फुटन भले अभी शेष हो, परंतु सनातन के इस सर्वाधिक महत्वपूर्ण समागम में सनातन की अलख जग चुकी है। आकाश चूमती, लहराती धर्म-ध्वजाएं सनातनियों की जुटान का प्रतीक हैं। स्थान-आवंटन की दुरुह प्रक्रिया से निकल कर आवंटित स्थल पर शीश नवाए, पवित्र भूमि को दंडवत प्रणाम कर ठिकाना तैयार करते अखाड़े और संतों का उत्साह देखते ही बन रहा है। सभी अखाड़े अपने नियत स्थानों पर तेजी से तंबू-कनात तानने में लगे हैं। जिनका डेरा सज चुका है, वे आने वालों का बिना किसी भेदभाव के गर्म चाय और जलपान के साथ स्वागत करते दिख रहे हैं। छोटी-छोटी गुमटियों के बाहर जुटकर धूप सेंक रहे या कुहासे में अलाव ताप रहे लोग उस कुंभ से इस कुंभ की तुलना करते हैं और इंतजामों की प्रशंसा करते नहीं अघाते। इसे वास्तव में यहां महसूस किया जा सकता है। भोर में तो अद्भुत दृश्य देखने को मिल रहा है। हजारों कदम मंथर गति से मुंहअंधेरे ही गंगा की ओर चल पड़े हैं। भजन, गीत, मंत्र, श्लोक और पापहारिणी-गंगे की सस्वर स्तुति करते हर आयु-वर्ग के लोग धर्म को संबल मानकर और संबल प्रदान करने हेतु एक तट बढ़ चले हैं। हर हर महादेव शंभो का उद्घोष करते हुए स्नान को जाता कल्पवास के लिए आया समूह, एक-दूसरे से ठिठोली करते और जल्दी कदम बढ़ाने की गुहार करते गीत गाती महिलाओं का झुंड, संगम तट पर ध्यान लगाए संन्यासी और युवा, इस बार के महाकुंभ की तैयारियों के बीच में ही उमड़ा ये समूह उस उत्कंठा, उत्सुकता और उत्साह को संजोए हुए है जो पिछले महाकुंभ से इस महाकुंभ के मध्य उनके हृदय को आनंदित करता रहा है। इस महान समागम के पूर्वकाल में ही जुटा सनातनियों का यह समुद्र यह बताता है कि इस बार का महाकुंभ कितना भव्य और दिव्य होगा।

यह समागम कई अर्थों में अद्भुत और अद्वितीय है। महाकुंभ की तैयारियों और श्रद्धालुओं के अविरल आगमन को निहारती पुरानी आखें इस बार के समागम को अद्भुत दृश्य बताती हैं। युवाओं की बेजोड़ भागीदारी ने इसे "युवा-महाकुंभ" का स्वरूप दे दिया है। गले में और कलाइयों पर रुद्राक्ष की माला पहने तथा महादेव, नारायण, जय सियाराम और जय श्रीकृष्ण के संबोधन से एक-दूसरे का अभिवादन करते असंख्य युवा सनातन और आध्यात्म के प्रति बढ़ती आस्था और विश्वास के परिचायक हैं। संत, संन्यासी, दंडी-स्वामी, अखाड़े, कल्पवासी, श्रद्धालु सब धीरे-धीरे स्वयं को व्यवस्थित कर उस क्षण की बाट जोह रहे हैं जब भगवान भानु की पहली रश्मि मां सुरसरि को स्पर्श करेगी और प्रारंभ हो जाएगा संगम का वह स्नान जिसकी नर-नारी, देव-मुनि, गंधर्व-किन्नर सभी को प्रतीक्षा रहती है।

महाकुंभ में हिलोरें मारता उमंग, उत्साह और धार्मिक आस्था का समुद्र इस बात का प्रतीक है कि सनातन के बंध ने सबको जोड़े रखा है। संगम-क्षेत्र में वास कर रहे ये सनातनी उन-उन स्थानों से आए हैं, जहां के नाम से भी सामान्यजन परिचित नहीं है। श्रद्धालुओं के आपसी जुड़ाव और लगाव को देख कर ऐसा महसूस ही नहीं हो रहा है कि उनका ये पहला परिचय है। यह दिख रहा है कि विश्व का संपूर्ण सनातन आज महाकुंभ के कुंभ में प्रवाहित हो गया है। इस कलरव में सुर मिलाते देशी-विदेशी पक्षी भी हैं जो हर वर्ष हजारों किलोमीटर की दूरी तय कर संगम तट आ जाते हैं।

प्रयागराज में आयोजित हो रहे महाकुंभ में प्रवेश करते साधु-संन्यासी। प्रेट

****

www.jagran.com राष्ट्रीय संस्करण
दैनिक जागरण
शुक्रवार 10 जनवरी, 2025

दैनिक जागरण
अच्छे विचार ही बुद्धि की शुद्धि में सहायक होते हैं

संपत्ति के सृजन को मिले सम्मान

प्रो. केवी सुब्रमण्यम

जोखिम लेने वाले कारोबारियों को खलनायक ठहराना भारत के आर्थिक भविष्य के लिए नितांत अदूरदर्शी है

अवधेश राजपूत

हमारे राजनीतिक वर्ग से जुड़े कुछ लोग संपत्ति का सृजन करने वाले उद्यमियों को खलनायक की तरह दिखने में लगे हुए हैं। ऐसा रवैया भारत की प्रगति में बाधक है। अपना अनुभव साझा करूं तो बचपन में हमारे घर में एक सहायिका काम के लिए आती थीं। वह हमारे और मेरी अन्य परिवारों के यहां बर्तन साफ करती थीं। इस तरह एक वेतनभोगी निम्न मध्यमवर्गीय परिवार एक महिला के रोजगार का दसवां हिस्सा बन गया। इसके विपरीत दुर्ग शहर के सबसे अमीर आदमी एक जौहरी ने अपने उद्यम और घर में करीब 100 लोगों को रोजगार दिया हुआ था। उनके कर्मचारियों ने कारीगरी और बिक्री जैसे खास हुनर सीखे, जिससे वे एक घरेलू सहायिका की तुलना में 10 गुना ज्यादा कमा सकें। यह व्यवसायी न सिर्फ कई गुना ज्यादा नौकरियां देता था, बल्कि हर नौकरी का वेतन भी 10 गुना ज्यादा था। जबकि एक वेतनभोगी परिवार संपत्ति सृजन के बजाय केवल उसका उपभोग कर रहा था। मेरे जीवन का यह किस्सा रोजगार उत्पन्न करने में संपत्ति सृजन की केंद्रीय भूमिका को दर्शाता है।

जरा सोचिए कि वह नौकरी जिससे आपकी रसोई चलती है या आपके बच्चे की स्कूल फीस भरने में मदद मिलती है, उसके लिए आप किसके ऋणी हैं? अगर आप सतही तौर पर सोचेंगे तो कहेंगे कि यह नौकरी आपकी काबिलियत की वजह से है, लेकिन आपकी सारी काबिलियत के बावजूद अगर संपत्ति का सृजन करने वाले न होते तो आपकी नौकरी भी न होती। अगर सरकार ने भारतीय रेलवे में धन का निवेश नहीं किया होता तो मेरे पिता को नौकरी नहीं मिलती और मुझे वह शिक्षा नहीं मिलती, जिसने मुझे एक अच्छा जीवन दिया। नौकरी एक उद्योगपति द्वारा अपने व्यवसाय के लिए पूंजी लगाने से पैदा होती है।

हम वेतनभोगियों को हर महीने जो वेतन मिलता है, उसे लेकर क्या हम कभी यह सोचते हैं कि जिनकी वजह से यह वेतन संभव हो पाता है, वे किन जोखिमों का सामना करते हैं? उद्यमी अपने उद्यम में करोड़ों रुपये लगाता है। उसे असफलता, प्रतिस्पर्धा, सरकारी अड़चनों और बाजार की अनिश्चितताओं का सामना करना पड़ता है। वेतनभोगी कर्मचारियों के सुनिश्चित वेतन के विपरीत, किसी उद्यमी को केवल तभी धन की प्राप्ति होती है, जब उसका व्यवसाय सफल होता है और वह भी कई सालों की मेहनत एवं तनाव के बाद। संभव है कि दूसरे या तीसरी पीढ़ी के उद्योगपति को उतना जोखिम न उठाना पड़े या उतना संघर्ष न करना पड़े, लेकिन उनके पूर्वजों ने जरूर जोखिम उठाकर संघर्ष किया होगा। हममें से अधिकांश लोग इतना जोखिम लेने की हिम्मत नहीं रखते। ऐसे जोखिम लेने वाले साहसी लोगों को खलनायक ठहराना भारत के आर्थिक भविष्य के लिए नितांत अदूरदर्शी है। उनके बिना न तो आर्थिक विकास होगा और न ही रोजगार उत्पन्न होंगे।

संपत्ति का सृजन करने वालों की सैद्धि की दृष्टि से देखने वाले दुराग्रह की जड़ें असल में नैहरूवादी समाजवाद से जुड़ी हैं। समाजवाद और साम्यवाद जैसी अवधारणाएं तो विदेशें हैं। भारत का प्राचीन आर्थिक दर्शन तो संपत्ति सृजन को समाज के लिए अत्यंत लाभकारी मानता है। भारतीय परंपरा तो 'शुभ-लाभ' में विश्वास रखने वाली रही है। यह सोच भारतीय संस्कृति के उस गहरे चिंतन को दर्शाता है कि नैतिक तरीके से संपत्ति बनाना सभी के लिए लाभदायक है। भारतीय दर्शन में धर्म, काम और मोक्ष के अतिरिक्त अर्थ को चार पुरुषार्थों में से एक माना गया है। तुलिया के सबसे प्राचीन ग्रंथ ऋग्वेद में श्री सूक्तं नामक स्तोत्र है, जो धन की देवी लक्ष्मी की समर्पित है। यह स्तोत्र संपत्ति को एक आशीर्वाद मानता है जो परिवारों, समुदायों और राष्ट्रों का पोषण करती है। नैतिक रूप से संपत्ति का सृजन भारतीय परंपरा की जड़ में है और यह सामूहिक भलाई का जरिया है। अर्थशास्त्र में चाणक्य ने बाजार और व्यापार की भूमिका पर जोर दिया, जो समृद्धि लाने में मददगार होते हैं। प्राचीन शहर अपने समृद्ध बाजारों के कारण फलते-फूलते थे, जहां प्रबुद्ध शासक यह समझते थे कि संपत्ति का सृजन सभी के लिए फायदेमंद है।

संपत्ति सृजन के इतने भारी महत्व के बावजूद देश के कुछ नेता उसकी राह में कांटे बिछाने पर तुले हैं। उनका कहना है कि कंपनियों पर व्यक्तियों की तुलना में अधिक टैक्स लगना चाहिए, लेकिन क्या हम समझते हैं कि कंपनियों द्वारा कमाई गई संपत्ति आखिर में कहां जाती है? इससे शेयर होल्डर्स की लाभीश, कर्जदाताओं को ब्याज, आपूर्तिकर्ताओं को सेवाएं और कर्मचारियों को वेतन एवं सरकार को टैक्स मिलता है। यहां तक कि प्रमोटर भी अपने लाभांश और पूंजी लाभ से उत्पाद और सेवाएं खरीदते हैं, जिससे रोजगार पैदा होने के साथ ही आर्थिक गतिविधियां बढ़ती हैं। कुल मिलाकर, कंपनियों द्वारा बनाई गई संपत्ति शेयर होल्डर्स, कर्जदाताओं, कर्मचारियों और नागरिकों के माध्यम से समाज एवं वित्तीय तंत्र में ही वापस आ जाती है। हमें यह भी समझना होगा कि वैश्विक प्रतिस्पर्धा के दौर में अगर हम कंपनियों पर ज्यादा टैक्स लगाएंगे तो वे उन देशों में चली जाएंगी, जहां टैक्स कम है। इससे भारत को रोजगार और संपत्ति सृजन से मिलने वाले फायदे नहीं मिल पाएंगे। इसलिए कंपनियों पर भारी टैक्स लगाने की मांग आर्थिक समृद्धि के स्रोत को न समझ पाने का नतीजा है। एक स्वस्थ व्यावसायिक माहौल भारी कारपोरेट टैक्स की तुलना में समाज को रोजगार एवं आयकर के रूप में कहीं अधिक योगदान देता है।

आइए, भारत की प्रगति में संपत्ति का सृजन करने वालों के अहम योगदान को पहचानें और उनका सम्मान करें। साम्यवाद और समाजवाद जैसी बाहरी विचारधाराओं को ठुकराकर भारतीय सांस्कृतिक सोच को अपनाएं। हम सभी के लिए एक उज्ज्वल भविष्य सुनिश्चित करने के लिए यह आवश्यक है। आज के भारत में संपत्ति का सृजन करने वाले सिर्फ व्यवस्था नहीं हैं बल्कि वे एक विकसित भारत की नींव रख रहे हैं।

(लेखक अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष में कार्यकारी निदेशक और भारत के पूर्व मुख्य आर्थिक सलाहकार हैं)

response@jagran.com

बेमेल गठबंधन

जम्मू-कश्मीर के मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला का यह कथन विपक्षी गठबंधन के घटकों के बीच आई दरारों को ही रेखांकित कर रहा है कि आइएनडीआइए को भंग कर देना चाहिए। उन्होंने यह टिप्पणी आइएनडीआइए नेताओं के इन बयानों के संदर्भ में की कि गठबंधन तो केवल लोकसभा चुनावों के लिए था। निःसंदेह वे बयान दिल्ली में आम आदमी पार्टी और कांग्रेस के बीच छिड़ी रार की अनदेखी करने के इरादे से दिए गए हैं, लेकिन इससे बात बनने वाली नहीं है, क्योंकि सब जानते हैं कि लोकसभा चुनाव के बाद आइएनडीआइए के घटकों ने जम्मू-कश्मीर, महाराष्ट्र और झारखंड के विधानसभा चुनाव मिलकर लड़े। हरियाणा इसका अपवाद रहा था, क्योंकि कांग्रेस ने आम आदमी पार्टी से मिलकर चुनाव लड़ने से मना कर दिया था। अब वही काम आम आदमी पार्टी ने दिल्ली में किया, क्योंकि वह राजधानी को अपना गढ़ मानती है। कांग्रेस भी दिल्ली को अपनी राजनीतिक जमीन छोड़ने को तैयार नहीं, क्योंकि उसने लंबे समय तक वहां शासन किया है। कांग्रेस यह भी जानती है कि दिल्ली में आम आदमी पार्टी के प्रति किसी तरह की नरमी बरतने से वह अपनी बची-खुची राजनीतिक जमीन वैसे ही गंवा देगी, जैसे अन्य राज्यों में गंवा चुकी है। यह एक तथ्य है कि आइएनडीआइए के अधिकांश घटक कांग्रेस के वोट बैंक पर कब्जा करके उभरे हैं। यदि कांग्रेस गठबंधन धर्म के नाम पर सहयोगी दलों के लिए मैदान खाली करती गई तो जिन चंद राज्यों में उसकी प्रभावी उपस्थिति है, वहां भी वह कमजोर हो जाएगी।

आइएनडीआइए के घटक दल भी इससे परिचित हैं कि यदि उन्होंने अपने गढ़ों में कांग्रेस के प्रति उदारता बरती तो वह उनके उस वोट बैंक को अपने पाले में कर सकती है, जिसे उन्होंने कभी उससे ही छीना था। वास्तव में इन्हीं विरोधाभासों के कारण आइएनडीआइए एक बेमेल गठबंधन है। वह समझा जाना चाहिए कि कांग्रेस और उसके साथी दल एक-दूसरे के स्वाभाविक सहयोगी नहीं हैं। उनके बीच कुछ साझा है तो केवल यही कि भाजपा को हराना है। चूंकि उनके पास इसके अलावा और कोई साझा उद्देश्य नहीं, इसलिए उनके बीच कोई नीतिगत स्पष्टता भी नहीं। स्पष्टता के इसी अभाव के चलते आइएनडीआइए अपने लिए कोई न्यूनतम साझा कार्यक्रम नहीं तैयार कर सका। आगे इसके आसार भी नहीं, क्योंकि अब नेतृत्व को लेकर खींचतान शुरू हो गई है। हैरानी नहीं कि आने वाले दिनों में आइएनडीआइए में बिखराव और अधिक बढ़े तथा इस गठबंधन का वही हश्र हो, जो इसके पहले अन्य विपक्षी गठबंधनों का हुआ। अंतीत में तीसरे-चौथे मोर्चे के नाम पर न जाने कितनी बार विपक्षी एकता के प्रयास हुए, लेकिन वे एक सीमा से आगे नहीं बढ़ सके। किसी भी गठबंधन की सफलता के लिए यह आवश्यक होता है कि नेतृत्व करने वाले दल का प्रभुत्व हो। आइएनडीआइए में ऐसा नहीं है।

सख्ती आवश्यक

दोपहिया वाहन सवारों के लिए हेलमेट अनिवार्य करने के लिए पहले भी कई प्रयास हो चुके हैं, लेकिन अभी तक इसमें पूरी तरह सफलता नहीं मिल पाई है तो इसके पीछे प्रशासनिक उदासीनता मुख्य वजह है। अब एक बार फिर इसको लेकर सख्ती बरते जाने की खोजना है। उत्तर प्रदेश सरकार इस बारे में लोगों को जागरूक करने के साथ ही सख्त रवैया अपनाने जा रही है। प्रदेश की राजधानी लखनऊ में इस आदेश से इसे शुरू किया जा रहा है कि यदि किसी पेट्रोलिया चालक ने हेलमेट नहीं पहन रखा है तो उसे पेट्रोल पंप पर पेट्रोल न दिया जाए। महत्वपूर्ण यह है कि इस आदेश को लेकर प्रशासनिक स्तर पर सख्ती भी की जाए और इसकी नियमित मानीटरिंग हो। यदि कोई पेट्रोल पंप इस आदेश को नहीं मान रहा तो उसके खिलाफ कार्रवाई की जाए। सिर्फ लखनऊ में ही नहीं, उत्तर प्रदेश के सभी महानगरों में जल्द ही इस नियम को लागू किया जाना चाहिए। सड़क सुरक्षा के नियम इसलिए बनाए गए हैं, ताकि लोगों की जिंदगी सुरक्षित रहे। इनका पालन अनिवार्य रूप में किया जाना चाहिए। देश में सर्वाधिक सड़क दुर्घटनाएं उत्तर प्रदेश में होती हैं तो इसका मुख्य कारण यातायात नियमों की अनदेखी है। लोगों को यह समझना होगा कि उनके परिवार के लिए उनकी जिंदगी के मायने हैं और उनकी जरा सी असावधानी या लापरवाही खुद उन्हें तो खतरे में डालेगी ही, उनकी वजह से दूसरों की जिंदगी भी असुरक्षित हो सकती है। सड़क सुरक्षा के नियमों का पालन करने पर ही सुरक्षा संभव है

सड़क सुरक्षा के नियम इसलिए बनाए गए हैं ताकि लोगों की जिंदगी सुरक्षित रहे। सभी को इनका पालन अनिवार्य रूप से करना चाहिए

विपक्ष की राजनीति में बड़ा बदलाव

अवधेश कुमार

आइएनडीआइए में कांग्रेस विरोधी दलों की एकजुटता का जो स्वर निकला, वह दिल्ली विधानसभा चुनाव में सशक्त हो रहा है

सब कुछ ठीक नहीं है विपक्षी गठबंधन में। फाइल

आम आदमी पार्टी और कांग्रेस दिल्ली विधानसभा चुनाव अलग-अलग लड़ रही हैं। इसके पीछे सामान्य तर्क यह है कि गठबंधन लोकसभा चुनाव के लिए था। आइएनडीआइए के किसी दल ने कांग्रेस का समर्थन नहीं किया है। सपा प्रमुख अखिलेश यादव ने आप के लिए सभाएं करने की घोषणा की है और तृणमूल कांग्रेस एवं शिवसेना-उद्धव ने केजरीवाल को समर्थन देने की बात कही है। तेजस्वी यादव ने भी कहा है कि गठबंधन तो लोकसभा चुनाव के लिए था। हालांकि बिहार के संदर्भ में उन्होंने कांग्रेस के साथ होने का संकेत दिया। इसी दौरान महाराष्ट्र में आश्चर्यजनक परिवर्तन दिखा। उद्धव ठाकरे, संजय राउत और सुप्रिया सुले ने मुखमंत्री देवेंद्र फडणवीस की खुलकर प्रशंसा की। इसकी कल्पना नहीं थी। बीते दिनों शरद पवार प्रधानमंत्री मोदी से मिले और वह भी ऐसे समय जब भाजपा बक्फ संशोधन विधेयक से लेकर समान नागरिक संहिता पर प्रतिबद्धता दिखा रही है। हाल में पवार यह भी कह चुके हैं कि संघ के स्वयंसेवकों ने मेहनत की, जिसका लाभ भाजपा को मिला। इस सबका एक संकेत यही है कि आइएनडीआइए के घटक कांग्रेस के विरुद्ध हो रहे हैं।

हाल में आइएनडीआइए में नेतृत्व बदलाव की बात पर ममता बनर्जी का नाम आया और उन्होंने कहा भी कि मैं तैयार हूं। महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव परिणाम के बाद आइएनडीआइए में कांग्रेस विरोधी क्षेत्रीय दलों की एकजुटता का जो स्वर निकला, वह दिल्ली विधानसभा चुनाव में सशक्त होता दिख रहा है। भविष्य की राजनीति पर इसके गहरे प्रभाव पड़ने वाले हैं। इसकी अनदेखी नहीं की जा सकती कि अरविंद केजरीवाल हिंदुत्व की राजनीति की भी आगे बढ़ा रहे हैं। उन्होंने मंदिरों के पुजारियों और गुरुद्वारे के ग्रंथियों को वेतन देने का वादा किया है। लगता है कि आप हिंदुत्व पर भाजपा की सीधी चुनौती देने वाली पार्टी की छवि बनाना चाहती है। इसी से जुड़ा पहलू इमामों को 18 महीने से वेतन नहीं दिया जाना है। इमामों का एक संगठन लगातार प्रदर्शन कर रहा है, किंतु न केजरीवाल उससे मिल रहे हैं और न कुछ बोल रहे हैं। यह रणनीति है कि हिंदुत्व समर्थकों को संदेश दिया जाए कि हमने इमामों के वेतन की घोषणा की, पर दे नहीं रहे हैं और अब पुजारियों और ग्रंथियों को वेतन देंगे। इसके पहले उन्होंने हिंदू श्रद्धालुओं के लिए तीर्थाटन की योजना शुरू की। आइएनडीआइए में वह अकेले नेता हैं, जिन्होंने परिवार सहित अयोध्या जाकर श्रीरामलला का दर्शन किया। यह नीति आइएनडीआइए के शेष दलों के अभी तक के राजनीतिक व्यवहार के विपरीत है। केजरीवाल बंदे मातरम् और भारत माता की जय का नारा लगाते हैं। आइएनडीआइए के नेता राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की तीखी निंदा करते हैं। इसके विपरीत, केजरीवाल ने संघ प्रमुख मोहन भागवत को सम्मानजनक तरीके से पत्र लिखकर पूछा कि भाजपा जिस तरह मतांतरितों के नाम कटवा रही है, क्या आप उससे सहमत हैं? इसके पहले उन्होंने भाजपा अध्यक्ष जेपी नड्डा द्वारा संघ की कोई आवश्यकता नहीं वाले बयान को उद्धृत करते हुए पूछा था कि क्या इससे आपको दुख नहीं पहुंचा? ध्यान रहे कि केजरीवाल ने अभी तक किसी विचार के प्रति प्रतिबद्धता नहीं दिखाई है। वह अपने राजनीति के लिए अपना रुख बदल देते हैं।

आइएनडीआइए घटकों का हालिया व्यवहार बड़े बदलाव का संकेत है। इसमें संदेह है तो थोड़ा पीछे लौटिए। 2021 विधानसभा चुनाव में ममता बनर्जी मंचों पर चंडी पाठ करते हुए स्वयं को निष्ठावान हिंदू साबित कर रही थीं। एक समय कांग्रेस के रणनीतिकार भी राहुल गांधी की निष्ठावान हिंदू वाली छवि बनाने की कोशिश कर रहे थे। कांग्रेस के मीडिया प्रमुख रहे रणदीप सिंह सुरजेवाला ने तो यहां तक कहा कि वह जनेऊधारी ब्राह्मण हैं। 2019 लोकसभा चुनाव के बाद कांग्रेस की रणनीति बदली और भाजपा विरोधी तथा विशेषकर मुस्लिम मतों को साथ लाने के लिए अतिवादी कवायदें चलने लगीं। पिछले विधानसभा चुनाव में स्वयं को नास्तिकवादी मानने वाली पार्टी द्रविड़ मुनेत्र कषगम ने हिंदुओं को तीर्थ यात्राएं कराने एवं मंदिरों के जीर्णोद्धार के लिए राशि देने का एलान किया था।

वास्तव में हरियाणा और महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव परिणामों के बाद आइएनडीआइए के अंदर अनेक नेताओं की धारणा बनी है कि हिंदुत्व लंबे समय तक मतदान के पीछे एक प्रमुख कारक होगा। भाजपा अपने आंतरिक या अन्य कई कारणों से कोई चुनाव हार सकती है या उसकी सीटें कम हो सकती हैं, लेकिन हिंदुत्व के प्रति मुखरता तथा अपनी पहचान को लेकर जो भावनाएं पिछले वर्षों में सशक्त हुई हैं, वे जाने वाली नहीं हैं। वे यह भी समझ रहे हैं कि कट्टर मुस्लिम नेताओं के बयानों पर शांत रहने और केवल भाजपा एवं संघ को कोसने के विरुद्ध आम मतदाताओं में विपरीत प्रतिक्रिया होती है। आइएनडीआइए के अन्य घटकों की भी यह लगा रहा है कि कांग्रेस जिस तरह खुद को मुस्लिमपरस्त पार्टी साबित कर रही है, उससे आगे क्षति ही ज्यादा होनी है। ध्यान रहे कि अधिकांश दलों को हिंदुत्व से ज्यादा परहेज नहीं रहा है। वे केवल भाजपा के विरुद्ध राजनीति के लिए अल्पसंख्यकवाद की नीति अपनाते रहे हैं। शरद पवार के नेतृत्व वाली राकांपा या शिवसेना उद्धव जैसी पार्टियों के लिए इसमें कोई समस्या भी नहीं है। द्रमुक भी बाजपेयी सरकार में सहभीदार रह चुकी है।

(लेखक राजनीतिक विश्लेषक एवं वरिष्ठ पत्रकार हैं)

response@jagran.com

सत्य और असत्य

इस भौतिकवादी परिवेश में एक सोच उभरा है कि अगर सत्य ही सत्य बोलेंगे तो काम कैसे चलेगा। अथवा जब लोग झूठ से जीवन बड़ी आसानी से चला रहे हैं तो सत्य का दामन क्यों थामा जाए? यह बोरा भ्रम है। मनुष्य रोता हुआ दुखी रूप में ही पैदा हुआ है और उसके जीवन का सबसे बड़ा उद्देश्य स्वयं के दुखों को कम करना है। यदि वह किसी भी कारणवश असत्य का चुनाव करता है तो निश्चित ही वह और अधिक दुखों को निमंत्रण दे रहा है। सेंट इमर्सन का कथन है-व्यापार जगत में विश्वास व्यवस्था का यदि लोप हो जाए तो सारे मानव समाज का ढांचा ही अस्त-व्यस्त हो सकता है। हम अपने जीवन में जितना ही अधिक सत्यता का समावेश करेंगे, उतना ही अधिक विशुद्धता की अनुभूति होने लगती है।

संसार को देखने का सबका नजरिया अलग होता है और सब उसी आधार पर अपने सत्य को गढ़ते हैं। सत्य सभी सुनना चाहते हैं, लेकिन हर किसी का अपना सच है जो सभी के मानकों पर खरा नहीं उतरता। वास्तविक सत्य तो वही हो सकता है जो अमिट है, जो बदल न सके, जो सभी के लिए एकसमान हो और जिसकी संगत में दुखों से मुक्ति मिलती हो। भौतिकता में रमे व्यक्तियों के लिए सत्य की परिभाषा उनके स्वार्थ के आधार पर तय होती है।

सत्य का साथ सदैव चुनौतीपूर्ण होता है। असत्य बहुत सुविधाओं के साथ आता है। सत्य विश्वास का उद्गम है और असत्य एक दोष। सत्य पारदर्शी है, इसलिए सबको भाता नहीं है। सारी व्यवस्था ही इस बात पर टिकी है कि लोग आपस में कितना विश्वास करते हैं। जहां सत्य होता है, वहीं धर्म निवास करता है। जो कठोर सत्य होता है, उसके समक्ष सत्य से भयभीत रहने वाला टिक नहीं सकता। असत्य को पहचानने की कारगर विधि यही है कि उसके साथ चलते हुए हम बहुत जल्दी हताश हो जाते हैं।

डा. निर्मल जैन

क्वांटम तकनीक के लिए बढ़ती प्रतिस्पर्धा

प्रदीप

विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में हो रहे नवाचारों ने राष्ट्रों के बीच प्रतिस्पर्धा को नई ऊंचाई पर पहुंचा दिया है। ताजा उदाहरण ब्रिटेन की टाप-सीक्रेट लैब ठ्ठ बिकसित की जा रही पहली 'क्वांटम घड़ी' है। इस घड़ी को रक्ष क्षेत्र में गेम-चेंजर माना जा रहा है, क्योंकि यह न केवल समय मापने में अभूतपूर्व सटीकता प्रदान करेगी, बल्कि खुफिया और जासूसी क्षमताओं को भी बढ़ाने में सहायक सिद्ध होगी। मगर यह विश्व की पहली क्वांटम घड़ी नहीं होगी। लगभग 15 साल पहले अमेरिका स्थित कालराडो यूनिवर्सिटी ने नेशनल इंस्टिट्यूट आफ स्टैंडर्ड्स एंड टेक्नोलाजी के सहयोग से पहली क्वांटम घड़ी विकसित की थी।

ब्रिटेन के रक्षा मंत्रालय के अनुसार, यह घड़ी इतनी सटीक होगी कि अरबों वर्षों में भी एक सेकेंड का अंतर नहीं आएगा। यह तकनीक समय को मापने के लिए क्वांटम सिद्धांतों का उपयोग करती है, जिससे पंरपरागत घड़ियों की तुलना में यह कई गुना अधिक प्रभावी साबित होगी।

इस तकनीक में निवेश करने की होड़ आर्थिक लाभ एवं राष्ट्रों की सामरिक व सुरक्षा संबंधी प्राथमिकताओं को भी दर्शाती है

क्वांटम घड़ियों का मुख्य उद्देश्य समय की सटीकता के जरिए जासूसी और नेविगेशन प्रणालियों को उन्नत करना है। उल्लेखनीय है कि खुफिया अभियानों में हर सेकेंड महत्वपूर्ण होता है, ऐसे में यह तकनीक इन अभियानों को अधिक सटीक और कुशल बनाएगी। यह घड़ी वैश्विक नेविगेशन सैटेलाइट सिस्टम पर निर्भरता को भी कम करेगी, जिससे सइबर हमलों या शत्रु देशों द्वारा सैटेलाइट को बाधित करने की संभावना को रोका जा सकेगा।

ब्रिटेन की यह परियोजना केवल रक्ष क्षेत्र तक सीमित नहीं है। क्वांटम तकनीक का विकास उद्योग और विज्ञान के क्षेत्र में भी नई संभावनाओं को जन्म देगा। उच्च कौशल वाले रोजगारों का सृजन, तकनीकी विशेषज्ञता में वृद्धि व वैज्ञानिक अनुसंधान को बढ़ावा देने जैसे पहलू इस परियोजना के प्रमुख लाभों में से हैं। क्वांटम कंप्यूटर, सेंसर और क्रिप्टोग्राफी जैसी तकनीकों में भी इस परियोजना से नए आयाम जुड़ने की संभावना है।

क्वांटम तकनीक में तेजी से प्रगति करने वाले देशों की सूची में चीन, अमेरिका, रूस और यूरोप शामिल हैं। ब्रिटेन का यह कदम दिखाता है कि वह भी इस दौड़ में पीछे नहीं रहना चाहता। चीन और अमेरिका पहले ही क्वांटम कंप्यूटिंग और सैचार तकनीकों में भारी निवेश कर रहे हैं। ऐसे में ब्रिटेन की क्वांटम घड़ी इस प्रतिस्पर्धा में उसकी स्थिति मजबूत करने में सहायक होगी। निकट भविष्य में क्वांटम तकनीक विज्ञान और प्रौद्योगिकी के भविष्य को परिभाषित करने वाली है। ब्रिटेन द्वारा बनाई जा रही यह क्वांटम घड़ी रक्षा, उद्योग और विज्ञान के क्षेत्रों में नए मानक स्थापित करेगी। यह परियोजना यह भी दर्शाती है कि वैश्विक स्तर पर क्वांटम तकनीक में निवेश करने की होड़ केवल आर्थिक लाभ तक सीमित नहीं है, बल्कि यह राष्ट्रों की सामरिक और सुरक्षा संबंधी प्राथमिकताओं को भी दर्शाती है।

(लेखक विज्ञान संचारक हैं)

कोचिंग को लेकर साधना होगा संतुलन

'स्तरहीन शिक्षा से पनपते कोचिंग केंद्र' शीर्षक से लिखे आलेख में डा. विशेष गुप्ता एक ऐसा ज्वैलिक तंत्र विकसित करने पर जोर दे रहे हैं, जिसमें योग्य और प्रतिबद्ध या यूं कहें लगनशील शिक्षकों की पर्याप्त मौजूदगी रहे। उसमें बुनियादी संरचना का अभाव न हो, ताकि छात्रों को कोचिंग पर निर्भरता खत्म हो। यह किसी से छिपा नहीं है कि बीते 10-20 वर्षों के दौरान कोचिंग संस्कृति का चलन अधिक बढ़ा है। अभिभावकों का भरोसा शैक्षणिक संस्थानों से उठ गया है। इसमें सिर्फ सरकारी शैक्षिक संस्थान ही नहीं, बल्कि निजी स्कूल-कालेज के छात्र भी कोचिंग का सहारा ले रहे हैं। यह अच्छी बात है कि कोचिंग उद्योग का अर्थव्यवस्था में योगदान है, मगर बेहद गरीब परिवार के मेधावी छात्रों को इसका नुकसान उठाना पड़ रहा है। कुल मिलाकर कोचिंग संस्कृति के पनपने देने में समाज भी भागीदार है। कोचिंग संस्कृति में कोई बुराई नहीं, लेकिन उस पर अति निर्भरता और उसे एक प्रकार की अनिवार्यता प्रदान करने की परंपरा उचित नहीं। इसमें संतुलन साधना आवश्यक होगा।

mukeshkr.m7542@gmail.com

एचएमपीवी से बचाव

चीन से फैली महामारी ह्यूमन मेटा न्यूमोवायरस (एचएमपीवी) से संक्रमित कई लोगों की पुष्टि भारत में भी हुई है। श्वसन संबंधी बीमारियों पर निगरानी की समीक्षा करने लिए केंद्र सरकार ने विश्व स्वास्थ्य संगठन से एचएमपीवी से संबंधित अपडेट मांगे हैं। एचएमपीवी पीड़ित व्यक्ति के सांस लेने की प्रक्रिया को प्रभावित करके संक्रमित करता है। केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय बचुअल मोड में राज्यों के साथ बैठक में वायरस की रोकथाम के लिए लोगों को अपने स्तर पर जागरूक कर ही रहा है, किंतु लोगों को खासकर पब्लिक ट्रांसपोर्ट एवं भीड़-भाड़ वाले क्षेत्रों में हमें स्वयं सावधानी रखनी होगी। घरों से लेकर कार्यालयों तक में सभी लोगों को साबुन से बार-बार हाथ धोने की आदत डालनी होगी। बिना धुले हाथों से आंख, नाक या मुंह को छूने से बचना होगा। छींकते समय मुंह और नाक को अपनी ढकना होगा। जिस तरह कुछ राज्य सरकारों ने वायरस के मामलों का पता चलने पर लोगों को आश्वस्त किया है कि वे घबराएं नहीं। इस तरह अन्य राज्य सरकारों को भी विज्ञापनों एवं संदेश के प्रचार-प्रसार के माध्यम से बचाव के उपाय बताने चाहिए। केवल बचाव से ही इस संक्रमण से स्वयं को दूर रखने में कामयाबी मिल सकती है।

गुगल किशोर शर्मा, फरीदाबाद

मेलबाक्स

प्रश्नपत्र के पैटर्न के अनुसार पढ़ाई

गुरुवार के अंक में प्रकाशित लेख ''स्तरहीन शिक्षा से पनपते कोचिंग केंद्र'' पढ़ा। कोचिंग संबंधित केंद्रीय उपभोक्ता संरक्षण प्राधिकरण का कदम सराहनीय है। आजकल बच्चों एवं अभिभावकों में कोचिंग को लेकर अजीब धारणा बन गई है कि बिना इसके सफलता संभव नहीं। युवाओं के मन में भी यह धारणा बन गई है कि कोई भी प्रतियोगी परीक्षा या प्रवेश परीक्षा बिना कोचिंग के उत्तीर्ण नहीं की जा सकती। मेरा मानना है कि कोचिंग केंद्र इसीलिए पनप रहे हैं, क्योंकि वे प्रतियोगी परीक्षाओं या अन्य परीक्षाओं की तैयारी 'परीक्षा पद्धति' के अनुसार विशेषज्ञों से पढ़ाई कराते हैं और उसी पद्धति के अनुसार बार-बार टेस्ट आयोजित करते हैं। परिणामस्वरूप कई कोचिंग कक्षाओं के छात्रों के परीक्षा परिणाम बेहतर आते हैं, जिससे इन संस्थानों का नाम प्रसिद्ध हो जाता है। ऐसे में यदि कोचिंग संस्थानों पर अंकुश लगाना है तो सरकार को सरकारी शिक्षण संस्थाओं में कोचिंग कक्षाओं में 'प्रतियोगी परीक्षाओं और अन्य परीक्षाओं' के लिए जो तकनीक अपनाई जाती है, उसे अपनाना होगा। परीक्षा की तैयारी में प्रश्नपत्र के पैटर्न के अनुसार पढ़ाई कराकर लगातार टेस्ट पद्धति को अपनाना आवश्यक है। इससे सरकारी संस्थाओं में भी बेहतर परिणाम प्राप्त होंगे और युवाओं तथा अभिभावकों की कोचिंग संस्थानों की ओर दौड़ कम होगी। इसके साथ ही, अभिभावकों को आर्थिक दृष्टि से लाभ होगा और छात्र-छात्राएं मानसिक तनाव का शिकार नहीं होंगे।

डा. प्रदीप कुमार संघवी, सेवा निवृत्त अध्यापक

इस स्तंभ में किसी भी विषय पर राय व्यक्त करने अथवा दैनिक जागरण के राष्ट्रीय संस्करण पर प्रतिक्रिया व्यक्त करने के लिए पाठकगण सादर आमंत्रित हैं। आप हमें पत्र भेजने के साथ ई-मेल भी कर सकते हैं।

अपने पत्र इस पते पर भेजें :
दैनिक जागरण, राष्ट्रीय संस्करण,
डी-210-211, सेक्टर-63, नोएडा
ई-मेल : response@jagran.com

संस्थापक- स्व. पूर्णचन्द्र गुप्त, पूर्व प्रधान संपादक- स्व. नरेन्द्र मोहन, नवीन एग्रीकल्चर पेरीफेरीन- ग्रुप, प्रधान संपादक- संजय गुप्त, जागरण प्रकाशनार्थ, के लिए; नीलेन्द्र प्रीयदर्शन द्वारा 501, आई.एन.एस. बिल्डिंग, रफी मार्ग, नई दिल्ली से प्रकाशित और इन्हीं के द्वारा डी-210, 211, सेक्टर-63 नोएडा के मुद्रित, संपादक (राष्ट्रीय संस्करण) -विचार प्रकाशनार्थ*
दूरभाष : नई दिल्ली कार्यालय : 011-43166300, नोएडा कार्यालय : 0120-4615800, E-mail: delhi@nda.jagran.com, R.N.I. No. DELHIN/2017/74721 *इस अंक में प्रकाशित समस्त सामग्री के पठन एवं संकलन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उपलब्ध। समस्त विवाद दिल्ली न्यायालय के अधीन ही होंगे। हवाई/रेल शुल्क ₹-2 अतिरिक्त।

****

बिज़नेस स्टैंडर्ड
वर्ष 17 अंक 280

गलत सूचनाओं में इजाफा

मेटा (फेसबुक और इंस्टाग्राम की मालिक कंपनी) द्वारा अपना फैक्ट चेक कार्यक्रम बंद करके उसकी जगह एक्स (पूर्व में ट्विटर) की तरह 'कम्युनिटी नोट्स' शुरू करने का फैसला अमेरिका की राजनीतिक व्यवस्था में होने जा रहे बदलाव की वजह से लिया जा रहा है। मेटा के खिलाफ यूरोपीय संघ की जांच चल रही हैं। इसके तहत बाजार में स्वतंत्र प्रतिस्पर्धा को प्रभावित करने वाले आचरण की जांच की जाती है। अमेरिका के नवनिर्वाचित राष्ट्रपति डॉनल्ड ट्रंप ने दावा किया है कि 'बहुत संभव है' कि मेटा द्वारा यह बदलाव उनकी वजह से ही किया जा रहा हो। ट्रंप ने कई अवसरों पर फैक्ट चेकर्स को लेकर अपनी नाराजगी जाहिर की है। मेटा के मुख्य कार्यपालक अधिकारी मार्क जकरबर्ग ने भी कहा है कि मेटा अपनी 2021 की नीति वापस लेगी जिसकी बदौलत वह राजनीतिक सामग्री की प्रस्तुति कम कर रही थी। इसका मतलब यह है कि आप्रवासन, लैंगिकता और धर्म जैसे मसलों पर ज्यादा सामग्री पोस्ट की जाएगी। बदलाव की शुरुआत अमेरिका से होगी। मेटा के लिए यूरोपीय संघ जैसी जगहों पर यह बदलाव करना मुश्किल होगा क्योंकि उनके यहां नफरती भाषण और गलत सूचना देने के मामले में अमेरिका की तुलना में कहीं अधिक सख्त नियम हैं। यह निर्णय दो सबसे बड़े मंचों पर गलत सूचनाओं के साथ व्यवहार को बदलने वाला है। यह 80 से अधिक फैक्ट चेकिंग संगठनों की वित्तीय स्थिति को भी प्रभावित करेगा जो दुनिया भर में मेटा के साथ काम करते हैं। फैक्ट चेकिंग की शुरुआत 2016 के अमेरिकी चुनावों और ब्रेक्सिट जनमत सर्वेक्षण के बाद की गई थी। इन दोनों अवसरों पर फेसबुक पर प्रसारित गलत सूचनाओं का बहुत अधिक प्रभाव था। राजनीतिक सामग्री कम करने का निर्णय उपयोगकर्ताओं के फीडबैक के आधार पर लिया गया था। मेटा ने तीसरे पक्ष के फैक्ट चेकर्स से कहा था कि वे सामग्री की पुष्टि करें। जो सूचनाएं गलत पाई जातीं उनको न्यूज फीड में नीचे कर दिया जाता है। अगर कोई गलत पोस्ट साझा करने की कोशिश करता है तो उसे एक नोट दिखाकर बताया जाता है कि क्यों वह सूचना भ्रामक है। इलॉन मस्क द्वारा खरीदे जाने के पहले ट्विटर भी ऐसा ही करता था। बाद में उसने कम्युनिटी नोट्स की व्यवस्था की। इसके तहत उपयोगकर्ता भ्रामक ट्वीट में जरूरी संदर्भ जोड़ सकते हैं। वे ऐसा मॉडरेशन के बजाय पाठकों की सहमति से कर सकते हैं।

तीसरे पक्ष का फैक्ट चेक भी किसी लिहाज से परिपूर्ण नहीं था लेकिन एक्स के अनुभव ने बताया कि यह कम्युनिटी नोट्स से बेहतर था। अभिव्यक्ति की आजादी का समर्थन करने के लिए उठाए गए इस कदम के बाद घृणा फैलाने वाले भाषणों, गलत व्यवहार और शोषण तथा हिंसात्मक सामग्री की बाढ़ आ गई। मस्क के मालिकाने में आने के बाद एक्स ने जो पहली पारदर्शिता रिपोर्ट जारी की वह कहती है कि जनवरी से जून 2024 के बीच 53 लाख खातों को गलत व्यवहार के कारण प्रतिबंधित किया गया। यह 2022 की समान अवधि में प्रतिबंधित किए गए 16 लाख खातों से तीन गुना से भी अधिक है। ट्विटर का मालिकाना अक्टूबर 2022 में बदला था। एक्स 'प्रीमियम पोस्टकर्ताओं' के साथ विज्ञापन राजस्व भी साझा करता है। कम्युनिटी नोट्स और राजस्व साझेदारी का मिश्रण एक तबाही को न्योते जैसा है। विवादित पोस्ट्स को अधिक लोग देखते हैं और विवाद उत्पन्न करने वाले पोस्ट कर्ताओं को अधिक राजस्व मिलता है। कम्युनिटी नोट्स की व्यवस्था के कारण सार्वजनिक हस्तियों की सामग्री की उनके विरोधी गलत लेबलिंग कर सकते हैं। यह अभिव्यक्ति की आजादी के खुनियादी सिद्धांत के विरुद्ध है।

सोशल मीडिया में कोविड-19 महामारी के बारे में गलत सूचनाओं के प्रसार ने संकट को बढ़ाने में योगदान किया। इसके कारण कई लोगों ने नकली दवाओं पर भरोसा किया और टीकाकरण से इनकार किया। इसी तरह जलवायु परिवर्तन को नकारने वालों को भी फैक्ट चेक के अभाव में खूब समर्थन मिला। जकरबर्ग मानते हैं कि फैक्ट चेकर्स को हटाने के बाद मेटा गलत सामग्री की कम पकड़ कर पाएगी। परंतु वह मानते हैं कि इससे मुख्य धारा की बहस के विषयों में अभिव्यक्ति की आजादी आएगी। बहरहाल फैक्ट चेक को अभिव्यक्ति की आजादी की सेंसरशिप से मिला देना अक्सर खुरे इरादों से किया जाता है। दोनों एक नहीं हैं। बदकिस्मती से फेसबुक, इंस्टाग्राम और एक्स का सोशल मीडिया पर दबदबा है और मेटा के ट्रंप की इच्छाओं के आगे झुक जाने से होने वाला बदलाव इन तीनों मंचों पर गलत सूचनाओं और नफरती भाषणों में इजाफा करेगा।

विनय सिन्हा

पूंजीगत व्यय में गिरावट के भीतर छिपा अवसर

पूंजीगत व्यय में आ रही गिरावट के बीच सरकार को नई योजनाओं के लिए पूंजी का आवंटन तथा बीएसएनएल में इक्विटी डालने का विचार त्याग देना चाहिए। बता रहे हैं ए के भट्टाचार्य

केंद्र सरकार के पूंजीगत व्यय में गिरावट लगातार चिंता का विषय बनी हुई है। वकीलन इसमें हो रही गिरावट धीमी हुई है और चालू वित्त वर्ष में जो पूंजीगत व्यय 35 फीसदी कम था वह पहली छमाही के अंत में 15 फीसदी ही कम रह गया। परंतु 2024-25 में अप्रैल-नवंबर के नए आंकड़े बताते हैं कि केंद्र सरकार का पूंजीगत व्यय 2023-24 की समान अवधि से अब भी 12 फीसदी कम है। 2024-25 में 17 फीसदी वृद्धि के साथ 11.11 लाख करोड़ रुपये पूंजीगत व्यय का लक्ष्य हासिल करना तो दूर की बात है, अब सरकार को पिछले वित्त वर्ष का 9.48 लाख करोड़ रुपये का आंकड़ा लांघने के लिए भी कड़ी मशक्कत करनी होगी।

यह गिरावट क्यों आई? व्यापक धारणा है कि पिछले साल 19 अप्रैल को शुरू होकर 1 जून को खत्म होने वाले सात चरणों के आम चुनावों के कारण पूंजीगत व्यय में गिरावट आई। परंतु वास्तव में यही वजह है तो पहली तिमाही में आई गिरावट दूसरी तिमाही में खत्म हो जानी चाहिए थी और तीसरी तिमाही के पहले दो महीनों में पूंजीगत व्यय में वृद्धि होनी चाहिए थी। कुछ बढ़ोतरी तो हुई है मगर अप्रैल से नवंबर के बीच 12 फीसदी की गिरावट खास राहत नहीं दे रही है।

अब इसी दौरान केंद्र सरकार की राजस्व व्यय में वृद्धि देखते हैं। 2024-25 के बजट में उम्मीद जताई गई थी कि 6 फीसदी से अधिक इजाफे के साथ राजस्व व्यय 37.1 लाख करोड़ रुपये पर पहुंच जाएगा। जून 2024 के अंत में वृद्धि केवल 2 फीसदी थी। किंतु उसके बाद से इसमें लगातार इजाफा हुआ और 2024-25 की पहली छमाही में यह 4.2 फीसदी हो गई। अप्रैल-नवंबर 2024-25 तक राजस्व व्यय में वृद्धि का आंकड़ा 7.8 फीसदी पर पहुंच गया।

अब अगर राजस्व व्यय तेज हो सकता है तो पूंजीगत व्यय क्यों पिछड़ गया? सरकार के पूंजीगत व्यय के आंकड़ों का विश्लेषण करें तो 2024-25 में केंद्र के कुल पूंजीगत व्यय का 90 फीसदी से अधिक केवल छह क्षेत्रों में था- सड़क, रेल, रक्षा, दूरसंचार, राज्यों को अंतरण और नई योजनाएं। 2023-24 में कुल पूंजीगत व्यय में उनकी हिस्सेदारी 87 फीसदी थी। परंतु 2024-25 के शुरुआती आठ महीनों में 12 फीसदी गिरावट इनमें से दो क्षेत्रों सड़क और रक्षा में सुस्ती की वजह से आई। 2024-25 के पूंजीगत व्यय में इनकी हिस्सेदारी 40 फीसदी थी। सड़क और राजमार्ग निर्माण पर पूंजीगत व्यय 16 फीसदी कम रहा और रक्षा क्षेत्र में 15 फीसदी कमी आई। यह गंभीर बात है और खुनियादी ढांचे तथा रक्षा दोनों क्षेत्रों के लिए चिंताजनक है।

इन दो क्षेत्रों में धीमे पड़ते व्यय की समस्या दूर करना मुश्किल नहीं है। या तो व्यय पर ठीक से नजर नहीं रखी जा रही है या परियोजना के क्रियान्वयन में गंभीर समस्याएं हैं, जिसकी वजह से ये दो क्षेत्र खर्च नहीं कर पा रहे हैं। इसकी भरपाई अपेक्षाकृत बेहतर प्रदर्शन करने वाली भारतीय रेल कर रही है, जिसकी इस वर्ष के पूंजीगत व्यय में 22 फीसदी से ज्यादा हिस्सेदारी है। करीब 1.68 लाख करोड़ रुपये के साथ भारतीय रेल का पूंजीगत व्यय अप्रैल-नवंबर 2023 के व्यय से केवल 1 फीसदी कम है।

राज्यों के पूंजीगत व्यय और बाहरी मदद वाली उनकी परियोजनाओं के लिए अतिरिक्त केंद्रीय सहायता के लिए उन्हें केंद्र से मिलने वाले कर्ज की बात करें तो केंद्र सरकार का प्रदर्शन कुछ बेहतर रहा है। अप्रैल-नवंबर 2024-25 में यह अंतरण 5 फीसदी बढ़ गया। यह बात अलग है कि बजट में तय किए गए 41 फीसदी इजाफे के लक्ष्य से यह बहुत पीछे है। इसके उलट समूचे वित्त वर्ष 2023-24 में ऐसा अंतरण करीब 24 फीसदी बढ़कर 1.15 लाख करोड़ रुपये रहा था। लगता है कि चालू वित्त वर्ष में अंतरण कम रहेगा।

दिलचस्प है कि राज्यों पर अभी तक इसका ज्यादा प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ा है। 25 राज्यों (सभी राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों के कुल पूंजीगत व्यय बजट में 95 फीसदी के हिस्सेदार) का पूंजीगत व्यय इस वित्त वर्ष की अप्रैल-नवंबर अवधि में केवल 1 फीसदी बढ़ा। लेकिन आंध्र प्रदेश, हिमाचल प्रदेश, केरल, मिजोरम, ओडिशा, तेलंगाना, उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड और पश्चिम बंगाल का पूंजीगत व्यय कम रह है। इसका असर राज्यों के पूंजीगत व्यय कार्यक्रम पर अवश्य पड़ेगा।

दो और क्षेत्र हैं, जिनकी केंद्र के पूंजीगत व्यय बजट में 13 फीसदी हिस्सेदारी है। लेकिन वे पूंजीगत व्यय में सरकारी सुस्ती का एक दिलचस्प पहलू दिखाते हैं। वे ऐसी समस्या से जूझ रहे हैं, जिसका उनसे जुड़े क्षेत्रों की व्यय खपाने की क्षमता या व्यय की कारगर निगरानी से कोई लेना-देना नहीं है।

दूरसंचार के पूंजीगत व्यय का अधिकांश हिस्सा सरकारी क्षेत्र की कंपनी भारत संचार निगम लिमिटेड (बीएसएनएल) में पूंजी डालने के लिए था। कुल 84,000 करोड़ रुपये की पूंजी में से 83,000 करोड़ रुपये तो बीएसएनएल के लिए ही रखे गए थे। परंतु 2024-25 के पहले आठ महीनों में इसमें से केवल 8 फीसदी राशि उसमें डाली गई है। दूसरे शब्दों में कहें तो बीएसएनएल को वादे के मुताबिक रकम देने से सरकार के पूंजीगत व्यय में काफी इजाफा हो जाएगा। मगर रकम क्यों नहीं दी गई यह रहस्य है। यह राशि क्यों नहीं हस्तांतरित की गई यह एक रहस्य है। पिछली बार के बजट में बीएसएनएल के लिए 53,000 करोड़ रुपये की रकम रखी गई थी मगर उसे 65,000 करोड़ रुपये यानी काफी ज्यादा रकम दे दी गई। इस साल पहले आठ महीनों में इस दिशा में कोई प्रगति न होना एक पहेली है क्योंकि इस नाकामी की वजह से भी केंद्र के पूंजीगत व्यय में खासी गिरावट आई है।

इससे भी अहम बात यह है कि 2024-25 के बजट में 66,000 करोड़ रुपये की राशि केंद्र सरकार की योजनाओं और परियोजनाओं के पूंजीगत व्यय के लिए आवंटित की गई थी। इसमें से करीब 62,000 करोड़ रुपये की राशि यानी बड़ा हिस्सा नई परियोजनाओं के लिए रखा गया था, जिनकी घोषणा सरकार को चालू वित्त वर्ष में करनी थी। मगर चालू वर्ष के पहले आठ महीनों में उस आवंटित राशि में से केवल 4 फीसदी इस्तेमाल की गई। ऐसे में 63,000 करोड़ रुपये अब भी खर्च किए जाने हैं। संभव है कि सरकार को यह पूंजी खर्च करने की जरूरत ही नहीं हो या उसने इस साल घोषित होने वाली किसी अन्य योजना के लिए यह रकम बचाकर रखी हो।

केंद्रीय वित्त मंत्रालय फिलहाल 2025-26 का बजट बनाने में व्यस्त है। ऐसे में पूंजीगत व्यय में कमी एक अवसर हो सकती है। पिछले कुछ महीनों में कर राजस्व वृद्धि भी सुस्त पड़ी है। ऐसे में राजस्व के मोर्चे पर वृद्धि की जो उम्मीद पहले लगाई गई वह तेजी से मिट रही है। राजस्व व्यय भी बजट में उल्लिखित 6 फीसदी दर की तुलना में अधिक तेजी से बढ़ा है। अगर 2024-25 के लिए राजकोषीय घाटे को लक्ष्य के मुताबिक जीडीपी के 4.9 फीसदी पर ही रोकना है तो वित्त मंत्रालय को इस साल के पूंजीगत व्यय में उम्मीद की किरण नजर आ सकती है।

वित्त मंत्रालय को 83,000 करोड़ रुपये की राशि बीएसएनएल में बतौर इक्विटी नहीं डालनी चाहिए बल्कि कंपनी से कहना चाहिए कि वह बाजार से पूंजी जुटाए। मंत्रालय को नई योजनाओं के लिए आवंटित 60,000 करोड़ रुपये की राशि खर्च करने से भी बचना चाहिए। इससे 1.43 लाख करोड़ रुपये बच जाएंगे। राजस्व में कमी आने और व्यय के लक्ष्यों में चूकने पर यह रकम काम आएगी। अगर सरकारी उपक्रमों में इक्विटी नहीं डाली जाए और अभी तक घोषित नहीं की गई नई योजनाओं के लिए रकम नहीं रखी जाए तो पूंजीगत व्यय में कमी पर ज्यादा दुख नहीं मनाया जाएगा। विडंबना ही है कि सरकार के पूंजीगत व्यय में कमी भी अवसर बन सकती है।

विकसित भारत: नई शुरुआत का समय

नए साल की शुरुआत विकसित भारत के नए संकल्प के साथ हुई है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने देश की जनता से कहा है कि सरकार वर्ष 2047 तक देश को 30 ट्रिलियन यानी 30 लाख करोड़ डॉलर की अर्थव्यवस्था बनाने के लिए पूरी ताकत झोंक देगी। भारत की स्वतंत्रता के 100 वर्ष पूरे होने में अभी 22 वर्ष बाकी हैं और तब तक भारत को विकसित राष्ट्र में तब्दील करने के इस सफर में कई सुखद मोड़ आएंगे।

विकसित भारत के इस सफर में अन्य क्षेत्रों के साथ डिजिटल ताने-बाने या अर्थव्यवस्था की अहम भूमिका होनी चाहिए। अनुमानों के मुताबिक 2023 में भारत में डिजिटल अर्थव्यवस्था 175 अरब डॉलर की थी और अगले तीन वर्ष में यह बढ़कर 1 लाख करोड़ डॉलर तक पहुंच सकती है। जो आंकड़े प्रकाशित हुए हैं, उनके मुताबिक 2014 में देश के सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) में केवल 4.5 फीसदी हिस्सेदारी रखने वाली डिजिटल अर्थव्यवस्था 2026 तक जीडीपी की 20 फीसदी हो जाएगी।

कुलांचे भरती डिजिटल अर्थव्यवस्था के साथ यूपीआई से लेनदेन की लोकप्रियता, तेजी से पांव पसारता क्विक कॉमर्स (झटपट सामान पहुंचाने की सुविधा), स्टार्टअप कंपनियों में यूनिकॉर्न (1 अरब डॉलर से अधिक मूल्यांकन वाली कंपनियां) की बढ़ती संख्या, 5जी एवं 6जी तकनीक की मदद से होने वाले नवाचार तथा आर्टिफिशल इंटेलिजेंस (एआई) का जलवा कई गुना बढ़ सकता है। मगर यह सब साकार करने के लिए ग्रामीण क्षेत्रों में खुनियादी संचार नेटवर्क मजबूत होना चाहिए और मोबाइल ग्राहकों की संख्या बढ़नी चाहिए।

पिछले कुछ वर्षों के दौरान दूरसंचार के क्षेत्र में डिजिटल सुविधाओं के मामले में देश के शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों के बीच अंतर काफी कम हुआ है मगर इस दिशा में अब भी लंबा सफर तय करना है। इस समाचार पत्र में प्रकाशित एक खबर के मुताबिक हाल ही में नीति आयोग के मुख्य कार्याधिकारी बी वी आर सुब्रमण्यम ने कहा था कि 2047 तक 30 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बनने की महत्त्वाकांक्षा के साथ हकीकत यह भी है कि देश के 90 फीसदी हिस्से का विकास होना तो अभी बाकी है। करीबा आधा ग्रामीण भारत किसी न किसी वजह से अभी तक दूरसंचार सेवाओं से महरूम है, यानी वहां वृद्धि की बहुत गुंजाइश है। इसी वृद्धि के दम पर न केवल डिजिटल अर्थव्यवस्था आगे बढ़ेगी बल्कि विकसित भारत के सपनों को भी पंख मिलेंगे।

सामयिक सवाल
निवेदिता मुखर्जी

भारतीय दूरसंचार नियामक प्राधिकरण (ट्राई) के नवीनतम आंकड़ों के अनुसार ग्रामीण क्षेत्रों में टेलीफोन उपभोक्ताओं की संख्या शहरी क्षेत्र के करीब पहुंच रही है। अक्टूबर 2024 तक शहरी टेलीफोन उपभोक्ताओं की संख्या 66.04 करोड़ थी और ग्रामीण क्षेत्रों में यह बढ़कर 52.78 करोड़ हो गई थी। वायरलेस सेवाओं में तो अंतर और भी कम रह गया है। शहरी क्षेत्र में इसके 62.55 करोड़ कनेक्शन थे और ग्रामीण इलाकों में 52.48 करोड़ कनेक्शन। मगर दूरसंचार घनत्व (किसी क्षेत्र में हर 100 लोगों के बीच टेलीफोन कनेक्शन की संख्या) के आंकड़े शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों के बीच अंतर की असली तस्वीर दिखाते हैं। शहरी क्षेत्र में दूरसंचार घनत्व 131.31 बताया गया है, जबकि ग्रामीण क्षेत्र में यह 58.39 ही है।

एक दशक पीछे जाएं तो अगस्त 2014 में शहरी क्षेत्र में दूरसंचार घनत्व 147.54 था यानी आज की तुलना में बहुत ज्यादा। दूसरी ओर ग्रामीण क्षेत्र में यह 44.67 ही था यानी आज के मुकाबले बहुत कम। आंकड़ों को गहराई से देखें तो उस समय शहर में टेलीफोन उपभोक्ताओं की संख्या 56.66 करोड़ और ग्रामीण क्षेत्र में 38.52 करोड़ थी। शहरी वायरलेस उपभोक्ताओं की संख्या 54.46 करोड़ थी और ग्रामीण वायरलेस उपभोक्ता 37.69 करोड़ ही थे।

इन दरमियानी वर्षों में दूरसंचार घनत्व कुछ इस प्रकार बढ़ा है। अक्टूबर 2016 में शहरी दूरसंचार घनत्व 160.50 था और ग्रामीण घनत्व 52.43 था। अगले साल अक्टूबर में शहरी दूरसंचार घनत्व बढ़कर 172.98 हुआ और ग्रामीण घनत्व 57.73 हो गया। रिलायंस जियो ने दिसंबर 2015 में अपनी सेवा शुरू की थी और उसने कॉल एवं डेटा शुल्क काफी कम रखे। इसकी वजह से दूरसंचार बाजार में उथल-पुथल मच गई थी। इसका सीधा असर यह हुआ कि ग्रामीण क्षेत्रों सहित देश के तमाम हिस्सों में दूरसंचार घनत्व तेजी से बढ़ने लगा।

दुनिया भर में कोविड महामारी का आतंक फैलने से कुछ महीने पहले जून 2019 में दूरसंचार घनत्व कम होना शुरू हो गया था। उसी समय दूरसंचार शुल्कों में भारीभरकम छूट का दौर भी खत्म होने लगा था। उस समय शहरी क्षेत्र में दूरसंचार घनत्व 160.78 था और ग्रामीण क्षेत्र में 56.99 था। भारत में लॉकडाउन लागू होने के बाद शहरी उपभोक्ताओं की संख्या में ठीकठाक कमी दिखने लगी मगर ग्रामीण उपभोक्ताओं की संख्या में ऐसी कोई गिरावट नहीं दिखी। जून 2020 आते-आते शहरी दूरसंचार घनत्व कम होकर 137.35 (उससे पिछले साल में 160.78 था) रह गया मगर ग्रामीण दूरसंचार घनत्व बढ़कर 58.96 (2029 में 56.99 ही था) हो गया।

इंटरनेट कनेक्टिविटी में शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों के अंतर की बात करें तो पिछले साल सरकार द्वारा जारी एक बयान के अनुसार कुल उपभोक्ताओं की संख्या मार्च 2014 के 25.15 करोड़ से बढ़कर मार्च 2024 में 95.44 करोड़ पर पहुंच गई। बयान में कहा गया कि अप्रैल 2024 तक 95.15 प्रतिशत गांवों में उंजी एवं 4जी सेवाओं के साथ इंटरनेट पहुंच चुका था। यहां जो संख्या दी गई है उसके हिसाब से यह शायद ग्राहकों की संख्या नहीं है बल्कि कुल मिलाकर इतने लोग इंटरनेट का इस्तेमाल कर रहे होंगे।

सरकार डिजिटल इंडिया और स्टार्टअप इंडिया सहित कई प्रमुख योजनाएं चला रही है मगर जमीनी स्तर पर अंतर देखना है तो नीति निर्माताओं को दूरसंचार उद्योग और उपभोक्ताओं की जरूरतें समझनी होंगी। विकसित भारत का लक्ष्य हासिल करने के लिए दूसरे खुनियादी ढांचे और सामाजिक-आर्थिक उपायों के साथ ग्रामीण दूरसंचार घनत्व भी बढ़ाना होगा। मगर चाहे सैटेलाइट दूरसंचार को बढ़ाना हो या यूनिकॉर्न की दुनिया को मजबूत बनाना हो या क्विक कॉमर्स को फैलने देना हो, यह सब मुमकिन करने के लिए राह की सारी बाधाएं दूर करनी ही होंगी।

आपका पक्ष

सीमा पर तनाव कम करना चीन की मजबूरी

चीन को अब इस बात का एहसास हो गया है कि भले ही वह विश्व की एक बड़ी ताकत हो, लेकिन वह सीमा पर आक्रामक रवैया अपना कर भारत को दबा नहीं सकता है। इसी का नतीजा है कि लंबी बातचीत के बाद चीन को वास्तविक नियंत्रण सीमा पर 2020 के पहले की स्थिति बहाल करने के लिए सहमत होना पड़ा। हालांकि, ऐसा नहीं है कि इस समझौते के बाद दोनों देशों के बीच अन्य सभी मुद्दे समाप्त हो जाएंगे, दोनों देशों के बीच अभी भी भू-राजनीतिक प्रतिस्पर्धा से जुड़े कई मुद्दे हैं। हिंद महासागर में चीन की बढ़ती नौसैनिक उपस्थिति तथा पाकिस्तान के साथ उसके गहरे रणनीतिक तथा सामरिक संबंध भारतीय हितों के लिए चुनौतीपूर्ण हैं। भारत ने भी अमेरिका, जापान और ऑस्ट्रेलिया के साथ मिलकर हिंद- प्रशांत क्षेत्र में चीन पर अंकुश लगाने के लिए अच्छा व्यूह रचा है। भू-राजनीतिक तनावों के बावजूद, चीन भारत के सबसे बड़े व्यापारिक साझेदारों में से एक बना हुआ है। दोनों प्राचीन सभ्यताओं के बीच कई छोटे-बड़े मुद्दे हैं, लेकिन इस शह-मात के वैश्विक खेल में इन सभी चुनौतियों के बीच तनाव कम करना चीन के लिए भी सुविधाजनक है, क्योंकि पश्चिम एशिया में बढ़ते संघर्ष ने चीनी कंपनियों की चिंता में डाल दिया है। भारत में चीन की कंपनियों के लिए निवेश और कारोबार करना पहले से ज्यादा चुनौतीपूर्ण हो गया है। दूसरी ओर, चीन के पास अपनी भू-राजनीतिक चुनौतियां हैं। जैसे अमेरिका और जापान से उसका बढ़ता तनाव और खराब होते घरेलू आर्थिक हालात। शायद इन वजहों ने ही उसे भारत के साथ अपने रिश्ते सामान्य बनाने की दिशा में सोचने के लिए बाध्य किया होगा। चीन ने देखा होगा कि उस पर दबाव बढ़ रहा है और भारत के साथ सीमा पर इस गतिरोध का उसे बहुत कम फायदा हुआ है।

सुधीर कुमार सोमानी, देवास

चीन वास्तविक नियंत्रण सीमा पर 2020 के पहले की स्थिति बहाल करने के लिए सहमत हुआ

पैदल चलने वालों के लिए सुविधा प्रदान कर सरकार

पैदल चलना एक खुनियादी अधिकार है, लेकिन शहरीकरण के बढ़ते दबाव के कारण यह अधिकार गर्त में चला जा रहा है। सड़कों पर वाहनों का अत्यधिक दबाव, फुटपाथों पर अतिक्रमण और यातायात नियमों का उल्लंघन पैदल चलने वालों के लिए जीवन को मुश्किल बना रहा है। कानून तो पैदल चलने वालों को प्राथमिकता देता है, लेकिन जमीनी हकीकत कुछ और ही कहती है। पैदल चलने के लिए सड़क के साथ फुटपाथ का निर्माण किया जाता है। लेकिन शहरों में फुटपाथ पर अतिक्रमण कर लिया जाता है जिससे पैदल यात्री को मजबूरन सड़क पर चलना पड़ता है। यह स्थिति बेहद खतरनाक होती है और अक्सर दुर्घटना का कारण भी बनती है। सरकार को पैदल चलने वालों की सुरक्षा को सुनिश्चित करने के लिए ठोस कदम उठाने चाहिए। इसमें फुटपाथ का उचित निर्माण करना तथा इसे अतिक्रमण से मुक्त रखना, पैदल यात्री पुलों का निर्माण करना और यातायात नियमों का कड़ाई से पालन कराना शामिल है। साथ ही, लोगों को पैदल चलने के प्रति जागरूक करना भी आवश्यक है।

राजूराम प्रजापत, नागौर

पाठक अपनी राय हमें इस पते पर भेज सकते हैं : संपादक, बिज़नेस स्टैंडर्ड, 4, बहादुर शाह जफर मार्ग, नई दिल्ली 110002. आप हमें ईमेल भी कर सकते हैं : lettershindi@bsmail.in पत्र/ईमेल में अपना डाक पता और टेलीफोन नंबर अवश्य लिखें।

देश-दुनिया

फोटो - पीटीआई

लोक सभा अध्यक्ष ओम बिरला ने गुरुवार को लंदन में महात्मा गांधी की प्रतिमा पर पुष्प अर्पित किए। ब्रिटेन की आधिकारिक यात्रा के दौरान बिरला ने भारतीय उच्चायोग में एक सभा को संबोधित किया तथा पूर्व प्रधानमंत्री ऋषि सुनक से भी मुलाकात की।